

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



क्रम संख्या

672

काल सं.

२६३ (२६३)

सं.पत्र

237 - 1
(2)

JAINA INSCRIPTIONS.

*Containing Index of Places, glossary of names of Shrâvaka Castes and Gotras
of Gachhas and Achâryas with dates.*

Collected & Compiled

BY

Puran Chand Nahar, M.A., B.L., M.R.A.S.,

Vakil, High Court ; Examiner, Calcutta University ; Member, Asiatic Society of
Bengal ; Behar & Orissa Research Society ; Sahitya Parishad, Calcutta ;
Jaina Shwetambar Education Board, Bombay ; &c. &c.

PART I.

(With plates)

CALCUTTA.

1918

Price Rs. 5/-

C. C. BOOK STALL,
9, Shama Ch. De St.,
Calcutta.

Printed by
PUNDIT KRISHNA GOPAL MISHRA
at the
B. L. PRESS
1-2, Machuabazar Street, Calcutta. Except pp 1-62
Printed by Ramdhan Singh at the Vishvavmode Press, Azimganj.
AND
Published by V. J. JOSHI, Hony. Manager,
Jana Vividha Sahitya Shastra Mala Office, Benares City.

जैन लेख संग्रह ।

कतिपय चित्र और आवश्यक तालिकाओं से युक्त ।

प्रथम खण्ड ।

संग्रहकर्ता

पूरणचन्द नाहर, एम. ए., वि. एल.,
वकील, हाईकोर्ट, रयाल एसियाटिक सोसायटी, एसियाटिक
सोसायटी बेंगाल, रिसार्च सोसाइटी बिहार-उड़िसा आदि के
मेंबर, विश्वविद्यालय कलकत्ता के परीक्षक इत्यादि २

कलकत्ता

वीरसंवत् २४४४

JAIN INSCRIPTIONS.

जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही है। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हीं के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह आनन्दकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोंका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूँ ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखतेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु अङ्गरेजी जर्नेल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी घुस पड़ी कि जहां कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहां के लेख देखे बिना चित्त को शांति नहीं होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि उसका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारसे यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूँ। मेरा संस्कृत आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूँ, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण बहुतसे लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, भाशा है, कृपया सुधी जन सुधार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख धातु से शीघ्र क्षय हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ काल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयास किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं:—

- १ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
 ३ । कुर्शिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।
 ५ । आचार्योंके नाम, शिष्यों के नाम, पहावली ।
 ६ । देश, नगर, ग्रामोंके नाम । ७ । कारिगरोके, खोदनेवालोंके नाम ।
 ८ । राजाओंके, मंत्रियोंके नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरके विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संबन्ध, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुद्ध पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरूपसे पाया नहीं जाता है:—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि “ओसवाल” ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपकेश [२] उकेश [३] उवणश [४] ऊणश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओमवाल । लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां सूचीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक ‘ओसवाल’ हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्योंके नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें बिल्कुल नहीं हैं। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसा बहुतसी कठिनाइयां मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नहीं गया है।

यह “लेख संग्रह” संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुद्ध पाठक समझ सकते हैं; “नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदानाम्।” अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुंचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहांके जैन लेखों को प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना ।

कलकत्ता
 इ० स० १९१५ }

निर्देशक—
 पूरणचन्द्र नाहर ।

सूचीपत्र ।

पत्रांक

पत्रांक

अजिमगंज [मुर्शिदाबाद]

कलकत्ता

सुमतिनाथजीका मन्दिर	१
पद्मप्रभुजीका	३
नेमिनाथजीका	४
चिंतामणिजीका	५
संभवनाथजीका	६/२१
शान्तिनाथजीका	७
सांवलीयाजीका	८
राय बुधसिंहजी का घर दे०	९

धर्मनाथ स्वामीका मंदिर	२२।६४
महावीर स्वामीका	२७
चंद्रप्रभुजीका	२८
शीतलनाथजीका	२६
माधोलालजीका घर दे० (बड़तहा)	३०
माधोलालजीका घर दे० (मुर्शिहट्टा)	३१
जीवनदासजीका घर दे०	३१
पन्नालालजीका घर दे०	६५
आदिनाथजीका देरासर	३१।६३

बालूचर [मुर्शिदाबाद]

चंपापुरी [भागलपुर]

आदिनाथजीका मन्दिर	८
विमलनाथजीका	१०
संभवनाथजीका	१२
सांवलीयाजीका	१५
दादाजीकास्थान	१७
रायधनपतसिंहजीका घर दे०	१४
किरतचन्दजीका घर दे०	१५

वासुपूज्यजीका मंदिर	३२
---------------------	-----	-----	----

नाथनगर (भागलपुर)

सुन्दरराजजीका घर देरासर	३७
-------------------------	-----	-----	----

भागलपुर

वासुपूज्यजीका मंदिर	३८
---------------------	-----	-----	----

काकंदी [बिहार]

सुविधिनाथजीका मंदिर	४१
---------------------	-----	-----	----

क्षत्रिय कुंड [बिहार]

महावीर स्वामीजीका मंदिर	४१
-------------------------	-----	-----	----

गुणाया [बिहार]

श्रीमहावीरजीका मंदिर	४२
----------------------	-----	-----	----

पावापुरी [बिहार]

कठगोला [मुर्शिदाबाद]

आदिनाथजीका मन्दिर	१७
-------------------	-----	-----	----

महिमापुर [मुर्शिदाबाद]

अमृतशेठजीका मन्दिर	१८
--------------------	-----	-----	----

कासिमबाजार [मुर्शिदाबाद]

नमिनाथजीका मंदिर	१९
------------------	-----	-----	----

दस्तुरहाट [मुर्शिदाबाद]

शीर्ष मन्दिर	२१
--------------	-----	-----	----

समवसरण	४४
--------	-----	-----	----

जलमंदिर	४५
---------	-----	-----	----

गांव मन्दिर	४५
-------------	-----	-----	----

		पत्रांक			पत्रांक
विहार			चिकागो [अमेरीका]		
मधियान महलाका मन्दिर	...	५२	डा० कुमार स्वामी	...	६६
खंद्रप्रभुजीका	...	५४	इङ्गलेन्ड		
खादिनाथजीका	...	५५	मे० लुवाड	...	७
राजगृह			जयपुर [राजपूताना]		
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	५८	व्यापारीओंके पासकी मूर्ति पर	...	६७
धिपुलगिरि	...	६४	अजमेर [राजपूताना]		
रत्नगिरि	...	६५	बारली गाव से प्राप्त पत्थर	...	७
उदयगिरि	...	६६	बनारस [काशी]		
स्वर्णगिरि	...	६७	सुतटोला का मन्दिर	...	६८
वैभार गिरि	...	७	बट्टू जीका	...	६९
कुंडलपुर			पटनीटोलेका	...	७
भादिनाथजीका मन्दिर	...	७०	चुश्रीजीका	...	७
पटना			रामचन्द्रजीका	...	१००
पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	७१	प्रतापसिंहजीका	...	१०२
दादावाड़ी	...	८३	कुशलाजीका	...	१०१
स्थूलभद्रजीका मन्दिर	...	८२	सिंहपुरी [बनारस]		
शेठ सुदर्शनजीका	...	८३	कुशलाजीका मन्दिर	...	१०३
समेत शिखर			मिर्जापुर		
ऋजुवालुका	...	८४	पचायती मन्दिर	...	७
मधुघन	...	७	धनसुब्रदासजीका	...	१०५
टोंकके चरणों पर	...	८६	दिल्ली		
तेजपुर [आसाम]			चेलपुरीका मन्दिर	...	१०६
रायमेघराजजी का मन्दिर	...	८३	नवधरेका	...	१०७
म्युनिक [जर्मनी]			चिरेखानेका	...	११६
जादुघर	...	८६	छोटे दादाजीका	...	१०३
			हजारामलजीका घर दे०	...	१२१

		पन्नांक			पन्नांक
अजमेर ।			शांजय पर्वत ।		
गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर	...	१२४	साकरचन्द प्रेमचन्दकी दुक	...	१६०
सम्भवनाथजी का	...	१२७	प्रेमाभाई हेमाभाईकी	...	१६१
दादाजीकी छत्री	...	१३३	प्रेमचन्द मोदीकी	...	१
जयपुर ।			शेठ वाल्हाभाईकी	...	१६३
यति श्यामलालजीके पास मूर्तियों पर	...	१३४	शेठ मोतीशाकी	...	१६४
यति किरानचन्दजीके पास मूर्तियों पर	...	१३५	मूल (आदिश्वरकी)	...	१
जोधपुर ।			राणकपुर ।		
महावीर स्वामीजीका मन्दिर	...	१३६	आदिनाथजीका मन्दिर	...	१६५
केसरीयानाथजीका	...	१४१	सादडी ।		
मुनिसुब्रत स्वामीजीका	...	१४३	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	१७२
धर्मनाथजीका	...	१४४	नाकोडा ।		
दिनाजपुर ।			जैनमन्दिर	...	१
चन्द्रप्रभु स्वामीका मन्दिर	...	१४६	बालोतरा ।		
धुलेवा रिखभदेव (मेवाड)			शीतलनाथजीका मन्दिर	...	१७४
केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	१४८	केसरीयानाथजीका मन्दिर	...	१७६
दादाजीकी छत्री	...	१५१	वाहमेड़ ।		
पगलीपाजी	...	१	बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका	...	१७८
पालीताणा (काठियावाड)			यति इन्द्रचन्दजीका उपाश्रय	...	१७९
मोतीसुखीयाजीका मन्दिर	...	१५२	गोपोंका	...	१
शेठ नरसिंह केशवजीका	...	१५३	मेडता ।		
शेठ नरसिंह नाथाका	...	१५४	आदिनाथजीका मन्दिर	...	१८०
शेठ कस्तुरचन्दजीका	...	१	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	...	१८१
गौडी पार्श्वनाथजीका	...	१५५	वासुपूज्यस्वामीका	...	१८२
यति करमचन्द हेमचन्दका	...	१५८	धर्मनाथजीका	...	१
बडा मन्दिर (गांवमें)	...	१	आदिश्वरजीका तथा	...	१८४
दिगंबरीका पञ्चायती	...	१६०			

		पन्नांक		पन्नांक
चिन्तामणिपार्श्वनाथका ,,	...	१८७	केकिंद ।	
कड़लाजीका	...	१८८	पार्श्वनाथजीका मन्दिर	... २२३
महावीरजीका	...	"	सेघाडी ।	
तपगच्छका उपाध्य	...	१८९	महावीरजीका मन्दिर	... २२६
ओसिया ।			सांढेराव ।	
महावीर स्वामीका मन्दिर	...	१९२	शान्तिनाथजीका मन्दिर	... २२८
सच्चियाय माताका	...	१९८	नाना ।	
डुंगरीके चरण पर	...	१९६	जैन मन्दिर	... २२६
पाली ।			छालराई ।	
नौलखा मन्दिर	...	"	जैन मन्दिर	... २३१
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	...	२०४	हठुंदी	
लोढारो घासका	...	२०५	महावीरजीका मन्दिर	... "
शान्तिनाथजीका	...	"	माताजीका	... २३३
सोमनाथजीका	...	"	खण्डरमें मिला हुआ पत्थर पर	... २३४
नाडोल ।			जालोर ।	
आदिनाथजीका मन्दिर	...	२०६	महावीरजीका मन्दिर	... २४१
ताम्र शासनमें	...	२०८	चामुखजीका	... २४३
नाडलाई ।			तोपखानामें	... २३८
आदिनाथजीका मन्दिर	...	२१२	हरजी ।	
नेमिनाथजीका	...	२१७	जैन मन्दिर	... २४३
फोट सोलंकी ।			जूना ।	
जैन मन्दिर	...	२१८	जैन मन्दिर	... २४४
घाणेराव ।			जूना बेडा ।	
जैन मन्दिर	...	"	जैन मन्दिर	... २४५
धेलार ।			नगर गांव ।	
आदिनाथाजीका मन्दिर	...	२१९	जैन मन्दिर	... २४७
फलोदी ।				
बड़ा जैन मन्दिर	...	२२१	जैन मन्दिर	... २४७

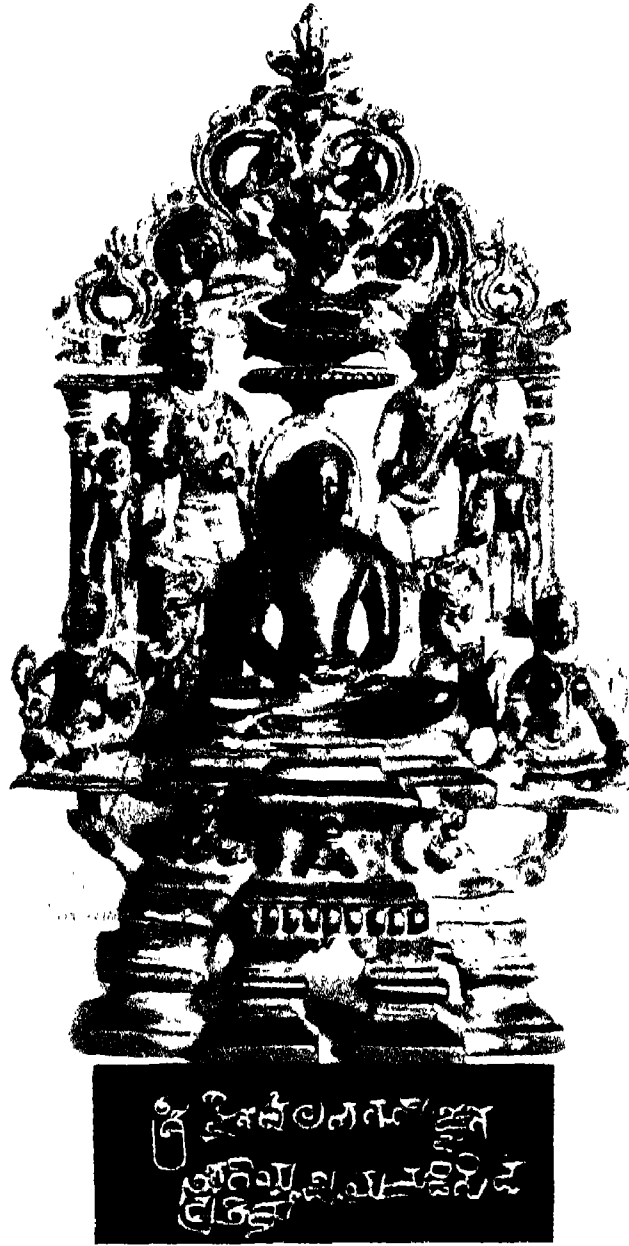
		पत्रांक			पत्रांक
जैन मंदिर	सांचोर	जैन मन्दिर	वधीषा
...	२४८
जैन मंदिर	रत्नपुर	जैन मन्दिर	लाज-नीतोडा
...	२४८
जैन मंदिर	धिलाडा	जैन मंदिर	नोदिया
...	२५०
जैन मंदिर	घोहिया (मारवाड़)	जैन मंदिर	कोटरा
...	२५०
जैन मन्दिर	कोटार [गोड़वाड़]	जैन मन्दिर	वरमाण
...	२५१
कुमारपालका जीर्ण मन्दिर	किराडू	जैन मन्दिर	लोटाना
...	२५१
जैन मन्दिर	सुंधा पहाड़ी	जैन मन्दिर	माकरोरा
...	२५३
जैन मन्दिर	घटियाला	जैन मंदिर	घवली
...	२५६
जैन मन्दिर	पिंडवाडा	जैन मंदिर	सीवेरा
...	२६२
जैन मन्दिर	वीरवाडा	जैन मंदिर	जीरावल पार्श्वनाथ
...	२६५
जैन मन्दिर	बसंतगढ़	जैन मंदिर	अंजारा पार्श्वनाथ
...	२६५
जैन मन्दिर	पालडी	जैन मंदिर	कापडा पार्श्वनाथ
...	२६५
जैन मन्दिर	कालाजर	जैन मन्दिर	अलवर
...	२६६
जैन मंदिर	कामद्रा	जैन मंदिर	पटना म्युजियम
...	२६६
जैन मन्दिर	उधमा	पाषाणके चरणों पर	...
...	२६६	...	२७७

लेखांक				लेखांक		
प्रतिष्ठा स्थान ।						
अजमेर	५६६	कलागर (कालाजर)	...	६५६
अजिमेगञ्ज (मुर्शिदाबाद)	८५१७६१२४२	काकंदी	...	१७३
अतरी	४७	काकर	...	४८१
अलवर	१०००	कायथा	...	४७५
अष्टार	५३२	कालघरी	...	६४
अहमदाबाद	६६१७११२३५६३६०३७२३८२	कालुपुर	...	६६७
			४४४५२६	कास्माबजार (मुर्शिदाबाद)	...	८१८४
अहिलाणी	४४८	कीराट कूप	...	६४२
आगरा	२०५३०७३०६३१०३१९	कोठारा	...	६५२
			३२२१४३३५०६	कोरडा	...	१०६
आमेण	१२५	खहेडा	...	८८६
आरामपुर	३२७	खुदीमपुर	...	२२१
आचरणी	७६८	गणवाडा	...	६४७
आसलपुर	८५६	गंधार	...	३०६६०८६५३१७६६
इडर	६२७	गुनशिला	...	१७७१२७८१७६१८०
इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	५२६	गुध्वर ग्राम (बड़गांव)	...	२७१
उदयगिरि (राजगृह)	२५३१२५४१२५५	ग्रेहडी	...	३
उदयपुर	६४५१७४४	गोरईया	...	५५४
उन्नतनगर	६८७	गोलकुंडा	...	७७२
उपकेश (ओसिया)	१३४	गोलीया	...	४७६
उमापुर	४८९	चंपकपुरा	...	८५०
ऋजुवालुका	३३६	चंपकनर	...	४०४
कडी	३५	चंपानगर	...	१४३१६५
कमलमेरु	४८३	चंपापुरी	...	६३७१४६१५८
कपटहेटक	६८१	चिमणीया	...	५१०
कलकत्ता	८७	चुंपरा ग्राम	...	६२४
कलबर्गा	६७४१६७५१६७६	जयनगर	...	१६३
				जलवाह	...	२७९
				जवाच	...	१६

लेखांक			लेखांक		
जायांधारा	...	२८३	नन्दिपोक (नोदिया)	...	६६३
जालोर	...	८३७।६०५	नल	...	२११
झावरनगर	...	७१५	नलीतपुर	...	६५४।६५५
जावालीपुर	...	८६६।६००	नागपुर	...	५८०।६१३
जीरावला पार्श्वनाथ	...	६७३।६७६	नाणा	...	८६०
जीर्णदुर्ग	...	६७७	नापलीया	...	६
जैनगर	...	५१६	पत्तन	...	२१।५१।५४।११।६।१५५
जोधपुर	...	६१२।८२८।८३८		...	५०४।५४०।५५६।५६८।८५१
झुंझु	...	१२१	पाटण	...	७१६
डिंडिला ग्राम	...	८६६	पल्लिका	...	८०६।८१३।८१४।८१५।८३२
डेढेया	...	५६८	पालिका	...	८३०
तिजारा	...	४२१	पाली	...	८२५।८२६।८२७
दंतराई	...	७४	पल्यपत्र	...	६०६
दधालीया	...	४६६	पाटलिपुर	...	३०५
दिल्लि	...	५२७	पाटलिपुर	...	३२०।३२८।३३०
दिवसा	...	६२४	पाडली	...	३२६
द्विपयन्दर	...	१३०	पाडलीपुर	...	३१३।३१४
देवक पसन	...	६६६।६७०	पडलीपुर	...	२७३
धंधू का	...	६	पटना	...	३१५
धमडका (कच्छ)	...	१२३	पाटल्लि (पालडी)	...	८५५
धांरू	...	४२३	पाटरी	...	४२२
धार	...	६२१	पानविहार	...	३६
धुलेवा	...	६२७।६४६	पावापुरी	...	१८४।१९०।१९२।१९७।२०६।२१०
नडुल	...	८३७।८३६।८४५।८६२	पींडरवाड़ा	...	७३।६४५।६४६।६४८
नडुल	...	६४३।६४४	पीडवाड़ा	...	६४६।६५५।६५१
नडुल डागिका	...	८४१।८४३।८४६।८५७	प्रयाग	...	१४५
नडुलाह	...	८४०।८५४।८५६।८५८	फलवर्दिका	...	८७०।८७१
नाडलाई	...	८४७			
नन्दकुलवली	...	८५२			

लेखांक				लेखांक			
बम्बई	३७०, ३७४	मानपुर	३०७
बरागाम	२१७	मालवक	११
बहादुरपुर	४८५	माल्यबन	१५२
बहुविध	६३९	माल्हेणसू	६२२
बालुचर (मुर्शिदाबाद)	...	३१, ३२, ४५, ४६, ३३८		मिथिला	१६६, १६८
बाहडमेर	६०८	मिरजापुर	२३३
बीकानेर	१३८	मुंजिगपुर	८४६
बीलाडा	६३७	मुर्शिदाबाद	...	५६, ६७, १३८, १४७, ६९६	
बूबूयाणा	१११	मेरुता (मेडता)	...	४५५, ५४३, ७५०, ७५४, ७८३, ७८४, ७८७, ८२६, ८२६, ९०६,	
बेगमपुर (पटना)	३३२, ३३३	मेलीपुर	६६५
भट्टनगर	५०	मोढ़	७६५
भरतपुर	६६२	मोरकरा	६४३
भाणावट	७७१	रणसण	५७४
भारठा	६६८	रतनगिरि (राजगृह)	...	२४६, २५०, २५१, २५२	
भिन्नमाल	५४१	रत्नपुर	६३५, ६३६
भिल्लमाल	६५७	राजगृह	५४०
भुडपद्र	६३८	राजपुर	५३६
भेया	१०४	राणपुर	...	७००, ७१३, ७१४, ७१६	
मंडपदुर्ग	११८	रोहिन्सकूप	६४५
मंडपाचल	७०७	लच्छवाड	१७४
मंडोवर	६४५	लीवही	१८, २८५
मंहुपे	४२०	वंगुद्रा	११७
मनेर	३२१	वघणोर	२९४
माफोडा	६७०	वडनगर	५७०
माडपा	५४१	वरजा	१३२
मानंदपुर	१६६	वलहरा	५६१

लेखांक					लेखांक				
बलहारी	६६३	सनीपुर	६३८
बसंतनगर	३६६	सदरछलिया	४३२
बसंतपुर	६५४	सम्मोदशिखर	३५५, ३६६, ४४६	
बहडा	६२३, ६२५	खर्णगिरि (जालौर)	६०३, ६०४	
बाकपत्राफानगर	७४३	सहयाला	६६०
बाघसीण (घघोणा)	६५९	स्तंभनीर्थ	२५, ११४, ६०५, ६५०, ७१०, ७११, ७१६			
भारणसी	३३५, ३४५	सांबोसण	७०
बासहड	८८०	स्याहजानाबाद (दिल्ली)	५२७
विक्रमनगर	७६५	सिरुवा	११५
विक्रमपुर	६२७	सिवना	४९३
विपुलांगरि (राजगृह)	२४५	सिंहपुर	४२५
विपुलाचल (राजगृह)	...	२३६, २४६, २४७, २४६			सीणोत	१२६
वीजापुर	६०१	सीणुरा	२८०, ४८४, ५५६	
वीरमग्राम	८४६	सीतामढी (मिथिला)	१६६
वीरमपुर	७२३, ७२४, ८२२	सीवेरा	९७२	
वीरपल्ली	६६६	सीरोही	११८
वीरवाडा	६५३	सेरपुर (ढाका)	३२६
वासलनगर	६४६, ६७७	हस्थिकुंडि (हथुंडि)	८६७, ८६८
वीसाडा	८३३, ८३४	क्षत्रियकुंड	२०८, २०९
धुमुज	२४					
धंदर	१०५					
धैभारगिरि (राजगृह)	...	२५७, २५८, २६०, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७							
व्यवहारगिरि (राजगृह)	...	२६१, २६२, ५२५							
शंडली	७४५					
शमीपाटी	८७६, ८६४, ८६५					
शीलबंदी	८४१					
पंडेरक	८८१, ८८२, ८८३, ८८४					
मन्वपुर	६३२					



Metal Image (Vidha Padmasan) with inscription in Southern Character (back), in possession of the Author.

JAIN INSCRIPTIONS



जैन लेख संग्रह ।

प्रान्त - पूर्व ।

जिला मुर्शिदाबाद । स्थान अजिमगञ्ज ।

श्री सुमतिनाथजी का मन्दिर * ।

धातुर्यों के मूर्ति पर ।

[1]

ॐ ॥ श्री सरवाह गङ्गे अस्सामूकेन कारित ॥ संतु १११० × ।

* नाहारों के पुरजों के प्रतिष्ठित जिनालयों में यह एक मन्दिर ग्रामके मध्य भागमें विद्यमान है । स्वर्गीया श्रीमति मयाकुमर के पुत्र स्वर्गीय बाबु गुलालचन्दजी तत्पुत्र संग्रह कर्ताके परम पूज्य पिता राय सेताबचन्द नाहार बाहादुर हैं । पूर्व मन्दिर गङ्गास्रोतसे नष्ट हो जानेसे आप यह नवीन चैत्य संवत् १९५४ में निर्माण करवाया है । प्रथम मन्दिरका लेख- ॥ श्री ॥ सं १९१३ मिति वैशाख सुदि ५ शुक्रवासरे श्री जिन भक्ति सूरि साखायां उ० श्री आनन्द बल्लभ गणि । तत् शिष्य पं । प्र । सदालाभ मुनि उपदेशात् श्री अजिम- गञ्ज वास्तव्य नाहर श्री खड्गसिंहजी तत्पुत्र श्री उत्तमचन्दजी तत्भायां श्री मयाकुमर एषः श्री सुमति जिन प्रासाद कारितः प्रतिष्ठाप्य श्री संवाय समर्पितश्च विधिना सतां ॥ जं । यु । प्र । श्री जिन सौभाग्य सूरिजी विजय राज्य ॥ श्री रस्तुः ॥ कल्याणमस्तुः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ १ ॥

× यह लेख श्री पार्श्वनाथजी के मूर्तिके पीछे खुदा भया है, अक्षर बहोत प्राचीन है । मुसल्मानोंने चितोर दरुल करनेके पूर्वमें यह मूर्ति वहां पर थी ।

(२)

[2]

सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ श्री आंचल गङ्गे प्रग्वाट ज्ञातीय व्य० उदा चार्या-
वत्त तत्पुत्र जोखा चार्या डमणादे तत्पुत्रेण व्य० मूडनेन श्री गङ्गेश श्री मेरुतुंग सूरिणामुप-
देशेन ज्ञाता श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ।

[3]

संवत् १४७९ वर्षे पोष वदि ५ शुके ग्रेहमी वास्तव्य श्रीमाख ज्ञाती श्रे० प्रतापसींह
ज्ञा० सोहगदे सुत दूदाकेन पितु मातु श्रेयोर्थ श्री वासुपूज्य विंवं कारितं पूर्णिमा गङ्गे
प्रतिष्ठितं श्री सूरि जिनबद्धज सूरि ।

[4]

सं० १५१० व० फा० शु० १२ उकेश वंशे जाणेचा गोत्रे सा० पदम पुत्र रजला सु०
साजण ज्ञा० जदसिरि पु० वेढा ज्ञा० कणसिरि वेता ज्ञा० लषमसिरि पुत्र ३ कालु खेमधर
देवराज ज्ञा० चांद्र सा० हापाकेन ज्ञा० ३ गूजरि सु० पुंजा राजीदि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे
श्रीश्रेयांस चतुर्विंशति पट्टः कारितः तपा श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिजिः प्रतिष्ठितः ।

[5]

सं १५१७ वर्षे माह सु० ५ शुके श्री उपकेश ज्ञाती नाहर गोत्रे सा० वेला पु० लाधा ज्ञा०
सोहगि पु० चांदा सावू लादा सहितैः पितु श्रेयसे श्री श्रेयांस नाथ विंवं का० प्रति० श्री
धर्मघोष ग० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे ज० श्री साधू रत्नसूरिजिः ।

[6]

संवत् १५३६ वर्षे मार्गशिर सु० ६ शुके श्री श्रीमाख ज्ञा० व्यव० आका चार्या रातलदे
सुत लांगकेन ज्ञा० मानू नापा निति । श्री शांतिनाथ विंवं कारा० प्र० पिप्प० श्री मुनि सिंधु
सूरि पट्टे श्री अमरचंद्र सूरिजिः ॥ नापलिया ग्रामे ।

(३)

[7]

संवत् १६४१ वर्षे मागसर मासे । सी० श्री राजा जा० रजमखदे पु० दोसा ठाकुर धना
हाथी छीवा हाथा जा० हरषमदे पु० जीवा एतत् स्वकुटुंब युतैः श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं
पितं श्री संडेर गछे वा० श्रीसहिज सुंदर पदे उ० हेमासुंदर पदे उ० श्रीनय सुंदर प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर ॥

[8]

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे उकेश बंशे लूणीया गोत्रे साः धीमा पुत्र साः
सधारण श्रावकेण पुत्र सीहा सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनजड
सूरिजिः खरतर गछे ।

[9]

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीमाल ज्ञातीय सा० साईयाकेन जार्या गांगी पुत्र
हासादि कुटुंब युतेन पुत्री रमाई श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गछे
श्री रत्नशेखर सूरि पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । धंभूका बास्तव्य ॥

[10]

संवत् १५५० वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ शोकेस ज्ञातीय जारवा सुत मेहा जार्या पदमाई
श्रेयसे जणसाखी पताकेन श्रीवासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गछे श्रीजिनहंस सूरिजिः ।

[11]

संवत् १५६४ वर्षे शा० १४१४ वर्त्तमाने माखवक देस ॥ उपकेस ज्ञातौ सा० देवली
जा० देसा पु० सा० सागा जा० रूपणं पुत्र जलपाल जा० लक्ष्मी पुत्र रघा विंबं प्रतिष्ठितं ।
वपा गछे श्री हेमवत्स (विभव) सूरिजिः ॥

(४)

[12]

संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ विंबं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर
जट्टारक गणेश ज्ञ० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर ज्ञ० श्री जिन सौजाग्य सूरिजिः कारितं च
श्रीमाल बंशे टाक गोत्रे मोह्या दास पुत्र हनुतसिंहस्य ज्ञार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्य ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत् १९११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल ज्ञाती क्षिगा गोत्रे समदडीया उडकेण०
सुहडा ज्ञा० सुहागदे पु० कम्माकेन ज्ञा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन
स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंबं कारितं श्री उपकेश गण्डे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक
सूरिजिः ।

[14]

संवत् १९२३ वर्षे वैशाख बदि ४ गुरौ उंसवाल ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० सरवण
ज्ञा० राणी सुत सा० सिंघा ज्ञा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना ज्ञार्या विरणि सुत सा०
पुनपाल सा० सोनवाल सुरपति प्रमुग्ध कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंबं कारितं
प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत् १९५३ वर्षे वैशाख सुदि ७ प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० पेता ज्ञार्या मदी सुत व्य०
जोजाकेन ज्ञा० राजू ज्ञातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्य श्री शांतिनाथ विंबं
का० प्र० तपागण्डे श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिजिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

[16]

संवत् १९१५ वर्षे वैशाख बदि १० सोमे जवाठ वास्तव्य हुवड ज्ञातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

(५)

दो० स० हेमाकेन जा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिजिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उशवाख झातीय जण्णारी गोत्रे सा० गेव्हा पु० सो० पी जा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अजिनंदन विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे ज० श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिजिः ।

[18]

संवत् १५२५ वर्षे वै० व० ११ बुधे लांवडी वास्तव्य उकेश झातीय व्य० बीमसी जा० वानू पुत्र व्य० गणमा जा० बाबू पुत्र व्य० केव्हाकेन जा० मानू वृद्ध जा० घूघा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुब्रत स्वामी चतुर्विंशति पट्टे कारितः प्रतिष्ठितः ॥ * वम्रगत चांइ सगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंबदणीक * गच्छे प्रतिष्ठा कारिता । * (अक्षर अस्पष्ट है) ।

[19]

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दली० वंश डुल्लह गोत्रे ठ० पाव्हणमीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीतल नाथ विंबं कारितं श्री ग्वरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुंदर सूरयस्तपट्टे श्री जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[20]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० बठा जा० वालहदे सु० रुदा जा० पव्ह सु० ठिरा णिरा आंवा सह लषा युतेन श्री पद्मप्रजु विंबं कारितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने ज० श्री देवगुप्त सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

(७)

[25]

संवत् १५६३ वर्षे माह बदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमास ज्ञातीय सप्तु शाखायां । व्य०
केसव जा० चरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । ज्ञा० व्य० आसाकेन चार्या अमरादे जातु
व्य० छाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिजिः श्री
स्तम्भ तीर्थे । कुतवपुर वास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

[26]

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे उक्तास ज्ञातीय सुराणा गोत्रे साह शिवदास
जिनदासकेन पट्टे चार्या नार्ड नारिग सुत जातु राजपास सहितेन मातु नारिग श्रेयोर्थ श्री
कुंभुनाथ विंभ श्री चतुर्विंशति जिन सहित कारावित प्रतिष्ठित श्री धर्मघोष गह्ने नंदिदर्शन
सुनि पत्रे नयचंद सूरिजिः ॥

[27]

संवत् १५७७ वर्षे कार्तिक सु० १२ — — — — गह्ने नट्टारक शुभकीर्ति उपदे-
सक आसास ज्ञानी गोपल गोत्रे सं । दोर राज चार्या सेदल पुत्र सं० चंरह राज चार्या जीरी
दुत्र छावूभाषी विंभं प्रथमंति ॥

[28]

॥ श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५१० वर्षे पौ० सु० १५ शुके उपकेश ज्ञातीय प० शिवा जा० श्रीमखदे सुत फ०
आसाकेन जा० आसु प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंभं का० प्र० श्री तथा
अष्ट नायक श्री श्री श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[29]

॥ राय बुधसिंहजी दुधेड़िया का घरदेरासर ॥

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री उकेश बंशे सेवि गोत्रे श्रे० सोधरेण जा०

(७)

[25]

संवत् १५६३ वर्षे माह वदि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सषु शापायां । व्य० केसव जा० नरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । प्रा० व्य० आसाकेन जार्या अमरादे जातु व्य० लाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र० श्री सूरिनिः श्री स्तम्भ तीर्थे । कुतवपुर वास्तव्यः ॥ शुभं चवतु ।

[26]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे ठंश्राक्ष ज्ञातीय सूरणा गोत्रे साह शिवदास जिनदासकेन ग्रहे जार्या नार्ई नागि सुत जातु रत्नपास सहितेन माहू नारिण श्रेयार्थ श्री कुंजुनाथ विंभं श्री चतुर्विंशति जिन सतिर कारित प्रविहित श्री धर्मबोध गडे नंदिवर्द्धन सुदि पदे गणवद सुदिनिः ॥

[27]

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सु० ११ - - - - - गडे नट्टारक शुभकर्त्तुनि टपदे-
स्तव सायक ज्ञाती गोपत्र वर्त्ति से । श्रेय गज जार्या सेयस पुत्र सं० जेगह गज जार्या जीरी
सुत जाम्बूनार्ई जिन सतिर ॥

[28]

॥ श्री शान्तिनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५१० वर्षे पौष सु० १५ शुके लपकेश ज्ञातीय पठ शिवा जा० प्रीमखडे सुत फ०
साभाकेन जा० आसू प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंभं का० प्र० श्री तपा
जट्ट नायक श्री श्री श्री रत्नदेव्यर सुरिनिः ॥

[29]

॥ गय बुधसिंहजी डुबेड़िया का घरदौरासर ॥

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री लकेश प्रो० सेति गोत्रे श्रे० सीधरेण जा०

धिरी सुखूणी पु० यावरसिंह । जटादि युतेनं स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्री खर
तर गच्छे श्री जिनचंद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ।

॥ श्री सांवसियाजी का मंदिर - रामबाग ॥

[30]

संवत् १५४६ माघ बदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासु जा० छाडो
नाम्न्या पु० सिवराज जार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री
अजितनाथ विंबं का० प्र० उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० श्री देवयुत सुरिजिः ॥

जिला - मुर्शिदाबाद । स्थान - बाबूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परका लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत्त्रिकमादित्य राज्यात् संवत् १७४५ मिते । श्री शास्त्रिवाहन
शकाब्दाष्टके १७१० प्रवत्तमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे
श्री तपगङ्गाधिगज जट्टारक श्री विजय जेनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर वास्तव्य
बजलानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्मनार धुरंधर साहजी श्री केशरी
सिंहजी तस्यजार्या धर्म कर्मणि रता बीची सरूपोजी पं० । श्री जावविजय गणिरुपदंशात् ।
स्वगृह जिन विंबं स्थापनार्थं ॥ बाबूचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं० जाव
विजय पं० गंजीर विजय गणिजिः । यावत्तरासुमेरोद्रि । यावन्नैन्नोक्य जास्वरं । तावत्तिष्ठतु
प्रासादं निर्दिष्टन्तु सुनिश्चलं ॥ १ ॥ सिपिकृतं पं० जूपविजयेन ।

(९)

[32]

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुजांबर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर विज-
योर्जित ज्ञान लक्ष्मी ॥ यस्योपदेश वचनाय्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो वञ्चुव
१ ॥ तत्पट्टे क्रमतारवीव विजय जैनेन्द्र सूरिश्चर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो बाळोचरे
डंगके ॥ श्री संघेश सहायता शुजरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज जक्ति
वशतः कारापिनायं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरिश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम
चूमान्यः श्री रुद्धि विजयोत्तवत् ॥ ३ ॥ तच्छिव्य चाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रम्बं-
प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुजतः ॥ ४ ॥ जडं जवतु संघस्य जडं प्रासाद कारके
तथा जडं तपा गष्ठे जडं जवतु धर्मिणां ॥

[33]

॥ धातुर्योपरका लेख ॥

संवत् १४९० बेशाख सुदि ५ जार उडिया गोत्रे । सा० चोंदा सुत । सा० पदाकेन पु०
फामु रजनादि सहितेन स्वचार्या पदम श्री पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंबं श्रीहेमहंस सूरिजिः ।

[34]

संवत् १५१३ बै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंबड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत मढीया श्रेयसे
त्रातृ हीराकेन त्रातृज कुरुया सुतेन श्री शांतिनाथ विंबं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पक्षे श्री
रत्नसिंह सूरिजिः ॥

[35]

संवत् १५३० वर्षे माघ वदि ५ गुरौ ऊपकेश ज्ञातीय श्रे० तेजा चा० तेजसदे पुत्र जूग
जा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयोर्य संजवनाथ
विंबं का० श्री साधू पुर्षिमा पक्षे श्री पुण्यचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्र० श्री विजयजद्र सूरिणा
कडी वास्तव्यः ॥

(१०)

[36]

संवत् १५३४ वर्षे -- शुभ ३ दिने सा० धरसी जायां रानू पुत्र सा० लूणाकेन चार्या टीसू
प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सद्मी
सागर सारजिः पान बिहार नगरे ॥

[37]

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने बारदेवा गोत्रे सा० कोटा जा० सोनी पु० साह सोडा
सहजा सीहा जा० हा० श्रेयोर्थ श्री कुंभुनाथ विंभं कारितं प्र० श्री कारंट गच्छे श्री -- सूरिनिः

[38]

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि ७ वर्षे श्री श्रीमाजान्वये उदडा गोत्रे साह श्री चंद्र
पुत्र चौतादहण अराय राजा रायसहा आराधीर राजा चार्या केली पुत्र सा० योगा उदडा
शकतन दासा नरनाथ साह सदानमझ मुध निः श्रीसिसिद्ध साह रायसहा पुत्र हेवा गजपति
वहुरली । सा योगा पुत्र अदिपाव हा० उदडा चार्या उदहणदे पुत्र नदसमझ सा० सहा साह
आसधर चार्या हाती सिंगारदे पुत्र राया अकानत जा० अकालदे पुत्र देवा जजनात । पन
पुत्र जैरोदास जजतमलेन राया शकतन कुम्भार्थ, श्री शान्तिनाथ चतुर्वीर्य गृह कारित प्र०
श्री परमेश्वर गच्छे श्री साङ्गुला सूरि पदे श्री कमलाप्रत सूरि कल्पे श्री सदाशिव सुनि निः

॥ श्री विनयनाथजी का मंदिर ॥

[39]

संवत् १४७२ वर्षे ज्येष्ठ बदि ५ शनि० सुगड गोत्रे सा० भीटा पु० टाडा पुत्र ताटा
दाग राग सुकनान्या दाटा पितृव्य सा० रुदडा पु० देवा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंभं कारितं
प्र० बृहज्जतीय श्री अमरप्रत सूरिनिः ॥ शुभं नरकः ।

[40]

संवत् १५१५ वर्षे व० ५ अतरी ग्रामे प्राग्नाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०

(११)

कर्म सीहैन जा० सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युतेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत बिंयं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिजिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे बैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश बंशे सखवाल गोत्र सा० लाखा जा० बलनादे पुत्र सा० जावडेन जा० जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला लीला रामपाल जार्या आंबू पुत्र खोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत बिंयं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिजिः ॥

[42]

उं संबत १५७६ वर्षे श्री खरतर गछे जाड़ीया गोत्रे सा० नाथू पुत्र सा० पाह्ह सा० सकू जा० नीप्पा रा—सटकया मपसीसू प्रमुख कुटुंबिकया श्री आदिनाथ बि० का० ज० श्री जिनहंस सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वै० शु० ५ जौमे श्रीमाल झतीय ठोर गोत्रे सा० धरमगज जार्या बीरू सुत सा० सतीदास जार्या वा० ईद्राणी ताच्यां पूष्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंयं कारितं प्र० खरतर गछे श्री जिनचंद्र सूरिजिः । श्री जिनजानु सूरिणामुपदेशेन । अजाईः ४२ वर्षे श्री अकवर राज्ये ।

[44]

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

॥ सं १९२० मि । आसोज सुदि ९ तियो बुधबारे नू । बाबु श्री प्रताप सिंघजी तत्पुत्र खठमीपत्त चि । धनपत्त ठन्नसिंघ श्री आदिजिन बिंयं कारापितं वा० सदाखाज प्रतिष्ठितं ॥ आंति जिनं, नेम जिनं, पार्श्व जिनं, बीर जिनं पञ्चतिर्थी । मिः मिगसर सुद २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सम्भव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पठारोंपरका लेख ॥

[45]

संवत् १८४४ मिते वैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बालूचरपुरे । ज० श्री जिनचंद्र सूरि जी विजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० कामाकल्याण गणः । तच्च कुमारादि युतानामुपदेशतः श्री मकसूदावाद बास्तव्य समस्त श्री सहेन श्री सम्भव जिन प्रासादः कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण वृध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चेत्य वर्षणं । निधान कल्पेर्नवनिर्मनोरमै । विंशुद्ध हेमः कल्पशेर्विराजितं ॥
हुचारु घंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चक्षुत्पताका प्रकरेः
प्रकाम । माकारयन्नमनिन्द्यसत्त्वान् ॥ निषेधयन्निश्चित दुष्टयुद्धीन् । पापात्मनश्चागततः
कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीजि । जेव्यात्मनिर्गुरितर प्रमोदात् ॥ बालूचराख्ये
प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सम्भवनाथ चेत्यम् ॥ ३ ॥

घातुयोके मूर्तिपत्र ।

[47]

उं संवत् १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ जकेश बंशे लीक गोत्रे म० सिवा चा० हर्षु पु०
म० हीराकेण जा० रक्षादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रब विवं कारितं श्री
खरतर गठे श्री जिनचंद्र सूरि पटे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५१५ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रिदलीय न० लाधू नार्या धर्मिणि पुत्र न० अचल
दासेन पुत्र उमसेन लक्ष्मीसेन सुर्गसेन बुद्धिसेन देवपाल श्रीसेन पहिराजादि युतेन खश्रे-

(११)

यसे श्री आदिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सुरि पद्दे श्री जिन
सुन्दर सुरि पद्दालङ्कार श्री जिनहर्ष सुरिवरेः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५२३ वर्षे बैशाख षडि ४ शुके श्री उपकेश वंशे स० देवहा जार्या दूब्हादे पुत्र वकृष्ण
सुश्रानकेण जार्या मेघु पुत्र जयजज्ञता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अश्वत्थ गच्छेश्वर श्री जय
केसरि सूरिणासुपदेशेन श्री सम्भवनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं १५२४ वर्षे मार्गशर्ष सुदि १० शुके उपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर
पुत्र स० कालण जा० कपूरी पुत्र स० हेमपात्र जा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिलेन जातु पास
दत्त देवदत्त जार्या नानू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रज चतुर्विंशति पद्दः कारितः प्रतिष्ठितः
श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने श्री कक सूरिजिः श्री जह्ननगरे ॥

[51]

सं १५२५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुके उपके० पत्तन वास्तव्य सा० देवा जा० कपूरी पु० सा०
आसा जा० नाऊं पु० हर्षा जा० मनी जा० साइया रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी नमि०
श्री वासुपूज्य विं वं उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने श्री ज० श्री सिद्ध सुरिजिः ॥

[52]

उं संबत १५२९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ० सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय वु० गांगा वु० मुजा पुत्र वु०
महिराज जा० रमाइ श्राविकया श्री वासुपूज्य विं वं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर
सुरी श्री जिनसुन्दर सुरि पद्दराज श्री ३ जिनहर्षे सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कव्याणं चूयात् ।

[53]

सं १५३४ वर्षे उपकेश ज्ञातीय बांज गोत्रे सङ्घी जाटा जा० जयतखदे पु० माणिक

जगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गढे श्री रत्नशेखर सुरि
पदे श्री सद्मीसागर सुरिजिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे बेशाख बदि ६ शुके प्राग्वाट ज्ञातीय म० पादहा पुत्र म० पांचा जार्या
वाइ देऊ पुत्र म० नाथा जार्या श्री० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज
जीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
कृतव पुरा गढे श्री इंद्रनन्दि सुरिपदे श्री सौजाग्य नन्दि सुरिजिः श्री पत्तन बास्तव्यः ॥

[55]

सं० १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमास ज्ञातीय सा० जेठा जा० मद्धाई पुत्र
सोनाकर जा० वाइ कमळादे पु० सोना वीराकेन श्री पूष्णिमा पदे श्री मुनि रत्न सुरिणा-
मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

[56]

संवत् १९०३ शाके १७६७ प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मद्गुदावाद
बास्तव्य जंसवाल ज्ञाती बृद्धशाखायां साह निहासचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ
जिन विंवं कारापितं । खरतर गढे श्री शांतिसागर सुरिजिः प्रतिष्ठितं । तप्पा सागर गढे ।

राय बनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[57]

सं० १९१० फा० कृ० १ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ जार्या महताब कुंवर चंद्रप्रज पञ्च-
तीर्थीका । उ । सदा सात्तेन प्र० श्री अमृत चंद्र सुरि राज्ये सं १९४७ आषाढ़ शुक्र १०
आत्मनः कल्याणार्थ ।

किरतचन्द्रजी सेठिया का घरदेरासर — चावलखोखा ।

[58]

सं० १५३३ वैशाख बदि ४ प्राग्वाट व्य० अषा जा० आदडी पुत्र व्य० जरसीहिन जा०
पह पु— सादहादि कटुंड युतेन स्वश्रयसे श्री वासुपूज्य विंवं का० प्र० तथा रत्नशंखर सूरि
पदे श्री सद्धमीसामर सूरिजिः ।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर — कीरतबाग ।

[59]

पाषाण के मूर्तियोंपर ।

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-
जीत्कानामुपदेशेन । उस बंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कमल नयनजी तत्पुत्र सा० उदय
चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा उस बं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फत्तेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ
आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री मत्पार्श्वनाथ विंवं कारापितं । प्रतिष्ठितश्च वि०
सूरिजिः श्री जानुचंद्रेणेति आचंद्रार्कचिरं नन्दतात्त्रं चूयाञ्चश्रियं ।

[60]

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंद्र श्री पार्श्वचंद्र गछे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र
जीत्कानामुपदेशेन उस बं० गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन तत्पुत्र सा० उदय चंद्रजी
तत्धर्मपत्नी तथा उस बंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री फत्तेचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द
चंद्र तत्पुत्री बाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य विंवं कारापितं । प्र० सूरि श्री जानुचंद्रेणेति जं
चूयाञ्चिवं सदा ॥

[61]

पाषाणके चरणोंपर ।

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ४ चंद्रवासरे उस बंशे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन

(१६)

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द जी तन्नाचा बाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यद्विज गण-
धर पाडुका कारापितं ।

[62]

सं० १८३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०
श्री उदयचंद्र जी तत्पत्नी बाइ अजबोजीकेन श्री बासुबुज्य प्रथम सुचम गणधर
पाडुका कारापितं ।

[63]

सं० १८६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुसाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां चरण
स्थापनं श्री सहायदेण श्री जिनहर्ष सूरीणामुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोहृन्द जा० राजू पुत्र नाथू जार्या कविणि
जात - नाह्वा केन जार्या सीदू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री सोमसुन्दर सूरिपट्टे श्री रत्नशेखर सूरि राज्यः ठ ॥ कासधरी ॥

[65]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरु रजीआण गोत्रे हुवड़ हातीय दोसी ठाकुर सी जा०
नाइ हूसी सुत दोसी बाबाकेन हरपाल दासा पोंगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंभुनाथ विंवं
कारितं हुवड़ गछे श्री सिंघदत्त सूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीखकुंजर गण ।

[66]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल झा० सा० गोआ जा० जाऊ सु०
सा० साजण जा० मदोथरि सु० सा० सटकण जा० सुराह सु० सा० सोम सा० पासा

(१०)

सहस्राख्येः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति षष्ठः पूर्णिमा षष्ठे श्री पुष्करस्त
सूरीशामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितश्च बिधिना श्री अहमदाबाद नगरे ।

श्री दादास्थान का मन्दिर ।

पाषाण के चरणोंपर ।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत् १८११ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय जी श्री १०८ श्री
समयसुन्दर जी गण्डि गर्जेन्द्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन जी शाखायां
बंजितोत्तम प्रवर श्री ९ श्री जीमजा श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० हजारी
नन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रज्ञावक कातेख गोत्रे साहजी श्री सोजाचन्द जी तत् जातृ
मोतीचन्द जी श्री मत् बृहत खरतर गच्छे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूडामणि जहारक प्रभु
श्री १०८ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०९ श्री जिनकुशल सूरि चूरीश्व-
राणां पाण्डुका कारापिता मकुशुदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिभिः ॥ शुभमस्तु ।

[68]

सं० १८९६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रवारे बृहत श्री खरतर गच्छे
जं० । यु० । ज० । श्री १०८ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सकल शाखाशार्थ पाठन प्रधान बुद्धि
निधान । श्री मधुपाध्याय जी श्री १०८ श्री रत्नसुन्दर गण्डिजिह्वराणां चरण स्थापन ॥
साहजी डूगड़ गोत्रीय श्री बाबु श्री बुधसिंह जी तत्पुत्र बाबु श्री प्रतापसिंह जी व्यापहृष्ट
प्रतिष्ठितं श्री रस्तुः कव्याणमस्तुः ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर - कठगोला ।

[69]

ॐ संवत् १४८९ वर्षे वीष षदि १० गुरौ श्री नीला ज्ञानीय गं० गङ्गा नारा सङ्गु तयोः

(१८)

युतेन सह स्वधरेण स्वश्रेयसे श्री जीवत्स्वामि श्री सुपार्श्वनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री
बृहत्तपा पदे श्री रत्नसिंह सुरिजिः शुजंजवतु ।

[70]

सं० १५३० वर्षे माघ सुदि ४ शुक्रे सांबोसण वासि प्राग्वाट झा० व्य० सोना जा० माऊ
पु० व्य० नारद बंधु व्य० बिरूआकेन जा० वीट्टणदे पु० देधर मेखा साइयादि कुटुंब युतेन
निज श्रेयसे श्री सम्जवनाथ विंशं का० प्र० श्री तपा गछे श्री खदमीसागर सुरिजिः ॥

[71]

सं० १५०३ शाके १९६० प्रवर्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदावाद बास्तव्य उंसवाळ
झाती बृद्ध शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह बिसंघजि तत्तार्या रुपमणी स्वधर्ये श्री
आदिश्वर जिन विंशं जरापितं श्री शांतिसागर सुरिजिः प्र० ॥

श्री जगत्सेठजी का मन्दिर - महिमापूर ।

[72]

सं० १५११ वर्षे माघ बदि १ गुरो प्रा० झा० म० जेसा जा० सुरी पुत्र सर्वणेन जा०
रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंशं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पदे श्री
पुण्यचंद्र सुरीणासुदसेन विधिना श्री विजयचंद्र सुरिजिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ व० फा० सु० ११ प्राग्वाट व्य० होरा जा० रूपादे पुत्र व्य० देपा जा०
गीमति पु० गांगाकेन जा० नार्थी पुत्र मेरा जातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ विंशं
का० प्र० तपा गछे श्री खदमीसागर सुरिजिः । पीररवाड़ा ग्रामे मुंठलिया बंशे श्रीः ।

(१९)

[74]

सं १५७७ वैशाख सुदि ६ सोमे उपवेश ज्ञातो बलहि गोत्रे राका शाखायां सा०
पासड जा० हापू पु० पेवाकेन जा० जीका पु० ३ देवा दूदादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ
श्री पद्मप्रत्न विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपवेश गळे ककुदाचार्य सन्ताने प्र० श्री सिद्ध
सूरिजिः दन्तराइ बास्तव्यः ।

[75]

स्फटिक के विंश पर ।

सं १७१० ब० ज्येष्ठ सु० १ श्री स्तम्म तीर्थ वा० उकेश ज्ञा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति
जा० शिवा श्री कुन्थुनाथ विंशं प्र० श्री विजयानन्द सूरिजिः । तप (नय) करण ।

[76]

रौप्यके मूर्ति पर ।

सं० १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथी । उत्तवाल वंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक चन्दजी स्वधर्म
रस्नी माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन विंशं चिरं जयतात् ॥ श्रेयोस्तः ॥
उरु जवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमघजार ॥

[77]

धातुयोके मूर्तिपर ।

सं० १४७० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपवेश ज्ञातीय आयचणाम गोत्रे सा० आसा जा०
वाशि पु० काजू नाहू जा० रूपी पु० खेमा तावहा सावड श्री नमीनाथ विंशं का० पूर्वतलि०
पु० आत्मा श्रेष्ठ उपवेश कुक० प्र० श्री सिद्ध सूरिजिः ।

(२०)

[78]

सं० १५३९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाख बंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्म पुत्र सा० पासा जा० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं स्वपु ष्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनजड सुरि पढे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत् १५४९ वर्षे बैशाख सुदि ७ श्री मुखसंह जहारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापडीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १७७९ वर्षे मित्ती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० बीरदास पुत्र छषमीपतिकेन ।

[81]

सम्बत् १७७० वर्षे मित्ती माह वदि ३ बार गुरु दिने कारितमिदं संकित मुनिजड गण्डि बरेष प्रतिष्ठितञ्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गण्डिभिः --- कास्माबाजार --- ।

[82]

सं० १७८१ मिति आषाढ शुक्ल १० तिथौ शनिबारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका कारापिता सेठिया गुढावचन्द ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गतः । श्री पार्श्वचंद्र सुरि गढे ।

(२१)

[84]

॥ सम्बत १०६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ए शुक्रदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी
सद्गुरूणा चरणन्यासः कारितः श्री सङ्गेन । कास्माबाजार वास्तव्य भावकैः सुशुणोष्वत्तैः ।
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जिः १ ॥

॥ श्री सम्जवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पाषाणकी विशाल मूर्त्त बिव पर ।

॥ श्री बीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ शाखिवाहन १७९७ माघ शुक्ल
एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन क्षमे बङ्गदेशे मधुदावादांतर्गताजिमगञ्ज वासी
बृहत श्योस वंशे लुंपक गण्डे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तज्ञार्या महताव कुमर्य तत् बृहत पुत्र
राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाता राय धनपतिसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतिसिंह
नरपतिसिंह सपरिवारेण श्री सम्जवजिन बिवं शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महा-
बीर जी परिकर सहित कारापितं जिकट्टरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सूरिजिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ जगवते नमः ॥ सम्बत अठारह सै ग्यारह (१७११) कृष्ण द्वादसी श्रृगु बैशाख ।
ॐसवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मङ्गलै धर्मकी साख ॥ सजाचन्द के श्यमरचन्द सुत तिन
सुत मुहकमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह जागीरची तीर विश्राम ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्बत खंड्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १७७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशो
१७३९ । संख्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलपष्टि तिथौ बुधवासरे श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राणां
प्रासादोयम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्घेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री खरतर
गणेश जटारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥

[88]

धातूयों के मूर्त्तिपर ।

सम्बत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रत्न सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो — — — ।

[89]

सं० ११५९ वैशाख सु० ३ बुधे सो० जेहड़ सुत सा० बहुदेव हीर जडाण्यां मातृ राज
श्री श्रेयोर्ष श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिजिः ।

[90]

सम्बत १३४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० महं० सादा सुत महं० राजा
श्रेयसे ससुत महं० मासहिवि श्री आदिनाथ विंयं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[91]

सं० १३७५ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमचंद्र जार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्ति-
नाथ का० श्री हेमप्रत्न सूरिजिः प्र० महाइहाय ।

(२३)

[७२]

सं० १४३४ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि २ गुरौ बरहुडिया गोत्रे सा० जोजदेव पुत्र मु० सरसति
श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विं वं कारितं प्र० देवाचार्य सं० — — सुरिजिः ।

[७३]

सम्बत १४४९ आषाढ सुदि २ गुरौ श्री अश्वल गह्वे उकेश बंशे गोखरु गोत्रे सा० नालूग
चार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विं वं कारितं प्रति-
ष्ठितश्च श्री सुरिजिः ।

[७४]

सं० १४५९ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रवना चार्या लखलादे पुत्र
सोगाकेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ विं वं का० प्र० श्री — — ।

[७५]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उवएस ज्ञातीय व्य० देवराज चार्या जस्मादे पुत्र
वृषा जा० धलूणादे सहितेन पित्रो जातु रामसी श्रेयसे श्री पद्मप्रज विं वं कारितं प्र० ब्रह्मा-
णीय गह्वे श्री उदयानन्द सुरिजिः ।

[७६]

स्वस्ति ॥ सम्बत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ बुधे श्रीमाल मढरोल गोत्रे सा० ईदा सुत
सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विं वं प्र० श्री विजयप्रज सुरिजिः ॥

[७७]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ श्योस बंशे काकरिया गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० साखिग
चार्या पद्मार्हना शान्तिनाथ विं वं का० प्रतिष्ठितं कृष्णबीय श्री नयचंड सुरिजिः ।

(२४)

[९८]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ उंस वंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाइवेव जा० करण पुत्र
सामस्र जार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुण्यार्थ श्री श्रेयांस विवं का० प्र० -- वि
गष्टे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

[९९]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा०
चंजी पुत्र श्रीरत्नेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विवं का० प्र० श्री कृष्णि
गष्टे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

[१००]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुके श्री श्रीमास्र ज्ञातीय ठकुर धरणी जार्या बाई गाङ्गी
सुत ठकुर मानुण जार्या बाई अरघू तेन स्वकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारितं प्रति-
ष्ठितं आगम गष्टे श्री जिन रत्न सुरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कव्याण ॥

[१०१]

सन्वत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ उंसवाख ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० स्त्रीमा पुत्र
वरषा जा० वाखहदे स० जातृ रद्धा श्री विमलनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाख
गष्टे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

[१०२]

सं० १५१४ वर्षे आषाढ वदि १३ दिने बपुडाणा गोत्रे तुंमिळा गोत्रे सुत देवराजेन पु०
पहराज युने विवं का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[१०३]

सं० १५१८ वर्षे आषाढ सुदि १० मंत्रिद्वयीय श्री काणा गोत्रे स० साधू जा० धर्मिषि

(१५)

पु० अचल दासेन पु० लघसेन अक्षीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाख बीरसेन महिराजादि
युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनचंद्र सुरि पद्वे श्री जिनचंद्र सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्बत १५१९ वर्षे कार्तिक वदि ४ गुरु श्रीमाखी झातीय मंत्रि देवा जार्या सहिजू सुत
वरजांगकेन जातु जेसा नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयोर्यं श्री अजितनाथादि चतु-
विंशति पद्वे कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गठे श्री मुनिचंद्र सुरि पद्वे श्री बीर सुरिजिः ॥
त्रेया वास्तव्यः श्री शुभं जवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५२४ वै० शु० १० लकेश वेदर वासि सं० महिराज जार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन
जगिनी पद्माई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ विंवं का० प्र० तथा श्री सोमसुन्दर सुरि
सन्ताने श्री अक्षमीसागर सुरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५२४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता जा० बाबू पुत्र जोगाकेन जा० जावड़ि पु० रामदास
जातु अर्जुन जा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ विंवं का० प्र० श्री सोमसुन्दर
सुरि सन्ताने श्री अक्षमीसागर सुरिजिः ॥

[107]

सं० १५३२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री लकेश वंशे श्राद्ध सन्ताने ज० जोजा पुत्र नखाता
हूना ज० जोहडा नारदाज्यां श्री अजिनन्दन जिन विंवं कारितं प्र० श्री खरतर गठे श्री
जिनचंद्र सुरिजिः ॥

[108]

सं० १५३२ वर्षे वैशाख सु० १० शुके श्री अक्षमीसागर सुरिजिः ॥ श्रीरस्तु ॥

काङ्ही पुत्र सा० सीहा सुश्रावकेण जा० सूहृदिदे पुत्र श्रीवंत श्रीचंद स्तदाज्जड रव शिवदास
पौत्र सिद्धवास प्रमुख कुटुम्ब युनेन श्री अश्वल गणेश श्री जयकेशरि सूरीणामुपदेशेन
मातृ पुण्यार्थं श्री कुन्थुनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सङ्गेन ॥

[109]

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ५ जामे उपकेश ज्ञातीय उ० धरणी जा० जखी सु० बेठाखा
जा० कुंती कनसू जतृ आत्म श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंवं का० प्रति० श्री नाणवाख गणेश श्री
धनेश्वर सूरिनिः । कोरडा वास्तव्यः ।

[110]

सम्बत १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुके श्रीमाख ज्ञातीय नाथलपूरा गौत्रे म० हंसराज
जा० हासखदे पु० सा० षेढा जा० षीमादे आत्म श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विंवं कारापितं श्री धम
घोष गणेश ज० कमलप्रज सूरि तत्पट्टे ज० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥ ७ ॥

[111]

सम्बत १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्री श्रीमाख ज्ञातीय श्रेष्ठि लारुण जार्या अजी
सुत वासण रूढा जेसिंग हूडा जा० रमादे स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ विंवं कारितं
श्री आगम गणेश श्रीमुनिरत्न सूरि पट्टे श्री आनन्दरत्न सूरिनिः प्रतिष्ठितं बूबूयाणा वास्तव्यः ॥

[112]

सं० १५७७ वर्षे फागुण सु० ९ बुधे राजाधिराज श्री नाजि नरेश्वर तन्नाया श्री मरु
देव्या तत्पुत्र श्री ५ आदिनाथ विंवं का० इंद्राणी अजिधानेन कर्मकार्यार्थं श्रेयोस्तु शुभं जवतु ॥

[113]

सं० १६५० वर्षे माघ सित पञ्चमी सोमे वृद्ध शाखायां अहम्मदावाद वास्तव्य उंसवाख
ज्ञातीय । सा० बोधा जार्या कड्हा सुत सा० राजा जार्या अदक सुत सा० जयतमाख । जार्या

जीवादे सुत सा० ठाकुर नाम्ना जातु सा० पुण्यपात्र सा० नाकर खजार्या गमतादे सुन लाखजी
बीरजी प्रमुख कुटुम्ब युतेन खश्रेयसं श्री सम्भवनाथ विवं कारितं प्र० श्री तपा गढे महानृप
प्रतिबोधक ज० श्री हीरविजय सूरि तराट्ट प्रजावक सुबिहित ज० श्री विजयसेन सूरिजिः
आचार्य श्री ५ श्री विजयदेव सूरि उपाध्याय श्री कल्याणविजय गणि प्रमुख परिवृत्तेः ॥

[114]

सम्बत १६९७ वर्षे फागुण सित पञ्चमि गुरुवासरे श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य वृद्ध शाखायां
उपकेश ज्ञातीय सा० लक्ष्मीधर जार्या बाई लखमादे पुत्री वा० कहे बाई नाम्न्या स्वमातृ
सा० धनजी सा० रतनजी सा० पञ्चासण प्रमुख युतया श्री नमिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठा-
पितं च स्वप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपा गढाधिराज जट्टारक श्री विजयसेन सूरेश्वर पट्टालङ्कार
श्री विजयदेव सूरेश्वर पट्टप्रजाकराचार्य श्री श्री विजयसिंह सूरिजिः ॥

॥ श्री महावीरस्वामी का मन्दिर — माणिकतला ॥

[115]

सं० १३४० वर्षे — — — — — जयसवाल ज्ञातीय सा० लाखणा श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ
विवं माता चापल श्रेयोर्थ श्री शान्तिनाथ विवं कुमार सिंहेन आत्म पुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ
जार्या लखमादेवी श्रेयोर्थ श्री महावीर विवं सुत खेतसिंह पुण्यार्थ श्री नेमिनाथ विवं
कारितं साह कुमरसिंहेन प्रतिष्ठितं कोरंटक गढे श्री नन्न सूरि सन्ताने श्री कक सूरि पट्टे
श्री सर्वदेव सूरिजिः ।

[116]

सं० १४७४ वर्षे श्री श्रीमाल बंशे सा० लामा सा० हापा सुश्रावकेण पुत्र आढा सहितेन
स्वपुण्यार्थ श्री बर्द्धमान विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री
जिनजट्ट सूरिजिः ॥

(२८)

[117]

सं० १५११ वर्षे षोष बदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गह्वे श्री श्रीमास ज्ञातीयः श्रे० मांश्या
जा० राणा सु० वस्ता पा० अखवेसरि नाम्न्या स्वजर्तु श्रे० श्री कुन्धुनाथ वि० प्र० श्री
विमल सूरिजिः । बगुडा बास्तव्यः ॥

[118]

सं० १५३२ वर्षे बैशाख बदि ५ रवौ श्री जावन्तार गह्वे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे
व्य० मीमण जा० हलू पु० सादा जा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — जातृ नेमा पुण्यार्थ
समस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य
सन्ताने ज० श्री जावदेव सूरिजिः ॥ सीरोही बास्तव्यः शुभम्भवतु ॥

[119]

सम्बत १५५१ वर्षे षोष सुदि १३ शुक्रे श्री श्रीवंशे सा० अदा जा० धर्मिणि पुत्र सा०
वस्ता सा० तेजा सा० बीमा सा० तेजा जार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थ श्री शान्ति-
नाथ विंवं श्री अंचल गह्वेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं
श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन ॥ श्रीः ॥

[120]

सं० १६६७ व० उ० झा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० जूपतिना
श्री विमलनाथ विंवं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तपा गह्वेंद्र ज० श्री
विजयसन सूरिजिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[121]

सं० १५११ वर्षे घ्रापाद बदि ९ रागा उकेश ज्ञातीय सा० जौसिंग जा० चन्नी पुत्रेण

(२९)

सा० बीदाकेन जा० नवी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खर-
तर गङ्गे श्री जिनप्रद सूरिजिः ॥ श्री कुंजण् वास्तव्य ।

[122]

सं० १५१६ कार्तिक वदि ३ रबौ श्री उएस बंशे लोढा गोत्रे सा० ठाजू जा० धीमिणि
पु० सा० गजसी जा० चूराइ पु० सा० धना जा० धर्मादे पु० सा० समधरेण जा० सूहवदे
सहितेन वृद्ध जातृ नरपति संसारचंद्र पुण्यार्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र
पद्मीय गङ्गे श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

[123]

सम्बत १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ श्री उएस बंशे । स० घड़ीया जार्या कपूरी
पुत्र स० गोवल जा० लखमादे पुत्र खेताकेन जातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगङ्गा-
धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरिणामुपदेशेन श्री चंद्रप्रज स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
सङ्गेन ॥ कछदेशे धमडका ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६३४ वर्षे फा० श्रु० - शः पत्तने सं० माङ्गणा समस्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस
नाथ विं० का० प्र० श्री वृहत्तपा गङ्गाधिराज श्री हीरबिजय सूरिजिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

[125]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि १ रबौ श्री श्रीमाल श्रेष्ठि श्रवण जा० काठं सु० पितृ वीरा
मातृ नाणादे श्रेयोर्थ सुत माहाकेन श्री नेमिनाथ विंवं कारितं श्री - पू - ण - रत्नसूरि पट्टे
श्री साधुसुन्दर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितो विधिना श्री सङ्गेना ग्रामेण वास्तव्यः ।

(३०)

[126]

सम्बत १५५९ वर्षे माघ वदि १२ बुधे प्रा० सा० गेला जा० चाडू सुत सा० राजा बना
तपा हरपाल जा० जीवणी सु० हासा वसुपालादि कुटुम्ब सहितेन कारारितं श्री कुन्थुनाथ
विंवं प्रतिष्ठितं सूरिजिः सीणोत नगरि गोत्र लीवां ।

[127]

सं० १५५९ वर्षे माघ सु० ५ श्री श्रीमाल ज्ञातीय दो० शिवा जा० सिगियादे शृङ्गारदे
सुत दो० धनसिंहेन जा० जांविहा सा० कुञ्जरि जा० देवसी धीरादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसं
श्री शान्ति विंवं कारितं श्री सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥

[128]

सं० १५६२ वर्षे वै० सु० १० रवौ श्री तातहरु गोत्रे स० जेठू जार्या जिपूहो पुत्र० ३
सा० आडू सा० बुडू सा० ठाहड़ तन्मध्यात् सा० ठाहरु जार्याया मेयाही नाम्न्या स्वश्रेयसे
स्वपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री उपकेश गह्वे ककुदाचार्य सन्ताने श्री देवगुप्त
सूरिजिः ॥

माधोलालजी डुगड़ का घरदेरासर — बड़तला ।

[129]

उं सं० १५१५ वर्षे आषाढ वदि २ श्री उकेश वंशे वरडा गोत्रे सा० हरिपाल सुत जा०
आसा साधू तत्पुत्र मं मरुलिक सुश्रावकेण जार्या सं० रोहिणि पुत्र स० साजण प्रमुख सप-
रिवार सहितेन निज श्रेयसे श्री बिमलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गह्वे श्री
जिनराज सूरि पदे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ।

माधोलाल बाबुका घरदेरासर — मूर्गीहाटा ।

[130]

सं० १६९४ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ रेवती नक्षत्र श्री छीप बंदिर वास्तव्य श्री उकेश

(११)

ज्ञातीय बृद्ध शास्त्रार्थ सा० श्री करण चार्थी श्री सिरा आदि सुत सा० सोणसी चार्थी श्री
संपुराई पुत्र रत्न सा० शबराज नाम्ना श्री आदिनाथ विं वं कारितं सप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं
प्रतिष्ठितं तथा गच्छे ज० श्री विजयदेव सूरिजिः ॥

जीवनदासजी का घरदेरासर — हरिसनरोड ।

[131]

सं १४७५ वर्षे जे० व० ११ रवो श्रे० धरारी चार्थी मच्छ सुत सा० उ० बराकेन स्वजिनी
श्रेयोथं श्री पार्श्वनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मत्तपागछमंडन श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ।

[132]

सं १५७७ व० वैशाख सु० १३ दिने श्री श्रीमाखी श्रे० बहजा जा० बहजछदे पु० सा०
करणसी जा० जीवादे काना सहितेन श्री शांतिनाथ विं वं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री मुनि
चन्द्र सूरिजिः बरजा वा० ॥

[133]

सं १६०४ वर्षे वैशाख वदि ७ सोमे श्री उंसवाख ज्ञातीय सा० देवदास चार्थी वा० देव
सदे तत्पुत्र सा० श्री रतनपाख जा० वा० रतनादे सपत्ने सा० जावड़ जा० वा० जासखदे तस
पुत्री वा० जीवण श्री धरमनाथ श्रा० — जिदास परिवार वृत्तेः ।

४० न० ईण्डियन मिरर स्ट्रीट — धरमतखा ।

श्री रत्नप्रभ सूरि प्रतिष्ठित मारवाड़ के प्रसिद्ध उपकेश (ओसियां) नगर की श्री महावीर स्वामीके मन्दिरके
पार्श्वमें धर्मशाळाकी नींव खानेमें मिली भई श्री पार्श्वनाथ जी के मूर्तिके परकरके पश्चातका देख ।

[134]

उं संबत १०११ चैत्र सुदि ६ श्री ककाचार्य्य शिष्य देवदत्त गुरुणा उपकेशीय चेत्य पृष्टे
अखयुज् चैत्र पष्ठयां शांति प्रतिमा स्थापनीया गंधोदकान् दिवासिका जासुख प्रतिमा इति ।

तीर्थ श्री चंपापुरी ।

यह प्राचीन जैनतीर्थ ई. आई. रेलवेके छुप खेनके जागलपुरके पास नाथनगर छेसन से मिला हुवा है । यहां चंपापुरी—चंपानगर—चंपा—हालमे जिस्को चम्पनाछाजी कहते है १३ मां तीर्थङ्कर श्री वासुपुज्य स्वामीके पञ्चकल्याणक जये हैं । यहां श्रवताम्बरी विनाम्बरी दोनो सम्प्रदायके जुदे ३ मन्दिर वर्तमान हैं । राजएहके श्रेणिक राजाका बेटा कौणिक जिस्को अजातशत्रु वा अशोकचंद्र जी कहते हैं राजएहसे अपनी राजधानी उठाकर यहां चंपामें लायाथा । सुजद्रा सतीजी इसी नगरकी रहनेवाली थी । तीर्थङ्कर महावीर स्वामीने यहां ३ चौमासे कियेथे और उनके आनन्दादि मुख्य श्रावकोंमें कामदेव श्रावक यहांका रहनेवाला था और जैनागमके प्रसिद्ध दश बैकालिक सूत्रजी भी शय्यंजव सूरी महाराजने इसी चंपापुरीमें रचा था । वसुपूज्य राजा जया रानीके पुत्र श्री वासुपूज्यस्वामीका चवन जन्म फाट्गुण वदि १४, दिक्षा—फाट्गुण सुदि १५, केवल ज्ञान—माघ सुदि ३ और मोक्ष—आषाढ़ सुदि १४ यह पांच कल्याणक इसी नगरमें जयथे इस कारण यह पवित्र क्षेत्र है ।

पाषाणोंके बिन और चरणोंपर ।

[135]

सं १६६० । श्री धर्मनाथ बिन का० सा० हीरानंदन ० । प्र० श्री जिनचंद्र सुरिजिः ॥

[136]

सं १०१० बयें बे० सु० ११ — — — श्री तपा गह्वे श्री वीरविजय सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥
श्री संहन ।

• यह मुसिदाबाद के प्रसिद्ध जगत्सठके पबंज साह हारानन्दजी है, असा सम्भन है ।

(१३)

[137]

संवत् १७५६ वर्षे बेशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे । तृतीयायां । चंपापूरी तीर्थी
धिराज । श्री देवाधिदेव श्री वासुपूज्य जिन विंवं समस्त श्री सत्तेन कारितं । कोटिक गण
चंद्र कुलासकार । श्री मत् श्री सर्व सुरिजिः प्रतिष्ठितं ।

[138]

संवत् १७५६ बेशाख मास शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तियो श्री अजितनाथ स्वामि विंवं
प्रतिष्ठितं । श्री जिनचंद्र सुरिजिः बृहत् खरतर गच्छे कारितं मकसुदावाद वास्तव्य --- ।

[139]

सं १७५६ बेशाख मासे शुक्ल पक्षे तियो ३ ॥ बुधवासरे । श्री चंद्रप्रज जिन विंवं प्रति-
ष्ठितं ज० । श्री जिनचंद्र सुरिजिः । बृहत् खरतर गच्छे कारितं च । बीकानेर वास्तव्य कोठारी
अनोपचंद तत्पुत्र जेठमखेन श्रेयोर्थं ।

[140]

सं १७५६ बेशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे । तृतीया तिथौ । श्री महावीर स्वामि विंवं
प्रतिष्ठितं । ज० । श्री जिनचंद्र सुरिजिः । बृहत् खरतर गच्छे कारितं समस्त श्री सत्तेन श्रेयोर्थं ।

[141]

संवत् १७५६ बेशाख मासे शुक्ल प० ३ दिने । श्री शान्तिनाथ जिन विंवं प्रतिष्ठितं । खर
तर गच्छाधिराज ज० । श्री जिनसाज सुरि पहासकार । ज० श्री जिनचंद्र सुरिजिः कारितं ।
--- समस्त श्री सत्तेन श्रेयोर्थं ॥

[142]

सं १७५६ बेशाख मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरे ३ तियो श्री वासुपूज्य स्वामि विंवं प्रतिष्ठितं

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोखेडा गोत्रे --
-- आधिक्या कारि ॥

(१ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । विमलनाथ -- -- अन्नयराजेन श्रेयोपं ।)

[143]

॥ सं । १७५६ फाल्गुण कृष्ण प्रतिपत्तयो श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सर्व
सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संबत । १७५६ वैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाण्डुके ।
प्रतिष्ठितं जः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयोपं ।

[145]

संबत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ मायुर गढे पुस्कर गढे छोहा-
चार्यान्नाय जहारक श्री जगत्कीर्ति सदान्नाय अमोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर
वास्तव्य सा० क श्री हीरासास पुत्र रूपजदास पुत्र सब्रूसास -- -- अगवसास प्रजा सा
-- श्री पद्मप्रज -- -- प्रतिष्ठा कारिता ।

[146]

सं १७०० आषाढ शित ए गुरो श्री संजवनाथ बिनं प्रतिष्ठितं बृहत् -- -- सूरिजिः
कारितं च झुगड़ सरूपचंद ब्राह्म करमचंद हुसासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयोपं ।

[147]

संबत १७०९ वर्षे मिः फाल्गुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ बिनं कारितं मकसुदावाद
वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च ज । श्री जिनहर्ष सूरि पहासहार ज । श्री जिन
सोचाम्य सूरिजिः बृहत् खरतर गढे ।

Footprints, Champapuri Temple, dated S. 1856 (1799 A. D.)



(३५)

[148]

सं १९२० मि । फा० कृष्ण २ बुध -- दूगड़ प्रताप -- --

[149]

॥ संबत १९२५ मिति जेष्ठ शुक्ल द्वितीया तिथौ रबीवारे दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तन्नार्या महताब कुंवर तत्पुत्र राय खठमीपत्तसिंघ बहादुर तत् खघुज्राता राय धनपत्तसिंघ बहादुर तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करणार्थं । जं । यु० ज० श्री जिनहंस सूरिजी विजेराज ॥ उ० श्री आणन्दवह्वज गणि तत् शिष्य उ० श्री सदासाज गणि प्रतिष्ठिता ॥ पूज्याचार्य श्री रत्नचन्द सूरि कुंपक गछे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवपदजी श्री चंपा पुरीजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री वासुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं० १९२५ मिः फादगुन कृष्ण ५ तिथौ । दूगड़ श्री प्रतापसिंघजी तत्पुत्र राय खठमीपत्तसिंघ बहादुर तत्रात्र श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारापितं जं० । यु० । प्र० । ज० । श्री जिनहंस सूरिजी विजेराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द गणि प्रतिष्ठितं ॥ शुभं भूयात् ।

[151]

धातुयोंके मूर्तिपर ।

सं १५०९ वर्षे ज्येष्ठ सु० -- रवौ रंगू जा० रमाई -- -- हेमा हाण सापा पु० साइस जा० खदमीरूपिणि पुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ बिंवं का० प्र० श्री संदेर गछे श्री शांति सूरिजिः ॥ श्रीः

[152]

संबत १५२७ वर्षे माघ व० २ सोमे प्रा० सं० धारा जा० सखषू सुतेन सा० वेसा बंधुना

(१६)

स० वनाकेन जा० सीत्र प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ बिंबं का
प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ माध्यमन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३० श्री मूलसंधे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं - - - ।

[154]

सं० १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरु उकेश बंशे सिंघाडिया गोत्रे सा० चांपा जा० रा
पु० सा० जोला जा० लडिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० काखू स
काजा जा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टे का
प्र० श्री खरतर गष्टे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री पूज्य श्री जि
हर्ष सूरिजिः ॥

[155]

संवत् १५०१ वर्षे माघ वदि १० शुके श्री प्राग्वाट झा० बुद्धशाखायां व्य० सहिसा
सु० व्य० समधर जा० बड़धू सुत व्य० हेमा जार्या हिमई सुत व्य० तेजा जीवा बर्द्धमान
एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रजावक श्री आणंदसागर सूरिजिः ॥ श्री शान्तिनाथ बिंबं श्री
रस्तु श्री पतन नगरे ॥

[156]

संवत् १५०५ वर्षे आषाढ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल झातीय आश्चणी गोत्रे चोर
वेड़ीया शाखायं सं० जइता जार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा जार्या जूरी सुत ऊधरण चंद्र
पाल आत्म श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गष्टे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति
ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिजिः । - - - -

[157]

संवत् १६०३ वर्षे माघशिर सुद ३ शुके प्रा० झा - - बास्तव्य - - जा० रङ्गादे सा०

Choubisi (Metal) Champapur Temple, dated S. 1551 (1494 A.D.)



(१७)

सुरा ज्ञा० सूरमादे सा० श्री रङ्ग सदारङ्ग अमीपलादि कुटुम्ब युतेन साह स० चवीरेण श्री
सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गङ्गे श्री विशाखसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५-—
सूरिजिः ।

[158]

छींकार यंत्रपर ।

सम्बत १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंधे सरस्वति गङ्गे बख-
त्कार गणे चंपापूरी नगर शुद्धस्थाने — — —

[159]

सम्बत १६७३ वर्षे मूलसंधे ज० श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपा० श्री जयकीर्ति प्रतिष्ठितं
— ग्रामे समस्त श्री संधेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर
पाषाणके मूर्तिपर ।

[160]

सं० १७७७ माघ सुदि १३ बुधे श्योस बंशे कठारा गोत्रीय लाला जमनादास तज्ञार्या
आसकुवर तथा श्री बासुपूज्य जिन विंवं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री बृहत्
खरतर गङ्गीय श्री जिन — — — ।

पञ्चतीर्थीयों पर ।

[161]

सं० १५१९ — — — मंत्रिदक्षीण श्री काणागोत्र ठ० लामू ज्ञा० धर्मिणि पु० स०

(१८)

अचक्ष दासेन पु० उग्रसेन छद्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ विं
का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पद्ये श्री जिनहर्ष सूरिजिः ।

[162]

सम्बत १५९१ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ मिधूज गोत्रे । स० इम ज०
— — — सुश्रावकेण ज्ञा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहिष प्रमुख सहितेन श्री आदिनाथ
विं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गद्ये ॥ श्री जिनरत्न सूरिजिः ॥

झींकारके यंत्रपर ।

[163]

सम्बत १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं
श्री जिन अक्षय सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिजिः जयनगर वास्तव्य श्री माळान्वये
जरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुबचन्द तत्पुत्र रामनराय वृद्धिचन्द खुस्यालचन्द सरूपचन्द
मोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयार्थं ॥

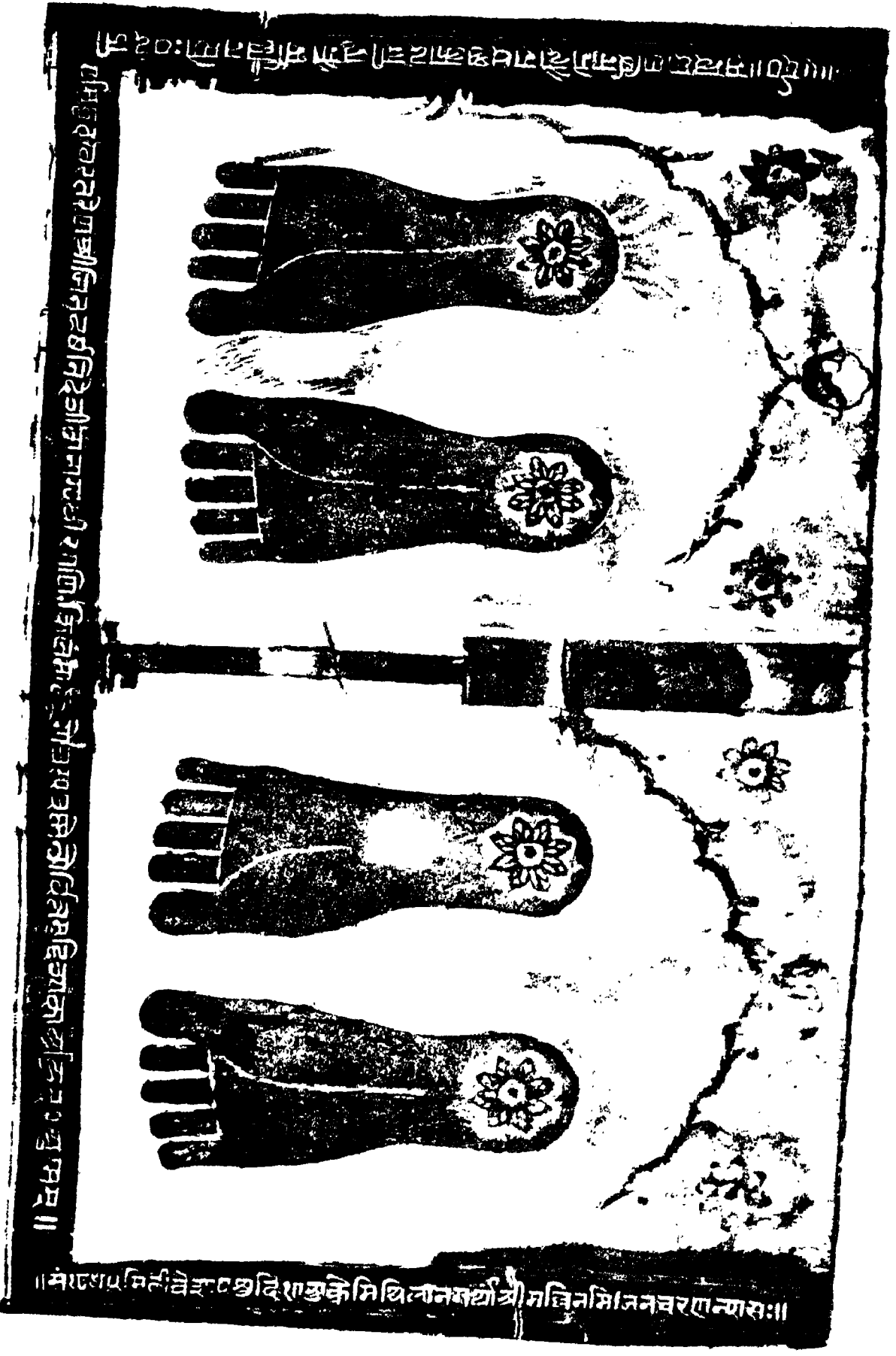
स्थान — जागलपुर ।

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

पाषाणपर ।

[164]

॥ शुभ सं० बीर गताब्दा २४०५ विक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयो-
दश्यां तिथौ — चम्पा नगर्यां श्री वासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक जूम्युपरि ओश वंशे दूगड़ गोत्रे
वृ । शा । बा । श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ वधूः महताबकुमरी स्वजव
सफस्य करणार्थं इष्टा कृतासिच कालवशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने काष्ठधर्म प्राप्तस्य
मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री छद्मीपत सिंघजी बहादुर राय श्री धनपत सिंघजी बहादुर



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ इति श्रीमहाभारतस्य अष्टादशस्कन्धस्य अष्टमोऽध्यायः ॥

मिथुनवृत्तरेणभ्रान्तवर्षनिदेशीकान्तधीराणि किंचित् सौम्यसौम्यवसिनीर्दसद्विजाकाश्रित्तनः सुगम् ॥

॥ मंगलस्य मित्तवैश्वदेवदिशसुकेमिथिलनसर्थात्री मत्तिनमिजनचरणन्यासः ॥

Footprints from Mithila, dated S. 1875 (1818 A.D.)

तेन इव्येषा धर्मशाखा जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्व सुरिजिः श्रीसंघ च संजाखसी श्री
संघ माखिक श्री रस्तु श्री कख्याण मस्तु श्री जीकटरीया इमपेश राज्ये पूष्टाब्द १७७९ ।

पाषाणके चरणों पर ।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्म (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्वाण कख्याणक पाडुका ॥
साधु ७२००० । साध्वी १२५००० । श्रावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वासु
पूज्य पञ्चकख्याणक चरण कारापितं चंपा नगरे ओशवाल वृ । शा । डूगड़ गोत्रे वा । श्री
बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तत्तार्या महतावकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री छदमी
पतसिंघ श्री धनपतसिंघ बहादुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिजि श्री संघस्य शुजंजवतु ॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्बद्धानि नागेन्दौ राध शुक्लादशी भृगो मखि नम्योः पदं जीर्णमुद्धृत
खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा जाग्यधीर गणि किल माहू गोत्रस्य प्रण्येन्दोर्विस्तमुदिस्य
काय्यकृत् २ युग्मम् ॥ सं० १७७५ मितो वैशाख सुदि १० शुके मिथिला नगदर्या • श्री मखि
जिन चरणन्यासः ॥

[167]

सं० १९३१ माघ शुक्लपक्षे १२ बुवे श्री वासुपूज्य (अजितनाथ, सन्तवनाथ) जिन

* यह चरण दरभङ्गा जैन में सीतामढी छेसनक पास मिथिला नगरी से उठाकर लाया भया है । वहाँ इस
समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थङ्कर श्री मखिनाथ स्वामीके चार कल्याणक और २१ मां श्री नामि
नाथ स्वामीके चार कल्याणक यहां भये थे । श्री मखिनाथ मिथिलाके कुंभ राजा और प्रभावती रानीकी कुमरी
थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सुदि ११ के दिन भया था । इसी नगरके विजय राजा और विमा
रानीके पुत्र श्री नामिनाथ स्वामीका जन्म भाषण वदी ८, दीक्षा आषाढ वदि ९, केवल ज्ञान मार्गशीर्ष सु० ११
के दिन भयाथा किसी २ ग्रन्थमें “ मिथिला ” के स्थानमें “ मथुरा ” नगरी भी देखनेमें आया है । सत्या-
सत्य ज्ञानीगम्य है । चरम तीर्थङ्कर महावीर भगवानका भी ६ चौमासा यहां भयाथा ।

बिंबं श्योस बंशे डूगड़ गोत्रे बाबु प्रतापसिंह पुत्र राय बहादुर धनपतसिंहेन कारापितं
मखभार पूर्णिमा श्री मद्धिजय गष्टे जहारक श्री जिन शांतिसागर सूरिजिः ॥

[168]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मद्धिजिन बिंबमिदं मकसुदावाद वास्तव्य श्योश
बंशीय छुंपक गणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागष्टीयेन ॥
श्री मिथिखापुरवरे ।

[169]

सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन बिंबमिदं मकसुदावाद वास्तव्य श्योश
बंशीय छुंपकगणोपाशक डूगड़ गोत्रीय बाबु प्रतापसिंहस्य जार्या महताव कुंवरिकस्य लघु
पुत्र राय धनपतसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्य्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागष्टीयेन
सीतामढी मिथिखायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ९६ वर्षे आषाड़ शु० ११ दिनेः रा० जण्कारी गोत्रे जं० सिवा
जा० रत्नादे पु० ज० हेमराज वेखा जा० बालहदे पु० पता — — बिंबं कारापितं पुण्यार्थं श्री
संकेर गष्टे ज० श्री साख सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सृ० तानाकेन कृतं ।



Footprints. Kākandī Temple, dated S. 1822 (1765 A. D.)

॥ अत्र नमः सर्वतः १२ वर्ष वैशाख मासे शुक्ल ९
क्षरक्षितिथौ श्री सुविदिनाथ किनवरचरणक

मलेष्
विते ॥
कं दी ॥
क ज्ञा ॥
ए क ।
श्री सं ।
ज्ञी लो
रा धि ।



ने स्था
श्री का
न गरी
क ल्या
स्थाने
ये न ॥
घोरं क
ता ॥ २

॥ अत्रिंतेदुत्तीर्थे च

काकं दीनामकोवरः

तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थंकर श्री सुबिधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुधीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । मृगशीर बदि ५ जन्म, मृगशीर बदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकंदी जी यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल खडवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौत्रिंशमां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

मूर्तियों पर ।

[171]

संवत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ महतियाण बंशे मुंकतोड़ गोत्रे । मं० महणसी पुत्र
सं० देपाल जार्या मू० माहिणि स्वकुटुंबेन ज्ञाता व० मित्र खखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र —
— श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुजशील गणित्तिः — — — ।

[172]

संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण बंशे मुंकतोड़ गोत्रे । सं० — — राजपुत्र
सं० महादेपाल ज० माहिणि पुत्र मं० सिवाई ।

चरण पर ।

[173]

ओं नमः । संवत् १८२२ वर्षे बैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री सुबिधिनाथ जिन-
वर चरण कमले शुजे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक स्थाने श्री संघेन
जीर्णोद्धारं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थोयं काकंदी नामको वरः ।

(४१)

पाषाण पर ।

[174]

मकशूदावाद अजीमगञ्ज वास्तव्य डूगड़ मोत्रे बाबु प्रतापसिंहजी तन्नार्या महताव कुंवर तत्पुत्र राय सद्मीपत तत्सुसु सहोदर राय धनपतासिंह बहादुरेण न्याय द्रव्यण व्यय बार प्रचू का जिनालय करापितः सठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरचंद्र गणि प्रतिष्ठितं । सं० १९३० मिति वैशाख वदी २ चन्द्रे - - ।

श्री गुनायाजी ।

नवादा (गया लाईन) घेसनसे १॥ मार्शल पर यह स्थान है । इसका नाम शास्त्रमें "गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थकर श्री महावीर स्वामीका १४ चौमासा प्रयाथा । स्थान मनोहर और श्री पावापुरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तासाव वा बिचमें मन्दिर है ।

धातुके मूर्तिपर ।

[175]

संबत् १५१० वर्षे फागुण षदि १२ उसवालान्वये मूधाला गोत्रे स० - मीला जा० बीरू पुत्र सा० तोड्हा जा० पर्ई नाम्न्या स्वपुण्यार्थ पद्मप्रज विवं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सूरिजिः ।

पाषाणके चरणोंपर ।

[176]

संबत १६०० वर्षे वैशाख सुदि १५ तियौ मंत्रीदल बंसे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोबर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहालो तत्पु० जार्या ठकुरेटी यु० च० श्री जिनकुसल सूरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज सूरि विचमाने उपाध्याय अज्ञय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर क्षमे स्वरतर गणे ।

Footprints, Gunashila (Gunawa) Temple, dated S. 1688 (1631 A. D.)



(४१)

[177]

संवत् १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ त्रैमे श्री गुणशिलाख्ये चैत्ये श्री डूगड़ प्रतापसिंह जीत्कानां त्रार्या महताव कुंवर तत्कुक्षितोत्पन्न कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतसिंह बहादुर नाम्ना स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफुडी करणार्थं श्री अष्टापद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्बाण साजक्या श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनजकि सूरि शाखायां उ० सदा मान गणिना प्रविष्टितं शुभम्

[178]

सं० १९३० माघ शु० ५ सरुख सधेन श्री वीर पादुका कारापित स्थापितं श्री गुणशील चैत्ये आत्महिताय ॥

पाषाण पर ।

[179]

सं० १९२४ मिति माघ कृष्ण ५ त्रैमे गुणशीले चैत्ये डूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी तत्त्रार्या महताव कुंवर तत्पुत्र चिरू राय बहादुर तत्त्रयम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साफुड्य कारापिता जीर्णोद्धारं । उ० श्री आणंद बह्मन गणि तत्तशिष्य उ० श्री सागरचंद्र गणि उपदेशत् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूयात् ।

पाषाण पर ।

[180]

— । श्री जिनेंद्र जयती । स्वस्ती श्री मह वीरजिनेंद्र सं० १४१९ वि० सं० १९२९ वर्षे वे० वद० ० बुधवारे श्री तथा गणामनाय धारक सुश्रावक दसा श्रीनाथ ज्ञातीये सा० रूपचन्द रंगीछदास देवचन्द पाटनवाला हाथ मुकाम येवला कुंवर ये वनना समर्णीय तत्त वन्धु चतुर चन्द सुत वेस चन्द बास चन्द भाग चन्द जय = ३ थे ॥ श्री गुणशील चैत्ये आ

धर्मशाखा बंधावीठे स्या देरासरमा पवासणो गोखलाओ दरवाजो जमतीनी देरी = ४ सहीत
सस्वे थारसनु काम तथा तखावनी जीत तथा रीपेर बीगरे जीनोंद्वार करावोठे श्री शुजं
भवतु सदा । सलाट चाइचंद जगजीवन मीस्त्री पाखीताणा वाछा — — ।

तीर्थ श्री पावापूरी ।

शासन नायक श्री महावीर स्वामीका यह निर्वाण कछ्याणक का स्थान जैनीयोंका
प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है । २४ मां तीर्थकर के समवसरण की रचना और उनका मोक्ष यहां
जये हैं । समवसरण के स्थानमें १ स्तंभ वर्तमान है कोई लेख नहीं है । वहांसे प्राचीन
चरण उठाकर जलमंदिर के पासमें तखावके पाड़ पर बिराजमान हुये हैं । अग्निसंस्कार की
जगह तखाव और मंदिर है । प्राचीन मंदिर १ गांवमें है और नवीन मंदिर = १ खेताम्बरी
और १ दिगम्बरी उस तखाव के पाड़में बना है और कई धर्मसाखायें है ।

समवसरणजी के प्राचीन चरणों पर ।

[181]

उं सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ श्री — — — — कनकविजय गणित्तः — — — ।
(अक्षर घस जानेके कारण पढ़ा नहीं जाता)

जलमंदिर — पावापूरीजी
श्री गोतमस्वामीजीके चरणोंपर ।

[182]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्र ५ इंदं गोतम गणधर पाडुकां कारापितं उसवाल औरकिया

(४५)

गोत्रे नानकचंद जीवनदास प्र० वृ० । ज० । श्री जिन नंदीबर्द्धन सूरी तत्शिष्य मुनि पर्यज्य
जय उपदेशात् ।

श्री सुधर्मा स्वामीजीके चरणोंपर ।

[183]

सं० १९३५ मि० आ० शुक्ल ५ इदं पाडुका श्री सुधर्मा स्वामी कारापितं श्योसवाख झातौ
धाड़ेवा गोत्रे - न सुख प्रतिष्ठितं वृ० ज० श्री जिन नंदीबर्द्धन सूरि तत्शिष्य मुनि पर्यज्य
उपदेशात् ।

बामे तर्फकी गुमटीमें १६ चरणोंपर ।

[184]

संवत् १९३१ का मिति माघ शुक्ल १० तिथौ चंद्रवारे श्री बृहत् गुजराती हुंका गच्छे
श्री पूज्याचार्य श्रीश्री १०८ श्रीश्री अक्षयराज सूरि तत्पट्टालङ्कार श्री अजयराज सूरि
चरण प्रतिष्ठितं सुश्रावक बाबू श्री प्रताप सिंघजी राय धनपत सिंघजी हूगड़ गोत्रीयेण
षोडश महासती चरण कारापितं ॥ श्री शुभ्रजूयात् ॥ पावापुरीमें - स्थापितं ॥

दाहिने तर्फकी गुमटीमें चरणपर ।

[185]

॥ संवत् १९५३ वर्षे आषाढ शुदि पञ्चमि दिने गणि दीप विजयणा पाडुका ॥

गांव मंदिर - पावापुरी ।

पंचतीर्थीपर ।

[186]

सं० १५१९ आषाढ बदि १० मंत्रिदक्षिण श्री ठसियड़ गोत्रे स० मेघराज सु० जिणदास

(४९)

जा० करगिणि पुत्रेण स० शुक्रकरण जा० पद्मिन्याः पु० छद्मीसेन हासू जनन्याः श्रेयोर्थं
श्री संजवनाथ विं वं का० श्री खरतर श्री जिनचंद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिचिः प्रति-
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय गोत्रे मौठिप्पा सा० रणमल्ल पुत्र
सा० दीपचंद जार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गळे जटारिक श्री जिनहंस सूरि गुरुभ्यो
नमः ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथ विं वं कारितं ॥

पाषाणके चरण पर ।

[188]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरो - - - रुपचंद पुत्र जसराज ज्येष्ठेण जार्या -
श्री वर्द्धमान जिनस्थेयं पाडुका कारा - - ।

[189]

॥ संवत् १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सांमशरे श्री पुण्णरक चरण कमल पाडुके
- - - ।

मध्यके चरणपर ।

[190]

॥ पं० ॥ स्वस्ति श्री जगोमंगलज्युक्तय ॥ श्री गौतमस्वामिनोबुद्धिः ॥ संवत् १६९७
वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री विहार नगर वास्तव्य श्री कृपज जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री
धरत चक्रवर्ति राजान मुख्य मंदिच्छ संतानीय महतीयाण ज्ञाती मुख्य चोपडा गोत्रीय
संघनायक मं० संग्राम । राहदिया गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री वृद्ध खरतर गच्छीय
नरमणि मण्डित जालस्थल श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिकोषित महतीयाण श्री संव कारित श्री
धीर जिन निर्वाण जूनि श्री पावापुरी समीपवर्ति वरजिगानानुधर श्री धीर जिन प्रासाद

Footprints (in the centre) Pawapuri Temple, dated S. 1698 (1641 A. D.)



श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥

चूमो धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पाण्डुके महतियाण श्री संघेन कारिते ।
प्रतिष्ठिते च श्री बृहत्स्वरतर गङ्गाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोक्षार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री
जिनसिंह सूरि पट्टादयगिर दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिजिः ॥ श्रीर्जवतु । श्री
कमल छात्रोपाध्यायाः पं० लब्धकीर्त्ति राजहंसादि शिष्य सहिताः प्रणमन्ति ।

११ गणधरोंके चरणों पर ।

[191]

१ । संवति १६९७ प्रभिते । बैशाख सुदि ५ सोमबारे । श्री बिहार नगर बास्तव्य श्री
जरत चक्रवर्त्ति महाराजात सकल मंत्रि मुख्य मंत्रिश्वर दखान्बोय नरमणि मंणित श्री जिन
चंद्र सूरि प्रबोधित महतियाण ज्ञाति मण्ण चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सपरिवारेण ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अग्निभूति ॥ २ श्री वायुभूति ॥ ३ श्री व्यक्तस्वामि ॥ ४
श्री सुधर्मा स्वामि ॥ ५ श्री मंणिकुपुत्र स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक
स्वामि ॥ ८ श्री अचलत्राता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रजास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति ० ।

[192]

। ए० ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९७ बैशाख सुदि ५ सोमबासरे । पातिसाह श्री साहि-
जां हसकल नूर मण्णलाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिराज श्री बीर
वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापुरी परिसरे श्री बीर जिन चैत्य निवेशः ॥
श्री कृष्ण जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्त्ति श्री जरत महाराज सकल मंत्रि मण्ण श्रेष्ठ मंत्रि
श्री दल संतानीय महतिश्याण ज्ञाति शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी तुलसी जार्या
निहालो पुत्र सं० संग्राम लघुजात गोवर्द्धन तेजपास चोजराज । रोहदिय गोत्रीय स० पर-

* यह बेदीके अन्दर दवा भया है इस कारण सन पदा नही गया ।

माणंद सपरिवार महधारा श्रीय विशेष धर्म कर्मोच्चम बिधायक ठ० डुछीचंद काड्रडा गोत्रीय
 म० मदन सामीदास मनोदर कुशवा सुंदरदास रोहधिया पुत्र मथुरादास नारायणदास
 गिरिधर संतोदास प्रसादी । वार्तिदिपा गो० गूजरमल्ल शूदड़मल्ल मोहनदास माणिकचंद
 बूदमल्ल जेठमल्ल । ठ० जगन नूरीचंद । दान्हरा गो० ठ० कल्याणमल्ल मलूकचंद संतोपचंद
 सयला गोत्राय ठ० सिंह कीर्तिपाख बाबूराय केसवराय सूरतिसिंघ । काड्रडा गो० दयाल
 दास नोवालदास कृपालदास मीर मुरारीदास किन्नु । काणो गोत्रीय ठ० राजपाल रामचंद
 -- महावीर -- कीर्तिसिंघ ठा० छवीचंद । जीजीयाण गो० मं० नथमल्ल नंदलाल ।
 नान्हडा गोत्रीय -- १३ -- दास सुंदरदास सागरमति कमलदास । रो० सुंदर सूरति
 मूरति सवलकृती प्रताप -- ठ० मदमल्ल जा० हरदासपुर --- ।

पाषाणके मूर्तिपर ।

[193]

॥ सिरि देवहि गणि श्वमा समणा होत्ता तेसि सिरि बीर निवाणाल नवसय अमीडे
 वरि सेहिं जिणागम रस्कगा तुछलेह कारणाउ धिंविणिणं पहछाविणं सिरि जिण महिं
 सुरीहिं ॥ सं० १९१० बर्ये मा । सु० २ ।

बेदी पर ।

[194]

सं० १९३५ मिति जेष्ठ शुक्ल ५ बुधवासरे इदं बेदिका कारापितं उसवाख इयतौ रांका
 सिठिया गोत्रे सेठजी श्री लठमणदासजी तत्पुत्र कल्लुमल्लजी तत्जातु धनसुख दासजी ।

दाहिने तर्फ दादाजी की कोठरीके चरणोंपर ।

[195]

मह सुदि १३ दिने --- सूरीणा णडुके --- ।

(४९)

[196]

संवत् १६७६ वर्षे - क - - - । प्रवर्त्त - - - : । श्री खरतर गढे श्री उपाध्याय रत्न
तिलक सूरिनां त० शिष्येन श्री लब्धिसेन गणि श्री युगप्रधान श्री जिनचंद्र शाखायां कास
पतं उपदेन - - गुजु - - पाठकस्य - - - श्री रत्नतिलक गणि प्रतिष्ठितं वा० लब्धि
सेन गणि प्रतिष्ठा कृता ॥ श्री रस्तु श्रीः ॥ १ ॥

[197]

मूल नायक - - - - राज सजासन धारकं । ० । ० गुर्जरे मह - न ति - - गोत्रे
- - ठ० धेनीदास । तुलसीदास - माणिक - - दास - - कारापितं । श्री - - - . स्यां
पाडुका श्री - - स्य गुरु - - श्री जिन लब्धिसेन सूरि कृता ॥ यस्यां पाडुके इहत् श्री खर
तर गणा - यं० जुग - - श्री युगप्रधान - - श्री जिनचंद्र सूरि शाखायां श्री उपाध्याय -
श्री रत्नतिलक - - तत्पट्टालङ्कार श्री वाचनाचार्य - लब्धिसेन गणि आदेशेन श्री दलचंद्र
- - याणा वासिडिवा गोत्रे । नैरवन - - ठा० गुज्जरमह्वेन - - श्री रत्नतिलक वा० - - - - त
ठा० - करेन प्रतिष्ठा पुनमीया - - ।

[198]

॥ संवत् १७०२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री जिन कुशल सूरिणा पाडुके ॥
महतीयाण चोपडा गोत्रे । सङ्गवी तुलसी दास चार्या कल्याणी निहालो पुत्र सङ्गवी संग्राम
सिंह - - - गणिनिः प्रतिष्ठिता श्री पावापूरी समस्त श्री सङ्ग सहिता श्री रस्तु ।

[199]

॥ सं० । १९१० वर्षे शाके १७७५ माघ शुक्ल २ श्री जिनदत्त सूरि सद्गुरुणां श्री जिन
कुशल सूरिणां पादन्यासो प्रतिष्ठितं० च० श्री जिन महेंद्र सूरिनिः । का । डा । मो । श्री
सिवप्रसाद पुत्र शीतल प्रसादेन श्रेयोर्थ मानंदपुरे ॥

दाहिने श्री स्थूलचन्द्र कोठरी के चरणों पर ।

[200]

श्री ॥ नमनिधि गज गोत्रा सन्मितायां समायां (१७९७) नयन रस सरत्वाञ्चन्द्र
शुक्रेषु शाके (१७६२) ॥ सित पटधर पाटो फाल्गुने शुक्ल पक्षे जुजगपति त्रिथौ (५)
सप्तमार्गवे वासरेहैं ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म बृद्धर्य्य श्री स्थूलचन्द्राचार्य्य पादपद्म प्रतिष्ठा
बृहत् खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रजाकर श्री जिन महेंद्र सूरिणा कारिता उ० ।
श्री हीरधर्म गणि विनय विद्वत्कुलकञ्ज प्रजाकर श्री कुशखचंद्र गण्युपदेशतः । काशीस्थ
श्री संघैः ॥ बदधिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुजिसाखाजिधेन ॥

[201]

(१) ॥ सं० श्री ५ श्री जिन विमल सूरि पाडुका । (२) ॥ श्री जिन ललित सरि
पाडुका ।

[202]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्ल पक्षे पूर्णिमा त्रिथौ १५ गुरुवासरे० बृहत् खरतर
गणेशे० यु० ज० श्री जिनरंग — — — ।

[203]

सं० १७९७ वर्षे कार्तिक शुक्ल पक्षे राका त्रिथौ १५ गुरु वासरे बृहत् खरतर गणेशे यु०
ज० श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य बा० श्री सुमतिनंदन
गणिनां पादपद्मे स्थाप्यते० बा० ज्वनचंद्रेण । बा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले जवतः
श्री० श्री जिनचन्द्र सूरिणां चरण कमले इमे जवतः ।

श्री चंदनवाखा कोठरी के चरणों पर ।

[204]

॥ सं० १७२० प्र० श्री सुजाण विजयाजी पाडुका ।

(५१)

[205]

सं० १९०० मा वर्षे सिते १२ ॥ वृहत् खरतर गढे यु० ज० श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां
शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्ति विजयायां -- चरण सरस्ती रुहे
प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौजाग्य विजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[206]

सम्बत १८४८ शाके १९१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथौ भृगु वासरे श्री मत् खरतर
गढे जहारक श्री जिनरङ्ग सूरि शाखायां साध्वीमहचरा मति विजयाकस्य पादुका शिष्यनी
रूपविजया पावापुरी मध्ये प्रतिष्ठापितेः

[207]

॥ श्री संबत १९३१ का मिति माघ शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र वारे श्री मद्दृहल्लोका
गुर्जरधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००० श्रीश्री अक्षयराज सूरिजी चरण कमलौ
स्थापितौ श्री अजयराज सूरिजिः प्रतिष्ठितं च श्री शुभ्रंजवतु =

[208]

॥ ॐ नमः ॥ संबत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे षष्ठी तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर
जिनवर चरण कमले शुभ्रे स्थापिते । हुगली वास्तव्य उंस बंशे गांधि गोत्रे बुलाकी दास
तत्पुत्र साह माणिक चंदेन श्री द्वात्रीयकुंठ नगर जन्मस्थाने जन्मकल्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं
करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ यावन्नजस्तले सूर्य चंद्रमसौ स्थितौ बरौ तावन्नंदतु तीर्थोयं
स ----- ।

[209]

॥ ॐ नमः ॥ संबत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री द्वात्रीकुंठे
संघाटे साह माणिकचंदेन जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

(५२)

[210]

सं १७३७ माघ शु० ५ सकल संवेन श्री वीर पाडुका कारापितं स्थापितं श्री पावापुर्या ।
आत्म हितायः श्री रस्तुः ॥

बिहार ।

बिहार वा सूवेबिहार का प्राचीन नाम “तुंगिया नगरी” था । निकट में विशाला नगरी
भी थी । जैन सहर था, पश्चात् बौद्ध लोगों के समयसे “बिहार” नाम प्रसिद्ध जया ।

धातुओं के मूर्ति पर ।
मथियान महद्वा ।

[211]

सं० १४३७ श्री -- तिनाथ प्रति० सा० पद्मसिंहेन समस्त परिवार युतेन निज पितृ
सा देव्हा पुण्यार्थ का० प्र० श्री जिनराज सूरि ।

[212]

प० ॥ सं० १४६९ वर्षे माघ सुदि ६ दिने उकेश बंशे सा० सामंत पुत्रेण सा० लक्ष्मणेन
पुत्र रतना नरसिंह नयणा जा० -- दादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गढे श्री जिन बर्द्धन सूरिजिः ॥

[213]

सं० १५०६ माघ सुदि ५ -- खोढा गोत्र -- -- पुत्र जाजाकेन जा० जाऊ श्री पु० --
माळा -- जा० हेम -- -- नाथू जा० कुमिमदे स्वश्रे० धर्मनाथः का० प्र० चैत्र गढे श्री मुनि
तिषक सूरि ।

(५१)

[214]

ए ।सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने श्री लकेश बंशे छोढ़ा गोत्रे सा० जोळा संताने सा० बीरा जार्या जावळदे पुत्र सा० जाडाकेन पुत्र नीसळ बीसळ दूदा माका सहितेन श्री वासुपूज्य बिंवं कारितं प्रति० श्री खरतर गह्याधीश श्री जिनराज सूरि पहाळझार श्री जिन चंद्र सूरि युगप्रधान गुरुराजौ ।

[215]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे उ० नगराज सुत उ० लघूजार्या धामिणि पु० सं० श्री अयलदासेन पुत्र उ० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन बीरसेन देपाल पहिराजादि परिवार बृतेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गह्ये श्री जिनचंद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[216]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ बदि १ श्री मंत्रिदलीय शाखायां वायडा गोत्रे स० पौमराज चा० सुरदेवी पुत्र उ० दासू जा० कपूरदे पु० उ० सदय वध (?) प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री शितलनाथ बिंवं कारितं प्र० श्री खरतर गह्ये श्री जिनसुंदर सूरि पदे श्री जिनहर्ष सूरिजिः ॥ श्री ॥

[217]

सं० १५१९ वर्षे आषाढ बदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे उ० श्री नगराज सुत उ० श्री लघूजार्या धर्मिणि पुत्र स० सिंगारसी जा० कुंवरदे पु० स० राजमल्ल सुश्रावकेण पुत्रादि परिवार सहितेन श्री आदिनाथ मूल बिंवश्चतुर्बिंशति पदे कारितः प्रतिष्ठितः खरतर श्री जिन चंद्र सूरि पदे श्री जिनचंद्र सूरि युगप्र० बरागामेः ॥ ७ ॥

[218]

सं० १५२० वर्षे माघ सुदि दशम्यां बुधे श्रीमाल ज्ञातीय स० ठाजु जार्या धरणी आल

श्रेयोर्थं श्री नेमिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनजड सूरि पदे श्री जिन
चंद सूरिराजैः ॥ श्री मंरुपे दूर्गे महता गोत्रे ॥

श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मंदिर ।

[219]

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ उपके० सूर गोत्रे सा० सिवराज जा० माकु पु०
बासा सहसा जातु बठराज पुण्यार्थं श्री शितलनाथ विंशं का० प्रति० श्री उपकेश गढे ककु-
दाचार्य संताने श्री कक सूरिजिः ॥ ६९ ॥

[220]

सं० १५४० वर्षे वैशाख मासे उकेश बंशे दोसी गोत्रे सा० कलू पुत्र सा० लषा जार्या
रुपाई पुत्र० लषमी धरेण जार्या लीलादे सहितेन श्री अजितनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं
खरतर गढे श्री जिनसमुद्र सूरिजिः श्रेयोस्तु ॥ १ ॥

चतुष्कोण पट्टक पर ।

[221]

सं० १६३० समये फागुण सुदी ५ जौमे श्री मूखसंघ सरस्वति गढे बलात्कार गणे
श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये ज० श्री धर्मकीर्त्ति देव तत्पट्टे ज० श्री शीखजूषण तत्पट्टे ज० श्री ज्ञान
जूषण अथ ज० सुमित्रनी तत्पट्टे ज० श्री सुमतिकीर्त्ति ततशिष्य । मंरुजाचार्य श्री मेरुकीर्त्ति
गुरुपदे - जू ॥ मगध देसे । खुदिमपुर बास्तव्य जेसवाखान्वये कष्टहार गोत्रे सा० बीरम
तज्ञार्या वंयंत्रयोः पुत्र सहसी तज्ञार्या अजेसिरि त्रयो पुत्रौ प्रथम किनू तज्ञार्या परिमल्ल
तत्पुत्र जिनदास तज्ञार्या मोना त्रयो पुत्र जगदीस द्वितिय संघ पति श्री रामदास जार्या
रुकमिनि मेतेषां मध्ये संघपति रामदास नित्यं प्रणमंति । शुचं जवतु ॥

साखवाम का मंदिर ।

[222]

सं० १५३९ ब० वै० शु० ३ सोमे प्रा० वृ० मं माईया जा० बरजू पु० सीधर जा० मांजू
पुत्र गोरा जा० रुकमिणि पु० बर्द्धमान मातृ पितृ श्रे० श्री कुंथुनाथ बि० कारापितं प्र० तपा०
श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

[223]

सं० १६४३ फा० सि० ११ श्री हीर विजय शिष्य श्री विजयसेन सूरिजिः प्र० आदिः
नाथ -- ।

[224]

सं० १८७७ चैत्र सु० १५ -- दिवं श्री जितहर्ष सूरिणा -- महतावचदं ज्ञार्या
श्राविका -- ज्ञया गुलावचंद पुत्र युतया -- ।

[225]

सं० १८९६ ज्येष्ठ वदि ८ श्योसवाल ज्ञाती जम्मड गोत्रीय बाबु प्रेमचंद तत्पुत्र विहारी
लाखेन श्री सिद्धचक्र पटं कारापितं प्रतिष्ठितं विष्णुदय गणिना ।

पाषाण पर ।

[226]

संवत् १५१४ जेष्ठ वदि ४ श्री उपकेश ज्ञातौ साह श्री शक्तिसिंघ जा० सहजस्रदे --
साह सोमा ज्ञार्या आपु नाम्न्या आत्म श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री उपकेश गष्टे श्री कक सूरिजिः ॥ श्री अजितनाथ प्रणमति बाई आपु नाम्न्या ॥

५१)

[227]

संवत् १६७४ वर्षे -- माघ सुदि ९ दिने जेम वासरे श्रवण नक्षत्रे ---- गोत्रे
ठाकुर ---- ठाकुर जाडेन तत्पुत्र ठाकुर डुखीचंद श्री जिन कुशल सूरिणं पाडुके कारितं ।

[228]

सं० १६९४ शाके १५९९ ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र बदि १३ शुके शुजे मुहुत्ते दक्षिण
देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पट्टे ज० श्री मूल शृंगार हा ---- बघेरवाल ज्ञातो स०
श्री तोला जा० सं ---- पुत्र स० श्री कृष्ण ॥ ---- देव जार्या सोहि ---- श्रेयोर्थ
---- श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[229]

सं० १७३० माघ शुदि ५ -- श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि -- ।

[230]

सं० १७३० माघ शु० ५ सकल संघेन शान्तिनाथ पाडु० कारापिता --

[231]

प्रणमहिये गूणवीस सय वरसे बइसाह -- सुद्ध -- -- बह पियामह सिरि जिन
कुशल सुरि पाय छवणा कारिया सिरिमाख वंसे वदलीया गुत्ते साह कमला बइणा बिसाला
सुपइ छिय सयल सूरिहिं ॥ श्री ॥ :

[232]

श्री दादाजी श्री कुशल सुरजी सहायः

सं० १७४६ मीती बेसाल सुदो १३ ---- ।

(५०)

[233]

सं० । १९३९ फाल्गुन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सूरि पादन्यास । जं० । यु । प्र
ज । श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दासचंद गणितः प्रतिष्ठितं ॥ सेठ गोत्रीय
ताराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर बरो

[234]

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संबत् १९५० सि० फाल्गुण सुदि ३ श्री मूलसंघे सरस्वति गण्डे बडा-
त्कार गण कुंद कुंदाचार्य आम्राय सकल कीर्त्ति जहारक तत्पट्टे । जहारक कनक कीर्त्ति
उपदेशात् शा० कुबेरचंद हरीचंद तन्नार्या केशरबाई खुरदेवासे प्रति०

[235]

संबत् १९५५ पोस सुद १५ गुरु ॥ श्री लुंपक गण्डे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठी-
तम् ॥ बाबू लक्ष्मीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पाडुकेन्योः
॥ श्री स्थूलजद्र सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरिः ॥

राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है । १० मां तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ठ बदि-७ जन्म फाल्गुन सुदि-१२ दीक्षा फाल्गुन बदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पबित्र है । ११ मां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समय में जरासंधकी जी यही राजधानी थी । १४ मां तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । गौतम बुद्ध की जी यही लीला-भूमि थी । प्रसेन जित उनके पुत्र श्रेणिक, उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी जी १४ चौमासे यहां किये । जंबुस्वामी, धन्ना, शालिजद्रजी आदि बड़े २ लोग यहांके रहने वाले थे । यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड बहुतसे है और स्थान देखने योग्य है। पांच पहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुत्रगिरि (२) रत्नगिरि (३) उदय गिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैज्रगिरि। पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। बहुत से चरण वा मूर्ति इधरसे उधर बिराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ मिला दिया गया है।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति । ❀

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुत्राचलामरगिरि स्थेयः स्थिति स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाजिराम जुजगाधीशस्फटासंस्थितिः । पादासीन दिवस्पतिः शुच फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु बांछित फ

(२) छं श्री पार्श्वकटपट्टमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविजोर्जन्म व्रतं केवलं साम्राजां जय राम लक्षण जरासंधादि जूमीजुजां । जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि श्री शाखिनां संभवः प्रापुः श्रेणिक नृधवादि

*“ जैन तीर्थ गाईड ” के तवारिख सुने बिहार में उसके ग्रंथकर्ता लिखते है कि मर्यादान महल्लाके “ मंदिर में एक शिला लेख जो अलग रखा हुआ है — — — सबत तिथि वगेरा की जगह टूटी हुई है पंक्ति (१६) हर्फ उमदा मगर घास जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसीने तोड़ दिया है वच्च शाखा बंगरह नाम बेशक मौजूद है ” यह पढ़ कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई । पता लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया । किसी २ जगह टूट गया है संवत बंगरह साफ है और दुसरा टुकड़ा मालूम भया । पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहांके लेख बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है । यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अप्रकाशित था । इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिसे बहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा । यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है और उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्ताका भी नाम विद्यमान है शीडिन्य और पद लालित्य भी पुरा है ।

(३) ज्विनो बीराञ्च जैनीं रमां ॥ २ यत्राजय कुमार श्री शालिधन्यादि माधनाः ।
सर्वार्थ सिद्धि संज्ञोग जुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुञ्जाजिधोवनि धरो बैजार
नामापिच श्री जैनेन्द्र विहार जूषण धरो पूर्वाप

(४) राशास्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लज्जं बुवाते नृणां तीर्थं राज-
गृहाजिधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण
महत्तम तीर्थे । श्री राजगृहम

(५) हातीर्थे । गर्जेन्द्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूला पीठे सकल
महीपाख चक्रचूला माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे । सुरत्राण श्री साहि
पेरोजे महीमनुशासति । तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मल्लिक बयोनाम मण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास
दुरदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं
बद्धः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुतारा सोयं बिजाति जुवि मंत्रि दक्षीय बंशः ॥ ५ बंशेमुत्र पवित्र धीः
सहज पाखाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सद्रुणमणी शृंगारितांगः पुरा । तत्सूनुस्तु
जनस्तुत स्तिहुण पाखेति प्रतीतो जव

(८) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहाजिधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर
मंरुनाख्यः सद्धर्म कर्म बिधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणास्त्रिधाम जज्ञे
गृहेस्यः गृहिणी धिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समञ्चवन् जुवने बिचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः ।
तत्रादिमाख्य इमे सहदेव कामदेवाजिधान महाराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जयति
संप्रति बहुराजः श्री मा

(१०) नू सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । याच्यां जकाधिकतया घनपंक पूर्व देशेपि धर्म-
रथ धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ९ प्रथम मनव माया बहुराजस्य जाया समजनि रत नीति स्फीति
सन्नीति रीतिः । प्रचवति पहराजः सद्गु

(११) ण श्री समाजः सुत इत इह मुख्यस्तत्परश्रोढराख्यः ॥ १० द्वितीया च प्रिया
जाति बीधी रिति विधि प्रिया । धनसिंहादयश्चास्याः सुता बहु रमाश्रिताः ॥ ११ अजनि च
दक्षिताद्या देवराजस्य राजी गुण म

(१२) णि मयतारा पार शृंगार सारा । स्मजवति तनुजातो धमसिंहोत्र धुर्य स्तदनुच
गुणराजः सत्कला केलिवर्यः ॥ १२ अपरमथ कसत्रं पद्मिनी तस्य गेहे तत उरु गुणजातः
षीमराजोंग जातः । प्रथम उदित पद्मः पद्म

(१३) सिंहो द्वितीयस्तदपर घनसिंहः पुत्रिका चाञ्चरीति ॥ १३ इतश्च ॥ श्रीबर्द्धमान
जिनशासन मूलकंदः पुण्यात्मनां समुपदर्शित मुक्तिचंदः । सिद्धांत सूत्र रचको गणभृत
सुधर्मनामाजनि प्रथम कोत्रयुग

(१४) प्रधानः ॥ १४ तस्यान्वये समजवद्दशपूर्वि वज्र स्वामी मनोजव महीधर जेद वज्रः
यस्मात्परं प्रवचने प्रससार वज्र साखा सुपात्र सुमनः सफल प्रशाखा ॥ १५ तस्यामहर्निश
मतीव विकाशवत्यां चांद्रेकु

(१५) खे विमल सर्वकला विद्यासः । उद्योतनो गुरुरजाष्टिबुधो यदीये पट्टे जनिष्ट सु
मुनि र्गणि बर्द्धमानः ॥ १६ तदनु ज्वनाश्रांत ख्यातावदात गुणोत्तरः सुचरण रमाञ्चूरिः
सरिर्वञ्चूव जिनेश्वरः । खरतर इ

(१६) तिख्यातिं यस्मादवाप गणोप्ययं परिमलकर्ला श्रीषंद - - - दुगणो वनौ ॥ १७
ततः श्रीजिन चंद्राख्यी बञ्चूव मुनि पुंगवः । संवेग रंगशाखां यश्चकारच वजारच ॥ १८
स्तुत्वा मंत्र पदाक्षरै र्वनितः श्रीपा

दुसरा पत्थर ।

(१७) श्र्व चिंतामणिं - - - - ताकारिणं । स्थामेनंत सुखोदयं विवरणं चक्रे
नवान्यायके । - - ताऽजय देव सुरिगुरव स्तेतः परं जङ्गिरे ॥ १९ - - -

(१८) - - - (जिनवद्वज्र) - - शांगनोवद्वज्रो - - - प्रियः यदीय गुण
गौरवं श्रुतिपुटेन सौधोपमं निपीये शिरसो धुनापि कुरुते नकस्तां डवं ॥ २० तत्पट्टे जिन-
दत्तसूरिरजवद्योगीन्द्र चूडामणि मिथ्याध्वां

(१९) त निरुद्ध दर्शन — — — श्रावक यान्य देशि सुगुरुः क्षेत्रेत्र सर्वोत्तमः सेव्यः
पुण्यवतां सतां सुचरण ज्ञान श्रिया सत्तमः ॥ ११ ततः परं श्रीजिनचंद्र सुरिर्वचुव निःसंग
गुणास्त चूरिः ।

(२०) चिंतामणि ज्ञास्रतखे यदीये ध्युवास वासादिव जाग्य लक्ष्म्याः ॥ २२ पक्षे
लक्ष्य गतेसु शासनमपि प्रेत्यापि दुःसाधनं दृष्टांत स्थिति बंध बंधुरमपि प्रक्षीण दृष्टांतकं ।
वादेर्वादिगत प्रमाणमपि यै वाक्यं ।

(२१) प्रमाण स्थितं ते वागीश्वर पुंगवा जिनपति प्रख्या वचूवु सूतः ॥ २३ अथ जिनेश्वर
सूरि यतीश्वरा दिनकरा इव गोजर जास्वराः । च्रुवि विवोधित सत्कमला करा समुदित
वियति स्थिति सुन्दराः ॥ २४ जिन प्र

(२२) बोधा हत मोह योधा जने विरेजुर्जनित प्रवोधाः । ततः पदे पुण्य पदे दसीये मण्यं
ह चर्या यति धर्म धुर्याः ॥ २५ निरुंधानो गोत्रिः प्रकृति जरुधीनां बिलसितं त्रमत्रय्य
क्लोतो रस दश कला केलि

(२३) विकलः । उदितस्तत्पट्टे प्रतिहत तमः कुग्रह मति नवीनो सौ चंद्रो जगति
जिन चंद्रो यतिपतिः ॥ २६ प्राकट्यं पंचमारे दधति विधि पथ श्रीविलास प्रकारे धर्मा धारे
सुसारे विपुल गिरिवरे मानतुंगे विहा

(२४) रे कृत्वा संस्थापनां श्रीप्रथम जिनपते र्येन सौचै र्यशोत्रि श्चित्रचक्रे जगत्यां
जिन कुशल गुरु स्तपदे जाव शोत्रि ॥ २७ वाटपेपियत्र गण नायक लक्ष्मिकांतां केली विलो
क्य सरसा हृदि शारदापि । सौजाग्य

(२५) तः सरज संविल्लास सोयं जातस्ततो मुनि पतिजिन पद्मसूरिः ॥ दृष्टा पदष्ट
सुविशिष्ट निजान्य शास्त्र व्याख्यान सम्यगवधान निधान सिद्धेः । जज्ञे ततो ऽस्त कलिकाल
जना समान ज्ञान क्रिया

(२६) विध जिन लब्धि युग प्रधानः ॥ २८ तस्यासने विजयते सम सूरि वर्यः सम्यग
दृगंगि गण रंजक चारु चर्यः । श्रीजैन शासन विकासन चूरि भाभा कामापनोदन मना जिन
चंद्र नामा ॥ ३० तत्कोपदेश

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत — — — । श्रीमद्विहार पुर
वस्थिति वष्टराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वष्टराजः सवा-
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरुनान्वय

(२८) मंरुनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व ध्यापकास्तु
श्रीजिनलब्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्त्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुरूवाः । श्री मंतो जुवन
हिताजिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि जूमिते ब्रजति विक्रम जूमृदनेहसि । बहुल षष्टि दिने श्रुचि
मासगे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः प्रासाद
एष कलसध्वज मणिकृतो

(३०) ऋः । निर्माण कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता जुवि सुप्रतिष्ठा ॥
३६ श्रीमद्विर्जुवन हिताजिषेक वर्ये प्रशस्ति रेषाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्रीकीर्त्ति
रिव मूर्त्ता ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

(३१) द्वांगजेन पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण बीधाजिधानेन ॥ ३८ इति
विक्रम संवत् १४१२ आषाढ वदि ६ दिने । श्रीखरतर गण शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनलब्धि सूरि
पट्टालङ्कार श्रीजिनेन्द्र सूरिणामुपदे

(३२) शेन । श्रीमंत्रि वंश मंरुन ठं० मंरुन नंदनाच्यां । श्रीजुवन हितोपाध्ययानां
पं० हरिप्रज्ञ गणि । मोद मूर्त्ति गणि । दर्ष मूर्त्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां पूर्व
देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संसूत्र

(३३) णादि महा प्रजावनया सकल श्रीविधि संघ समान नंदनाच्यां । ठं० वष्टराज
ठं० देवराज सुश्रावकाच्यां कारि — — — — — स्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥ शुभं
भवतु श्रीसंघस्य ॥ ७१ ॥ ० ॥



(६३)

गांव मन्दिर-धातुओंके मूर्ति पर ।

(237)

सम्बत १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४९७ वर्षे आषाढ वदि ८ रवी ऊ० झा० सा० सपुरा भा० सीतादे पु० कर्मसिंहेन श्री नमिनाथ विंघपितृ मातृ भेयसे कारितं उकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव गुप्त सूरिभिः ।

पाषाण पर ।

(239)

सम्बत १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटङ्गोत्रे सा० देवराज पुत्र सं० भीमराज पुत्र सं० सिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास । श्रीशांतिनाथ विंघ कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपहे श्रीजिन चन्द सूरिपहे श्री जिन सागर सूरिणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ।

(240)

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथी गुरुवासरे श्रीमुनि सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे मंथी गोत्रे वृ लाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं ।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरुषेतासाह पुत्र्या उमरवाई केन शांतिनाथ विंघं कारापिता ।

(१९)

(242)

श्री शुभ संवत् १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां त्रिंशो शुभवासरे श्री वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री बृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान महारक श्री जिनरंग सूरीश्वर शाषायां य० यु० महारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरी राज्ये श्री वाचनाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल वंशी-
द्वय बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी वीवी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य कल्याण कारिणो भवतु शुभमस्तु ।

(243)

शु० सं० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ० ख० ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संघीतीकस्य पत्नी श्रीरोंजी वीवी प्र० का० शुभमस्तु ।

(244)

सं० १९११ व० शा० १७७६ प्र० शुचि शु० १० ति० श्रीचन्द्र प्रभ विंश प्र० । प्र० । श्री जिन महेंद्र सूरिभिः का० सा श्री हकु-----खरतर गच्छे ।
विपुलगिरि ।

(245)

संवत् १७०७ शाके १५७२ प्रवर्त्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्ल वासरे । श्री बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्भार्या संघवण निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुल गिरी-----
अमै जीर्णा उद्दुरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे--
लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजग्रिही ।

(१५)

(246)

सं० १८४८ मिति कार्तिक सुदि ७ तिथी । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचल मुक्तिंगतस्याति मुक्तकमुने मूर्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकेः ।

(247)

सम्बत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रभ जिन चरण न्यासः प्रतिष्ठितं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल दुतिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

(248)

संवत् १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तुशुभं भूयात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

(249)

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथी श्रीनेमिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्री राजगृहे रत्नगिरी जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

(250)

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथी श्री शांतिनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशी गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रत्नगिरी जीर्णोद्धारं क० ।

(१६)

(251)

॥ अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

(252)

अंनमः ॥ संवत् १८१६ वर्षे माघमासे ६ तिथौ श्री वासु पुज्य जिन चरण कमल स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचंदेन श्री राजगृहे रत्नगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

(253)

॥ अं नमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(254)

॥ अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्री सुमति जिन चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन उदय गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

(255)

अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी तिथौ श्री पार्श्वनाथ जिन चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो कल्याण हेतवे ॥ श्रीः ॥

(१७)

स्वर्ण गिरि ।

(266)

सं० १५०४ फागुण सुदि ६ दिने महत्तियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० भीमराज पुत्र सं० शिवराजेन । भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल घर्मदास सकुदुम्बेन श्री आदिनाथ विंशंकारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरिपट्टे श्रीजिन चन्द्र सूरि पट्टे श्रीजिन सागरसूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिसिः श्रीस्वरतर गच्छे ।

वैभार गिरि ।

(267)

सं० १५२४ आषाढ सुदि १३ स्वरतर गणेश श्रीजिन चन्द्रसूरि विजय राज्ये तदादेशे श्रीवैभार गिरी मुनि मेरुणा सि० ॥ — श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्रीजिन भद्र सूरि पादुके प्र० का० श्री माल वं० श्रीषू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

(258)

सं० १५२७ आषाढ सुदि १३ श्रीजिन चंद्र सूरिणामादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः घन्नाशालि भद्र मूर्ति -- का० प्र० भीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

अंनमः ॥ सम्बत १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री आदिनाथ जिन चरण कमले स्थापितं हुगली वास्तव्य श्रीसवंशे गांधि गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

(६८)

(260)

॥ श्री सम्बत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फते
चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताव रायजी तदुर्म पत्नी
जगत्सेठाणीजी श्रीशुंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं । स्था० राजगृह
नगरोपरि वैभार गिरी ॥

(261)

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि शिषरे
श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं प्र० श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(262)

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार गिरि
शिषरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । महारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(263)

सुभ स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथीशुभवासरे श्रीमत्
शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत्स्वरतर ग० श्री जिन रंगसूरीश्वर साखायां वृ० प्र०
यं० युं० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० मु०
कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल बं० बाबू मोहन लाल कस्यात्मज बाबू हकुमत रायेन प्र०
का० शुभमस्तु ॥

(264)

अंनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकस्य चरण
क० प्र० श्री वृ० प० ग० प्र० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरी वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत्
शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात् बाबू पुस्याल चन्द पीपाहा गोत्रीयास्य पत्नी पराण कुंवरेन
प्र० का० श्री वैभार गिरे सुभमस्तु ॥

(६६)

(265)

॥ सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमत्पार्श्व-
नाथस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत परतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साषायां श्री जिन
नन्दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्
ओ० वं० पुस्यालचन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराणकुंवरधाविका प्र० का० वैभार गिरे।

(266)

॥ अंनमः सिद्धं सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्ष १० दशम्यां तिथौ शुभ वा०
श्री कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्स्य० स्व० ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर साषा० श्री जिन
नन्दी वर्द्धन सूरि य० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्
ओसवाल वंसोद्भव वायु मोहनलालजीत्कस्यात्मज वायु हकुमत राय—कस्य गोत्रीय
प्र० कारापित शुभमस्तु । वैभार गिरी ।

(267)

ॐ नमःसिद्धं ॥ शु० सं १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्ल पक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभ
वा० श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्स्य० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरिश्वर
साखा० प्र० य० यु० प्र० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सूरि वर्त्तमान वा० श्री विनय विजयजि तत्
शि० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् वायु महताय चन्द्रस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरांजी
वीथी प्र० का० शुभ मस्तु वैभार गिरे ।

(268)

सं० १९११ व । शाके १७७६ प्र० । शुचिः सुदि । तिथौ श्रीनेमनाथपादन्यासो कारा०
प्र० प्र० श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः का । से० । गो । श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी महा कुमा—तस्या
श्रेयोर्थं भवतुः ॥

कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान बडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुठवर ग्राम नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणघर श्री गोतमस्वामी (इन्द्रभूति) जी का जन्म स्थान है । बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध विरवविद्यालय और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । गवर्णमेंट के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ हुई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके उपयुक्त बहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

पाषाणपर ।

(269)

॥ ५ ॥ संवत् १९७७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विं वं का० ।

(270)

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी पुत्र म० भीषण कारित श्री महावीर विं वं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन्सागर सूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठा० नीहालो तत्पुत्र भार्या ठकु-रेटी देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुठवर ग्राम --कारा पिता बृहत्खरतर गच्छे पूज्य श्री श्री जिनराज सूरि विद्यमाने उ० अन्नय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

संवत् १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने----- मासि शुक्र पक्षे सप्तमी गुरु वासरे
 वृहत् श्री परतरगच्छे युग प्रधान श्री जिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन
 तस्य भार्या न्हालो श्राविका पुण्य प्रपाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता
 श्री माहतीयाल (महतियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री
 रत्नातिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लखिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओं की राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी
 को राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदारवं राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा
 कर राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक
 आदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वामि, भद्रबाहू-आर्य
 महागिरि, सुहस्थि, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य श्री स्थूल भद्र जी
 और सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है
 सहरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल बिहार उड़ीसाके शासन कर्ता यहां रहनेके
 कारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उन्नति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

संवत् १८५२ वर्षे पोष शुक्र ५ मृगवासरे श्री पडलीपुर वास्तव्य । श्री सकल संघ समु-
 दायेन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापितं ।
 कार्यस्याग्रेऽवरो तथा गच्छोय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्द्रजी प्रतिष्ठितं च भी सकल
 सूरिभिः शुभं भूयात् ।

(७२)

धातुओं के मूर्तिपर ।

(274)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे सा० अर्जुनपुत्रेण सा० उदय
सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्रीपालादि युतेन आत्मश्रेयसे
श्रीचंद्र मंत्रं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पद्वे मंत्र सूरिभिः ॥

(275)

सं० १४८२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्री जिनमद्र सूरिभिः
कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ८ बुधौ वासरे घोरपट श्री देवां कीर्ति मटकी घोरिय मुल संघे
बहिजे पतिमर्जर्षिः भयमिरि पुत्र उदत्य-षिम्बराजामन । शुभं ॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० वेता मा० वेतलदे पुत्र चाचा वीलहा-
देपा वेताकेन डूंगर निमित्त श्री घर्मनाथ बि० का० म० क्षेत्र गच्छे म० श्री मुनि तिलक
सूरिभिः ॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा मा० मालही पु० ऊदा मा०
ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० ऊदाकेन श्रीकातमि० (?) श्रीवासुपुज्य विंवं
का० म० श्री संडेर गच्छे श्री शार्त सूरिभिः ॥

(७३)

(279)

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि ओसवाल सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू
नाम्ना भा० चनू पुत्र दूंगशादि युतेन मातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्र०
श्री तपा गच्छेथ श्री रत्नशेखर सूरि पुरंदरैः ॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ सीणुरा वासि प्रा० वा० मांई (?) आप्त धाकुंसुत सम-
शरेण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंयु विंवं का० प्र० तपागच्छे
श्री रत्नशेखर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आश्वद्रार्कं जपतत् ॥ श्री ॥

(281)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ़ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाधू भार्या धर्मिणि
पुत्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल महिराजादि युतेन
स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे
श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

(282)

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० साण्हा भा० कलह पुत्र सं-नरसिंह
भा० नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना मातृ साहसमधर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व
श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री - रिभिः : ॥ देप । तप-- श्री ॥

(283)

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रात् सुत सा० आण्हा भा० सोनी
पुत्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूउप विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ आषांधारा (?) वास्तव्य वासियाः ॥

(७१)

(284)

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय चेशरीया गोत्रे सा० केरहणभा०
ऋणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साऋ पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विंव कारि०
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(285)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लोत्रडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी श्राविकया
पुत्र घेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केशरि सूरिणामुपदेशेन श्री
कुंघनाथ विंव का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

(286)

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्वामी
प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

(287)

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देरहाणघा सुः सरठवणेन (?) सु० सरवण ८
श्री शांतिनाथ विंव का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

(288)

सं० १५३८ वर्षे आषाढ वदि ५ स -- र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल -- श्री ॥

(289)

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय मांडिया गोत्रोय सा० अजिता
पुत्री सा० लाषा भार्या आढो सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविंव कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं

(७५)

श्री खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पहारुकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

(290)

सं० १५६६ वर्षे ज्येष्ठ शुक्र नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र
सा० लकतनेनेदं पार्वनाथ विंवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री
जिनराज सूरिपट्टे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(291)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरी लघु शाखायां सा० वीरम भा० कलापुत्र सा० आसा
भा० कुंअरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विंवं का० स्वश्रेयसे प्र० तपागच्छे श्री हेम विमलसूरिभिः
॥ नलकछे ॥ (?) ॥

(292)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ३ शुके श्री श्री (?) वंशे । सा० माला भा० खाऊ नाम्ना
सुण्यो (?) जावड़ शी० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री भावसागर सूरीणा-
मुपदेशेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री संघेन ॥ श्रयोऽयं ॥

(293)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अन्नयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अन्नय
मंदिर गणि अन्नय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तिस्र तपा
पट्टे श्री सौभाग्य सागर सूरिभिः ।

(294)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उषवाल ज्ञातीय नवलषा गीत्रे साहवान भा०-
जसिरि पु० पदमा-आपदमा-पांचा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्वज पूण्यार्थं श्री

(७६)

शिवलनाथ विं वं कारितं प्र० नागोरी तपागच्छे भ० श्री राजरत्न सूरिभिः वचणोर वास्त
व्यः श्री ॥

(295)

सं० १७०१ व० मार्गशिर व० ११ दिने आगरा वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वृद्धशास्त्रीय
सा० नानजी भा० गुजर--पुत्र स० हीरानन्द भा० यमिन रंगदे नाम्ना स्व च पुत्र--
एवं प्रमुख कुटुम्ब श्रेयोर्ये श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिपट्टे श्री विजयसिंह सूरिभिः पं० लाल कुशल लिः ॥ श्री ॥

(296)

सं० १८५६ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीवी मेभाजी श्री आदिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं
सर्व समुदायेन ।

(297)

सं० १७७० वर्षे मार्गशिर -----श्री शान्तिनाथ विं वं कारितं ।

(298)

सं० १७६३ वै० सु० २ ---- पार्श्व--

(299)

सं० १७६३ व० फा० व० १७ प्र० तत्र श्री पार्श्वनाथ ---- ।

(300)

सं० १७७१ वर्षे शके १६३६ वर्षे मगसिर सुदि १ शुके माळपूर वास्तव्य वीराणी
गोत्रीय सा० वेणीदास तत्पुत्र सा० श्रीमसी तत्पुत्र सा० मध्याचंद वासी हाजीपुर पटना

(७७)

कालेन शांतिविषयं गृहीतं श्री मेदिनी पूरे प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेभ्यो विजयरत्न सूरि राज्ये
प० जय विजय गण्डिभिः ॥ श्री ॥

(301)

सं० १७८१ वर्षे माघ सुदि १५ दिने चोडरिया गोत्रे सा० जीवण रामजी भार्या मन
सुषदेजीः । सुत जगतसिंघजी विषयं कारापितं ।

(302)

सं० १८२० वर्षे मिः मि-सु० ३ श्री भ० श्री जिन लाभ सूरि - - - -

(303)

सं० १८२० वर्षे मिः मा० सु० ५ श्री भ० जिन लाभ सूरि प्र० धीर गोत्रे श्री० मोतीचंद
कारी - - - - जिनः - - - ।

(304)

सं० १८२० मि० फा० कृ० २ बुध दूगड़ महताव कुवर का० प्र० सागर - - - - श्री अमृत
चन्द्र सूरि राज्ये

(305)

२४ जिन माता पट्टपर ।

संवत् १८४८ मिति भाद्र सुदि ११ तिथौ ॥ श्री पाटलिपुत्रे मालहू गोत्रे सा० हुकुमच-
न्दजी पुत्र गुलाबचन्द भार्या फुल्लो वीवी कया इष्ट सिध्यर्थे श्री चतुर्विंशति जिन मातृ
स्थापना कारिता प्रतिष्ठिता च श्री जिनभक्ति सूरि प्रशिष्य श्री अमृत धर्म वाचनाचार्य्यैः
श्री रस्तु ।

(७८)

(306)

सं० १९०० मिः आषाढ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विंभं प्रति० खरतर महारक गच्छे महारक श्री जिन हर्ष सूरिपहो दिनकर भ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः कारितं तेन ओसवंशे दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दीलतरामेन स्वश्रेय सोर्यम् ।

पाषाण के मूर्तियों और चरणों पर ।

(307)

(चन्द्रप्रभ विंभपर)

सम्बत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रेगाणी वंसे सं० ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० घनपालादि युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत् पहे पूज्य श्रीकल्याण सागर सूरीणा मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंभ प्रति --

(308)

संवत् १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रुर पाल सं० सोनपाल प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य विंभं प्रतिष्ठापितं ॥

(309)

॥ श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० क्रुरपाल सं० सोनपाल प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणा-मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन विंभं प्रतिष्ठापितं सं० चागाकृतं ।

(310)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्य उपकेस ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० बेतसी लघुभ्राता सा० तेतसा

(७९)

युतेन श्री मन्मथल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन श्री वास पूज्य
विंश प्रतिष्ठापितं सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्सवंत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती
लोढा गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्कादे पुत्र सा० चेतसी मा० प्रक्कादे
पुत्र सा० - सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन
श्री विमलनाथ विंश प्रतिष्ठितं सा० क्रूरपाल- - ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री क्रूरपाल सं० सोनपाले : स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे
पूज्य श्री ५ श्रीधर्ममूर्ति सूरि पट्टाम्युजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन
श्रीपार्श्वनाथ विंश प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ९ सा वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्रतिष्ठा
करापितं वीराणी गोत्रे पाटली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्र ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द वीराणी
गोत्रे - - - प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र मयाचन्द प्र०
वीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शान्तिनाथ ॥

(८०)

(३१६)

॥ सं० १७८९ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय बेमचन्द जीना पादुका ॥

(३१७)

॥ संवत् १८१९ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माषिक चंदेन जीर्णोद्धार कारापितं ॥

(३१८)

सं० १८२५ वर्षे माघ शु० ३ गुरी गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि -- नाथ बिंखं कारापितं ।

(३१९)

॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० रूपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२९ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(३२०)

॥ शुभ संवत् १८७७ वर्षे ॥ वीसाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्रवृहस्वरतर गच्छे महारक श्री जिन अक्षय सूरि पहाळं कृत श्री जिनचन्द्र सूरिभिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य । समस्त श्री संघैः प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

(३२१)

॥ संवत् १८७७ ॥ वर्षे वेशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल सूरीश्वर सद्गुरुणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता महारक श्री जिन अक्षय सूरि पहाळं कृत श्री जिन



(८१)

चन्द्र सूरिभिः मनोर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुभावक श्री कल्याणचन्द्र
तत्पुत्र श्री मंगुलाल की र्त्तचन्द्र तटपीत्र किरनप्रसाद अमय चंद्रादि सपरिवारेण स्वधे-
योऽर्थं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

(322)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

(323)

॥ संवत् २१८ वर्षे वेशाष सुदि ३ श्री मुलसंचे महारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह
जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे---

(324)

संवत् १५१८ वर्षे वेशाष सुदि ३ मुलसंचे महारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज
पापडीवाल सहैरम-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

(325)

॥ संवत् १६०१ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रूरवंशे महाराजधिराजजी श्री मत्त स्याहजा
राज्य म० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे म० श्री देवेन्द्र कीर्तिजी सदाभनाये सरस्वती गच्छे
वलात्कारगण कुंदाचार्यान्वये शुभां ।

(326)

संवत् १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमो गुरी ढाकामध्ये ----- काष्ठा संघ माथुर
गच्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिगम्बर धर्म महारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठित अग्रवाल
मंगलु गोत्रे सा० गुलाल दास मा० मुलादे पुत्र० । सावलसिंघवी ममरसिंघवी केसर
सिंह वि-----प्रतिष्ठा कारापिताभि सेरपुरेन्तिके ----- ढाकायां प्रतिष्ठा । -----
पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

(६२)

(327)

नेमनाथजीके विंवपर ।

॥ सं० १९१० माघ शु० १४ शनौ काष्ठासं (घ) मायुर गच्छ पुष्कर गण लोहाचार्य
याम्नाय भ० देवेन्द्र कीर्तिदेव तत्पदे भ० जगत् कीर्तिदेव तत्पदे भ० ललित कीर्तिदेव
तत्पदे भ० राजेन्द्र कीर्तिदेव हृदाम्नाय अग्रोत् कान्धय वासिल गो श्री सौषीलाल
तत्पुत्र बाबु मुनिसुब्रत दासेन श्री जिनालय पूर्वक श्री जिन विंवं प्रातष्ठा कारापिता
आरामपुर वास्तव्य --- स्य रामसरा मध्ये श्रीरस्तु ॥ श्री ३ ॥

(328)

॥ श्री संवत् १९१० शाके ॥ १७७५ साल मित्ती वैशाख शुक्ल पंचम्यां गुरौ पाटलीपुर
सर जिनालय पूर्वक श्री श्री नेमनाथ मंदिरजी जेसवाल माणकचन्द तत्पुत्र मटरु मल
तत्पुत्र सीधनलाल प्रतिष्ठा कारापितं श्रीरस्तु ।

(329)

श्री स्थूलभद्रजी का मंदिर ।

॥ संवत् १८४८ वर्षे मार्गशिर त्रिदि ५ सोमवासरे श्री पाटली वास्तव्य श्री सकल संघ
समुदायेन श्री स्थूलभद्र स्वामीजी प्रसादस्य कारापितं कार्यं स्याग्नेस्वरी श्री तपा
गच्छीय श्राद्धः श्री लोढा श्री गुलाबचन्दजी प्रतिष्ठि तंसकल सूरिभिः ।

(330)

चरण पर ।

सं० १८४८ ॥ भाद्र सुदि ११ श्री संघेन । श्रुत केवलि श्रीस्थूल भद्राचार्याणां देवगृहं
कारयित्वा तत्र तेषां चरण न्यासः कारितः प्रतिष्ठितं श्री अमृतधर्मवाचनाचार्यः ॥

(८३)

सेठ सुदर्शनजी का मन्दिर ।

(३३१)

चरण पर ।

अव्ययपदाप्तस्य श्री श्रेष्ठिसुदर्शनस्य इमे पादुके संप्रतिष्ठिते सकल संघेन शुभ संवत्सरे ॥

दादा वाड़ी ।

(३३२)

संवत् १६८२ मार्गशिरष शुदि ५ सा० कटार मल तस्यात्मज सा० कल्याण मल पुत्र
चिंतामणि श्रीजिन कुशल सूरि० भ । वेगमपुर वास्तव्य ।

(३३३)

संवत् १६९९ वर्षे पूर्व देशे पाडलिपुर नगरे वेगमपुर --

(३३४)

तपागच्छै भ० श्री ५ श्रीहीर विजय सूरि जगत पादुकेभ्यो नमः पं० चंद्र कुशल गणि
नित्यं प्रणमतिश्च । सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ९ सा० वेणीदास पुत्र भीमसेन पुत्र
मयाचन्द वीराणी गोत्रे प्रतिष्ठितं- वीराणी मयाचन्द प्र० क० पाडलीपुरे ।

(३३५)

साध्वीजी के चरण पर ।

सं० १८४४ वर्षे शाके १७०९ प्रवर्त्तमाने मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे सूरीशाषायां
साध्वी महत्तरा सुजान विजयाजी तत् शिष्यणी दीप विजयाजी तत् शिष्यणी अंते
वासिनी पान विजया कारापितं वाराणसी मनसा रामेन प्रतिष्ठा कारापितं शुभमस्तु ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ यह ४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पवित्र पहाड़के २० टोंकमेंसे १९ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री पार्श्वनाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । तलहटी मधुवनमें मंदिर और घर्मशाला बने हुवे हैं । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका केवल ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ गाइ इसे लिया गया है ।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें चरण पर ।

(३३६)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे केवल ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या मेहताव कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ भ्राता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १९३० वर्षे जीर्णोधारं कारापितं ।

मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

(३३७)

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंशं प्रतिष्ठितं -- ।

(३३८)

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवी श्रीपार्श्वनाथस्य शूभ स्वामी गणधर विंशं प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंघेन ।

(८५)

(339)

संवत् १८७७ - - श्रीपार्व विवं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं - - सांवत्
सिंहज पदार्य मल्लेन - - - ।

(340)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्वविवं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा
महतावी - - मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

(341)

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्वनाथ जिन विवं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या
फत्ती नाम्न्या वाचक चारिन्नन्दि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(342)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विवं कारितं ओशवंश
दुगड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(343)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविवं कारितं ओशवंशे
नवलखा गोत्रे मेटामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद प्रहारक खरतर गच्छ श्री जिना-
क्षयसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(344)

सं० १८८७ वर्षे ---श्री ऋषभ जिनविवं कारितं प्रतिष्ठितं ---।

(८६)

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रषण गणधरायुते शके (१७६२) फाल्गुनांतिमदले
सुनागके (५) भार्गवे सितपटीघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भगवत्सहस्रफणालंकृत श्री
पार्श्वनाथ जिनमूर्तिः कारापितं श्री० उदय चन्द्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया मूल चंद्र सुत
युतया वृहत्स्वरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र सुरिणा प्रतिष्ठिता ।

(346)

सं० १९०० वर्षे -- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंशं का० --- ।

(347)

सं० १९१० शके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंशं प्रतिष्ठितं वृहत्स्वरतर गच्छे --- ।

टोंकपरके चरणों पर ।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री
अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ।

(349)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० चंद्रे । श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा श्री मद्भिजय गच्छे । महारक ।
श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च ॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय सा० खुसालचंदेन श्री संभव
पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ॥

(८७)

(351)

संवत् १९३० । माघे । शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन कारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री महारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(352)

॥ सं० १९३३ का जेष्ठ शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन चंद्र सागर सूरि पटोदय प्रभाकर महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां । स्थापितां च । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(353)

॥ सं० । १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रोय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(354)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णोद्धार रूपा । गुज्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । म । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(355)

॥ सं १९४९ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण स्थापितं प्रति । म । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(८८)

(३५६)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपार्श्व-
पादुका कारापिता प्र० ।

(३५७)

संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार
रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तथा स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे ।
भट्टारक । श्री जिन शांति सुरिभिः । प्रतिष्ठितं च ।

(३५८)

॥ संवत् १८४९ माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ बुधवारि । श्री चंद्र प्रभु जिनस्य
चरण न्यासः श्री संचायहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भट्टारक ।
श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(३५९)

॥ संवत् १८३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका ।
अहमदावाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा विजय
गच्छे । भट्टारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(३६०)

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता कारापित
च । मलघार पूर्णिमा । श्री मद्रिजय गच्छे । श्री भट्टारकोत्तम । श्री श्री जिन शांति
सागर सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(६९)

(361)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री शीतल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(362)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री शीतल नाथ जिनेद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(363)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(364)

॥ संवत् १८३१ माघे शु । १० तिथी । श्री श्रेयांस नाथ जिनेद्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय गच्छे । प्र । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(365)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(366)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री विमलनाथ जिनेद्रस्य पादुका जीर्णोद्धाररूपि । गुजरात का श्री संघेन । तथा स्थापना कारापिता । मलधार श्री विजय गच्छे । जं । यु प्र । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

(६०)

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री अनंत त
प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ॥

(368)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलघार पूर्णिमा श्री मद्रिजय गच्छे
प्रहारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

(369)

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते माघोत्तम माघे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षी नवमी तिथौ
सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका प्रतिष्ठिता
वृहत् खरतर भट्टारकोत्तम प्रहारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन महेंद्र
सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

(370)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका जीर्णोद्धार
रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना कारापिता ।
पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । प्रहारक जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥
स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री शांति
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

(६१)

(372)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाइ पेम चंदेन स्थापना कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । भ । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

(373)

॥ संवत् १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री कुंधुनाथ पादुका कारापिता प्रती० श्री तपा गच्छे ।

(374)

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री कुंधु जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका -- जीर्णोद्धार रूपा मम्बवर्द्ध वास्तव्य सेठ केसवजी नायकेन स्थापना कारिता -- पूर्णिमा । श्री विजय गच्छे । श्री जिनचंद्र सागर सूरि पटोदय प्रभाकर -- महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

(375)

॥ सं० १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चन्देन श्री अरनाथ पादुका कारापिता प्र० श्री तपा गच्छे ।

(376)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री अरनाथ जिनेन्द्रस्य । चरण पादुका जीर्णोद्धार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तथा स्थापना कारापिता मल ॥ पूर्णिमा । विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ।

(६२)

(377)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल चंदेन ।
श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता प्र ० श्री तपा गच्छे ।

(378)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका
जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना कारापिता
मलघार पूर्णिमा । श्री मद्वि जय गच्छे । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभि
प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

(379)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री सुब्रत
जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(380)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका । जीर्णोद्धार
रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री मद्विजय
गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

(381)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री नमि-
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(८३)

(382)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरणपादुका ।
जीर्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा-
पिता । पूर्णिमा विजय गच्छे महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

तेजपूर (आसाम)

राय मेघराजजीका मंदिर ।

(383)

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० सानंद भार्या हीसू
सुत पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ विंभं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(384)

सं० १८४३ का मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां -----

(385)

सं० १८५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे ॥ श्री जिन कीर्त्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री
जिनदत्त सूरि नाम पादुका का० ।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल - नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट ।

घातुयोके मूर्त्ति पर ।

(386)

श्रीपार्श्वनाथ विंभ ।

ब्रह्माण सत्त्व संयकः श्रियावे सुनः सुपुण्यक श्री द्वः (?) सीलगण सूरि भक्त्य (?)
द्रकुले कारयामास संवत् १०३२

(६४)

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेशराचार्य धावक पूना सुताभ्यां पालहण रालहणाभ्यां
स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

ॐ श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरैः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) बालान्वय सारभूतः ।
यो विस्तु (श्रु) तोसो सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तस्माच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवत् १२३६ फा सु० २ गुरी ॥

(389)

संवत् १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय धापणा०
सा० छाहउ त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन मातृपितृ
श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवां कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरिभिः ।

बडावजार-पंचायति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पत्नीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवत् ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन ॥
करिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर ।

(३९१)

॥ संवत् १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोसी दूंगर भार्या म्यापुरि सुत पूजाकेन भार्या सोही सुत बीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पद कारितः । आगम गच्छे श्री जम्बरसिंह सूरि पद श्री हेमरत्न सूरि गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार वास्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(३९२)

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा मा० मरगदे सुत सा० हदाकेन मा० करमी पु० पालहादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ विं वं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोमसुंदर सूरि पद श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(३९३)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरी प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशाखायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः ।

कलकत्ता अजायब घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

(३९४)

--संवत् १-८४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरी श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंबहरा स० केशव सुत सं० मंडिलक सुत० सं० चांपा भार्या चापलदेसुत सं० ---- भार्या श्री गांगी सुत-मेधाकेन भार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० मागादि तथा (?) पुत्री जीवणि प्रमुख रामसु (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ विं वं कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छ नायक भ० श्री रत्नसिंह सूरि पहालंकरण भ० श्री उदय बरुलभ सूरिभिः श्री ज्ञान समर सूरि युतो प्रतिष्ठितं ।

(९६)

(३९५)

संवत् १६०८ वर्षे माघ वदि ९ गुरी प्राग्वाट ज्ञाती सा० राघव भा० रतना सा० नर-
सीमा भा० सुजलदे सा० रणमल भा० वेनीदे सुत लाला सीमल श्री संतनाथ विंवं
प्रतिष्ठितं ।

म्युनिकं (जर्मनि) के जादुघरके धातुकी मूर्ति पर ।

(३९६)

सं० १५०३ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उ० गोष्टिक आल्हा भा० शृंगारदे सुत सुडाकेन
भा० सुहृवदे स० आत्मश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारि० प्र० जरापल्लिय श्री शालिभद्र
सूरि पहे श्री उदय चन्द्र सूरिभिः शुभं भवतु ।

डाः कुमार स्वामिके पास 'समवसरण' के चित्र पर ।

(३९७)

संवत् १६८० वर्षे भाद्रव शुदि २ श्री मदुत्तराध गच्छे आचार्य श्री कृष्ण चंद विद्यामाने
लिः ऋषि ताराचंद शुभं भूयात् कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

मेः लुवार्ड के मध्य भारतसे प्राप्त धातुकी मूर्तियों पर ।

(३९८)

सं० १५२७ पौष वदि ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० सहिजक तत्पुत्र श्री० हूंगर भा०
भा० सुडि सपरिवार भा० सहिजलदे घरमसि करमण आदि पुत्रादि युतेन पुण्यार्थं श्री
कुंयुनाथ विंवं का० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(९७)

(३९९)

सं० १५३३ वै० शु० १२ गुरी प्राग्वाट ज्ञा० सा० ताल्हा भा० राजु पु० सा० लिमघाक
तत् भा० रत्न रुद्रु आता सा० किवालय मेघ आदि सपरिवारेण श्री कुंयुनाथ विंघं का०
प्रति० श्री सपगच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्री वसंतनगरे ।

जैपुरके वेपारियोंके पासकी मूर्तियों पर ।

(४००)

सं० १४०५ वैशाख सु० ३ श्री उएस गच्छ तातहड़ गोत्र प्र० साः-ज्ज भा० ब्रह्मादे वही
पुत्र संघ० सा० चाडूकेन सकुटुंबेन श्री रिषभ विंघं का० प्र० श्री ककुदा चार्य संताने श्री कक्क
सूरिभिः ॥

(४०१)

सं० १५१२ वर्षे वै० शु० ५ ओसवाल गोत्रे सा० महणा भा० महणदे सुत सा० सीपा
केन भा० सूलैसरि प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री आदिनाथ विंघं का० श्री कक्क सूरिभिः ॥

अजमेरराजपुताना म्युजिउमके वारलि गांवसे प्राप्त पत्थर पर । *

(४०२)

--- विरय भगवत (त) -- थ -- चतुरासि तिव (स) -- (का) ये सालिमा-
लिनि -- रनि विठमाफिमिके --

* इसमें श्री महावीर स्वामिका नाम और २४ वर्षमें नध्यमिका नगरका जो कि चित्तौड़से ४ कोस उत्तरमें था उल्लेख
है और ग्रह ईः ३ । ४ पूर्वयतादि का वहीत प्राचीन लेख है ऐसा विद्वानोंका विचार है।

❀ बनारस ❀

काशीदेशका यह वाराणसी वा बनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान है । हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है । यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ७ मां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ दीक्षा, फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजी का श्री च्यवन, पोष वदि १० जन्म, पीष वदि ११ दीक्षा और चैत वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं । महल्ले जेलुपुरा और भदेनीमें मंदिर बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं । यहां से ४ कोस पर सिंहपुरी है यहां ११ मां तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और माघ वदि ३ केवल ज्ञान भया है । निकटमें वीहोंका सारनाथनामक प्राचीन स्थान है ।

सुत टोलेका मंदिर ।

पंच तीर्थों पर ।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्र १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्रे० मूंधा भार्या माघलदे सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थे श्री शितलनाथ विंश पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागरतिलक सूरि पद्वे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

(404)

सं० १५५६ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्रे० जावड़ भार्या पूरी सुत धर-जाकेन भार्या हर्षाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंश श्री निगमाजमा भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनदि सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

(६६)

बट्टजीका मंदिर ।

(405)

सं० १५१२ वैशाख शु० ५ प्राग्वाट सा० सिधा भा० लादां सु० साह हीराकेन भा० संजत्री प्रमुख सुरत श्री-जिनावति का० प्र० तपा रत्न शेखर सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

(406)

सं० १४८५ वर्षे आ० सुदि १० रबी मालहू -- ऊ० ज्ञा० साह बीजड पु० साह हरपाल भा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं राजावर्त्तक रत्नमयं सपरिकरं का० प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

(407)

सं १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ३ भोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंघ भ्रातृपरी पनपा भार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

(408)

संवत् १२५७ ज्येष्ठ सु० १० महेष्टीराचार्य --- स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिताः ॥

(१००)

रामचन्द्रजी का मंदिर ।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरी सूराना गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जगद भार्या
जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्री० महावीर वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे
श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्ये श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५६ ज्यैष्ठ वदि १२ शनी सूराना गो० सा० अमर भा० अइहव दे सुत सा० ताला
सालहा श्रेयसे श्री पार्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० प्र० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः ॥

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड भार्या पालहण
देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिधा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ
विंवं श्री अंचल गच्छेश श्री जय कीर्ति सूरिन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघेन ॥
शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा ---
पु० --वालहा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशोदेव
सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५४६ वर्षे ज्यैष्ठ सुदि १३ धेवरिया गोत्रे श्री माल बीलीज देवी गोवेद पु० श्रीमा
पु० सा० सिंघण सुमेरु आत्म पुण्यार्थे कुंधुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे प्र० गुण कीर्ति
सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन ।

(१०१)

(414)

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवौ श्रीमाल मडवीया गोत्रे सा० परसंताने सा०
पहराज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्षनाथ विंवं स्वपुण्यार्थं
कारितं । प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन बिलक सूरिप० श्री जिनराजसूरि पहे श्रीभिः ॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट ।

(415)

सं० १३७९ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीषंढेरकीय गच्छे श्रीवाहड़ भार्य धीरु पु० घरा
---मयणल---णिग भार्या केलहंण सहितेन विंवं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिभिः ।

(416)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरी उके० व० सा० रेडा भार्या रण श्री पुत्र पद सादा
जीतकेन श्री अंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्रीसंभवनाथ विंवं का०
प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

(417)

सं० १५०९ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नवाचार्य संताने उवण्य वंशे
हागलिक गोत्रे साह घना पु० स० पासवीर भार्या संपूरदे नाम्न्या निज अयोर्थे श्रीकुंथनाथ
विंवं कारापितं प्र० श्रीकक्क सूरिपहे सद गुरु चक्रवर्त्ति महारक श्री सावदेव सूरिभिः ।

(418)

सं० १५१९ वर्षे आषाढ वदि १ मंत्रिदलीय काणा गोत्रे ठ० नाग राजसु० लडू भार्या
धर्मिणि सु० सं० श्री केवल दास भार्या वीर सिंधि पु० स० सूर्यसेन श्रावकेण श्री कुंथनाथ
विंवं कारितं० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपहे श्रीजिन सुन्दरसूरि पहे श्री
जिन हर्ष सूरिभिः ॥

(१०२)

(419)

सं० १५१९ आषाढ वदि-मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाधू भा० घर्मिणि पु० स०
अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विंशं का० प्र०
श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

(420)

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराजभा० माणिकि सुत देवदत्त भा०
रूपार्इ सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसार्इ स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ विंशं
का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे ।

(421)

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवी उपकेश वंशे छजलाणी गोत्रे साह श्री पाल भार्या
सुहवदे पु० सा० ऊधा सा० जोधा ऊधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री चंद्रप्रभ
स्वामि विंशं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रतन सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगरे ॥

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

(422)

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मंडलिक
सुत कामा भार्या कामीदे सुत भ्नाक्कण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेपोथं श्री नमिनाथ
विंशं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः ।

(423)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरी श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० बेला मातर
भार्या सोही सु० महिराज जिणदास माहपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयोथं श्री
श्रेयांस विंशं आगम गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना
घांटू वास्तव्यः ॥

(१०३)

सिंहपुरी ।

(424)

सं० १५३४ वर्षे मार्ग सुदि १० शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राज भार्या वारू पु० सा०
असपति भा० असल देवी माई सुत गुणराज सरादि कुटुम्ब युतेन श्रीमुनि सुव्रत विंवं
कारितं प्रतिष्ठतं श्रीवृहस्पपाच्छे श्रीउदयसागर सूरिभिः ।

(425)

चरण पर ।

सं० १८५७ मिति चैत्रक मासे कृष्ण पक्षे षष्ठ्यां कर्मवा-पूज्य भटारक श्रीजिन हर्ष
सूरि विजयराज्ये श्रीसिंहपूर ग्रामे तेषां केवलोत्पत्ति स्थाने गांधि गोत्रीय मयाचंद्र प्रमुख
समस्त श्रीसंघेन श्रीश्रेयांसारूया नामेकादशानां लोक नाथानां पादन्यासः कारितः प्र०
श्रीजिन लाभ सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीहोरधर्म गणिभिः खरत्तर गच्छै ।

मिर्जापुर ।

पञ्चायती मन्दिर ।

(426)

श्रीपार्श्वनाथ विंश पर ।

सं० १३७६ वर्षे उएसज्ञातीय वावेला गोत्रे देवात्मज सा० धीका पुत्रसंघपति भाभा
सुत सा०— जूकेन पितृ श्रेयसे का० प्रति० श्री कृष्णार्पिगच्छे श्री प्रसन्न चंद्र सूरिभिः ॥

(427)

सं० १४२० वर्षे वैशाख शुदि १० शुक्रे श्री श्री मालज्ञातीय ठ० बीजा भार्या मोहनदेवि
श्रेयसे सुत जोलाकेन श्री पार्श्वनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं त्रिभवीया श्रीधर्मदेवसूरि
संताने श्रीधर्मरत्न सूरिभिः ॥

(१०४)

(428)

सं० १४८२ व० वैशाख वदि १ प्र० झूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदेपु० महिराज
जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री
मलयचद्र सूरिपट्टे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

(429)

सं० १४९० व० वैशाख वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालण तत्सुनाभ्यां
स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंधु विवं कारितं प्रति० श्रीहेम हंस सूरिभिः ॥

(430)

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमेश्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा भा० जस-
मादे सुत रागा भीमा पीमाभिः भ्रातृषेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विवं का० प्र०
श्री पोपलगच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपट्टे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

(431)

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवी उपकेश ज्ञा० व्यव० गोष्ट सा० माडण भा० मोहणि
पु० कालहा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं
पूर्णिमापक्षे जयचन्द्र सूरिपट्टे श्रीजयभद्र सूरिभिः ॥ : ॥

(432)

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवी उप० ज्ञातीय कठउड गोत्रे सा० बरसा भा० मालही
पु० रामा भाडा राजा चांदा भा० मरधू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्रीचन्द्र-
प्रभस्वामि विवं कारा० प्रति० श्री चैत्रावाल गच्छे भ० श्री सोमकीर्त्ति सूरिभिः सद्रंछ-
लिया नगरे ।

(१०५)

(433)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गावं-जा स० ऋषभदास भार्या रेषश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संचाधिपे स्वानुवर दुनोचंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं प्रतिष्ठापितं ॥

(434)

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंधुनाथ जिन विवं दू० विसनचंदेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

(435)

सं० १८९७ फा० शु० ५ श्रीपार्श्वनाथ वि० प्र० श्री पार्श्वनाथ त्रि० प्र० श्रीजिनमहेन्द्र सूरिण्युपदेशेन कारिता । सेठ उदयचन्द्र धर्म पत्नी महाकुमारिभिदया । वाचनाचार्यश्री चारित्र नन्दन गणिभिर्देश---

(436)

सं० १८९७ फा० सु० ५ श्री आदिनाथ विवं प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा का० वोहरा नाथूराम पत्नी साहवां नाम्न्यात्म श्रेयसे वाचक चारित्र नन्दन गण्युपदेशतः ॥

सेठधनसुखदासजी का मंदिर ।

(437)

सं० १४९३ वर्षे माह वदि १ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० नरपाल भार्या नयणादे सुत देपाकेन श्रीपद्मप्रभ विवं कारितं प्रतिष्ठितं । -- गच्छे श्रीगुणदेवसूरिभिः ॥

(१०६)

(438)

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने वधेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे सा० सीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महु पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ त्रिवं करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

(439)

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपाश्र्वविंशं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं । छजलानी चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चीरडिया मनुलाल वधू - -

(440)

सं० १८९७ का० शु० ५ श्रीपाश्र्वविंशं प्र० श्रीजिन महेन्द्र सूरिणा का० । सकल श्रीसंघै ।

देहलि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था । हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राजधानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिस्को छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

चेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

(441)

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ ओं गागसादेव धम्मोयम्- -(आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा नहीं जाता)

(१०७)

(442)

सं० १५१६ वर्षे जे० व० ११ शुक्रे सोमसर वासि उकेश सा० मेहा भा० मालहणदेपुत्र
सघाकेन भा० सलही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंथुनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं-- श्री कक्क
सूरिभिः ॥ सचितीगोत्रे ॥

(443)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १२ बुधे लोढा गोत्रे सा० हरिचन्द गोगा गोरा संताने
साधु आसपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परवत सांडादि युतेन भातृ पूनपाल पुण्यार्थं
श्रीपार्श्वनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमहंस सूरिपट्टे भ० । श्रीहेम समुद्र
सूरिभिः ॥

(444)

संवत् १५२१ व० माघ सु० १३ प्राग्वाट श्रे० कटाया भा० राउं सुत धुना भा० हमकू
सुत चांपाकेन भा० धर्मिणि नामाणिकादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्यं नेमिनाथ विंश कारितं
प्रति० तपागच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि श्री सोमदेव सूरिभिः अहमदावादे ।

(445)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने उकेश वंशे साधुशाखायां सा० पाचाभा० पालह-
णदे तोल्ही सा० देपा भा० जयती पुत्र सा० पेंताकेन तोल्ही पुत्र कांकां जालहा रूपा
चांपा घरमा युतेन सा० पोपा पुण्यार्थं श्री मुनि सुव्रत का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिन
चंद्र सूरिभिः ।

(446)

सं० १५३६ माघ सुदि ५ दिने प्राग्वाट ज्ञाति सा० काजा भा० सारू पुत्र सा० हापा
केन भा० नाई प्रमुख कुटुंबयुतेन श्री चन्द्रप्रभ विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे श्री
लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(१०८)

(447)

संवत् १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंधुङ्ग गोत्रे व० अभय राज भार्या
आमलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमल्ल प्रमुख परिवृतेन श्री
आदि जिन विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखतर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः ।

(448)

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमे ब्रह्माणीया गच्छे बहुरा हीरा भा० हीरादे पु०
जीदा सोमा रूपा पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर सूरिभिः
अहिलाणी ।

(449)

॥ श्री पार्श्वनाथ सं० १६०५ फागुन सुदी दसमी चरवडिया गोत्रे गागपत्नी त्वर-
मिनी पुत्र धेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन भद्र सूरि रुद्रपला गच्छे ज० श्री भार्वातलक
सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिपर ।

(450)

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनी उकेशवंसे----- ।

(451)

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंघ
जी राजे श्री मूलसंघे आमनाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये ज० श्री
विई कीर्ति स्तदाम्नाय पंडेलयालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० ज० श्री
कचराज भा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ यातु दानु सं० श्रीरायत ज्ञा० रयणदे---पु०
हरदास ---भा० महिमादे लाइमदे -- ।

(१०६)

(452)

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व विं व का०
प्र० तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(453)

सं० १६८१ व० फा० शु० १० म० चंद्रकीर्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०
नीमा भा० सरूपादे ।

(454)

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथौ गुरुवासर- -सुधावक
पुन्य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥
श्रीमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके विं व पर ।

(455)

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरी मेरुता नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे सं० जय-
राव भा० सोभागदे पु० सं० ओहणकेन श्रीसुमतिनाथ विं व का० प्र० तपागच्छे म० श्री
विजयदेव सूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंह सूरि परिवृत्तिः ।

(११०)

सर्व धातुयोंके मूर्तियों पर ।

(456)

सां । संवत् ११ ६७ वैशाख सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाचार्य गच्छे सत्तु श्री वि --- ।

(457)

संवत् १२८० वर्षे ---सांढा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३३१ अ० व० २ हल --- ।

459)

सं० १४३३ आषाढ शु०--प्रा० लघु व्य० आसा मा० ललतदे--श्री पार्श्वनाथ वि०
का० श्री गुणभद्र सूरीणामुपदेशेन ।

(460)

सं० १४४५ पौष शुदि १२ बुधे ज० श्रै० जोला मा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ
विं० कारापितं प्र० ज० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(461)

सं० १४५४ वर्षे मोढा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोषा मा० पाषी पुत्र लाषाकेन स्वपुत्र
वीसल श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विं० का० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छ सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव
सुन्दर सूरिभिः ।

(१११)

(462)

सं० १४६३ वै० शु० १०--सा---

(463)

सं० १४७१ माघ शुदि १० रवी प्राग्वाट ज्ञातीय साः रामा मा०--ठाकुर पितृ
श्रेयार्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी --- ।

(464)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ज० ज्ञा० सा० तिहुणा मा० तिहुणांसारपु० चाहड़
भा० केलहु पु० हापा मा० तेजू पु० करमोकेन पितृ--श्री पद्मप्रभ वि० का० प्र० श्री
संडेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः ॥

(465)

सं० १४७६ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० धरणा पुत्र संग्राम समरासिंध श्रावकः श्री
महावीर विंवं पुण्यार्थं कारिते प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

(466)

सं० १४८२ वर्षे माह सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाडा पु० जयता भार्या साल्ही
पुत्र घोषाकेन पित्रो श्रेयार्थं श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री धर्म घोष ग० श्री धर्म घोष
ठा० श्री मलयचन्द्र सूरि पद्वे श्री--देव सूरिभिः ।

(467)

सं० १४८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ज० ज्ञा० पालडेवा गोत्रे सा० टापर मा० तेजलदे
पु० अगडाकेन भा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य वि० का० प्र० श्री सुविप्रभ
सूरिभिः श्री वीरभद्र सूरि सहितेन ॥

(११२)

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ज० ज्ञा० टपगोत्रे वयव० रूपा भा० रूपाई पु० कालू
पाचाभ्यां आ० अदा भा० आलहणदेविः श्री पद्मप्रभ तव० का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री
शान्ति सूरिभिः ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०-प्राग्वाट सा० साजण भा० लापू पुत्र केल्हाकेन भा० लहमा
आतु भीम पद्मदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रति० तपा श्री सोमसुन्दर
सूरिभिः श्री-५ ।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराजभार्या सीधरही पुत्र
सा० मोहिल घण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा० श्री मुनि-
श्वर सूरि पहे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसलदे
पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्रे० श्री आदिनाथ विंवं का० उपकेश ग० ककुदाचार्य
सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(472)

सं० १५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये सा० लर
भार्या रैनसिरि तत्पुत्र सोनिग भार्या धेमा प्रणमति ।

(११३)

(473)

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने उकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जयलदे
तत्पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलषा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र०
श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(474)

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्रे श्रवाणा गोत्रे उदा भार्या लात्रि पु० देवराजेन स्व
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री घर्मघोष गच्छे श्री पदमसिंह सूरिभिः ।

(475)

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने उकेश ज्ञातीय सा० चापा भा० चापलदे सुत गूंगध
केन भा० वापू सु० चाईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० तपगच्छेश श्री
जयचन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः । कायषा ग्राम ।

(476)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरी श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वोडा भा० कुतिकदे
तयोः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० भादा भा० ऋवकूकेन आत्म
श्रेयोर्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि विं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री आगम गच्छे श्री शीलरत्न
सूरिभिः गीलौषा वास्तव्यः ।

(477)

सं० १५०७ वर्षे फा० सु०-- सं० हमा पांयपुत्र सा० सारंग भार्या मन्वकु पुत्र नाथा
भाडादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपार्श्व का० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर
सूरिभिः ।

(११४)

(478)

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे तत्पुत्र
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गौरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन कारितं
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पढे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० षदि १२ ज० ज्ञा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वील्हा भा०
जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ वि० का० प्र० श्री संडे-
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शान्ति सूरिणां पढे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूयाः ॥

(480)

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ज० वं० जांगडा गोत्रे सा० कालहा भार्या ऋषकू
सुत सा० रूपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री प० ग० श्री
जिन सागर सूरि पढे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

सं० १५१५ व० मा० सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र जीवण
केन पितृ मातृ निमित्तं आत्मश्रेय्यर्थं श्री धर्मनाथ विं० प्र० श्री नागेंद्र गच्छे श्री विनय
प्रभ सूरिभिः काकरवास्तव्य ।

(482)

सं० १५१६ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्क दिने महतिआण सा० सुरपति भा० त्रिलोकादे
पुत्र्या सा० ग्यान भगिन्या सा० चाचिंग भार्या नारंगदेव्या श्री अजित विंशं का० प्र०
श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागरसूरिपढे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(११५)

(483)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा भा० चन्हडा धर्मा कर्मा
हासा काला भ्रातृ हीराकेन भा० हीरादे सुत अदा बरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-
नाथ विंवं का० प्र० तपा श्रीसोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ कमलमेरू ।

(484)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ९ सोणुरा व्यासि प्रा० सा० राजा भा० स्या पूरि पु० तीपा-
केन भा० रानू पुत्र साधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रज्ञ विंवं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा श्रीसोम
सुन्दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(485)

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरू गोत्रे सा० पासवीर भा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण
पुत्र देवा सद्य-युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ वहादुर पुरे ॥

(486)

सं० १५३४ वैशाख सुदि ५ गुरौ ---सिखी पुत्र काला सिरिपुत्र---

(487)

✓ सं० १५३५ श्री मूलसंघे ज० श्री भुवन कीर्ति स्त० ज० श्रीज्ञान भूषण गुरुपदेशात् ॥
स० चेतसी भा० ऋतूः ।

(११६)

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या लषी पुत्र
देवण मांडण घर्मा आवकैः श्री० देवण भार्या दाडिमदे सुत सभरादि परिवार युतैः श्री
धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवास उ० व्य० महिराज भा० माणिकदेसु०
श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे । अदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वासुपूज्य विं० का० प्र०
श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाख वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमघर नोका पोमा
पागा पहिराज आडू लाल्ला लेषसी पितरनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं प्रति-
ष्ठितं तपागच्छे भटारक श्री सोमरतन सूरिभिः ॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे प्र० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा० स०
हंसराज हापु --- ।

(492)

संवत् १५५१ वर्षे वै० सुदि ९ रवी उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लाषा भार्या
सोहिषी पु० चांया भाय पौत्र पुत्र पीतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ विंवं
का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मघोष गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(११०)

(493)

संवत् १५५३ वर्षे सिवनाग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वहकटा गोत्रे सा० जयत
कर्ण सुत सा० जिणदत्त पुत्र सा० सोनपाल सुभ्रावकेण भा० गउराई लघु भ्रातृ रत्नपाल
पृथ्वीमल्ल सस्त्री केण श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीस्वरत्तर गच्छे श्री जिन
चंद्र सूरि पहे श्री जिन समुद्र सूरिभिः ॥

(494)

सं० १५५३ व० आ० सु० २ रवौ श्री श्रीमाली ज्ञातीय सा० सीधर भा० सोही सुत
सा० जूठा सा० संधा सा० भ--इ सा० पात्राकै सा० जावड वचनेन श्री पार्श्वनाथ विंवं
का० प्र० मलधार गच्छे श्रीसूरिभिः । सर्वेषां पूजनार्थं ॥

(495)

सं० १५५६ वैशाखवदि १३ श्री मूलसचे षंडेलवाल सा० देवा पुत्र परवत्त नित्यं प्रण-
मति गोधा गोत्रे ।

(496)

सं० १५५६ व० पोस वदि ४ दिने गुरी प्राग्वाट ज्ञातीय सा० राजा भा० राजलदे
पु० पोमा भा० ऋमकू सु० श्रेयोर्थं श्री वासपूज्य विंवं का० प्र० महाहडीय गच्छे प्रतिष्ठितं
श्रीमति सुन्दर सूरिभिः दधालीया वास्तव्यः ।

(497)

सं० १५६२ व० वै० सु० १० रवौ श्री उकेश ज्ञाती श्री आदित्यनाग पीत्रे चोरवेडिया
शाषार्या व० डालण पु० रत्नपालेन स० श्रोवत्त व० घघुमल्ल युतेन मातृ पितृ श्री० श्री
संभवनाथ वि० का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य० श्री देव गुप्तसूरिभिः ॥

(११८)

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाख शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा भात्र मूजा भा०
चिमलाई श्री मुनि सुब्रत स्वामि विंवं कारापितं-श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्री
लषराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा भा० अपू पु०
सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रीपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्यार्थं श्रीचंद्रप्रभ विंवं का० प्र० श्री
खरतर गच्छे श्रीजिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनी उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राभा० बुलदे पु० सा०
पत्तोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

(501)

सं० १५८८ वर्षे वै० सु० ५ गुरौ श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि शिष्य
उ० श्री गुणप्रभ -- श्री आदि नाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं ।

(502)

✓ सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान भूषण
देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्ति देवास्तत्पदे महारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूँवड
ज्ञातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमणि ।
सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

(११६)

(503)

सं० १६१६ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं ।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विधोगा भार्या वाई पूराई सुत देवचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरितत्पद्मे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि श्री पत्तन वास्तव्यः ।

(505)

✓ सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं० सांबल । साकार-साहमल अ-जा । गा --- ।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञाती वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा० सखरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर ।

(507)

सं० १४८६ वर्षे पौष वदि १० गुरो श्री हुंघड़ ज्ञातीय श्रे० उदवसीह भार्या वईराज तयोः पुत्र तथा दीहीदा सुत दोगा -- पत्नी वई चमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ -- विंशं कारापितं श्रीवृहत्तपा पक्षे श्री रत्न सिंह -- ।

(१२०)

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २ -- ओसवाल ज्ञातीय भूरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं का०
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

(509)

सं० १५०९ भाद्र सुदि ५ श्री ज्जेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा० कालू
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वक्षेयोर्थं श्री विमल विवंका०
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरी श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा भार्या
पालहणदे सुत मणयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कटुंब सहितेन मातृ
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी नागेन्द्र
गच्छे श्री गुण समुद्र सूररुपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च चिमणीया
व्रास्तव्यः । श्री ।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना भा० ललतु
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपत्नी त्वरमिनी पुत्र षवू
लघु प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

(१२१)

(513)

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० श्र० ८ श्री-धर्मनाथ विं० प्रति० - ।

(514)

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० श्र० ७ शुक्रे श्री आसवाई नाम्न्या श्री पार्श्व वि० का० प्र० तप०
ग० श्री विजय देव सूरिभिः ।

(515)

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिरे सुदि ५ रवौ श्री मालदास भार्या -- पार्श्व वि० कारापित ।

(516)

सं० १८५२ पोष सु० ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द
गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद टोडरमल्लेन श्रेयोर्थं ।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर ।

(517)

सं० १२१४ आषाढ सुदि २ श्री देवसेन संघे स० रामचन्द्र भार्या मना - ।

(518)

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ --- सुहव भा० --- ।

(१२२)

(519)

ॐ संवत् १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीधरगच्छे श्री यशोभद्रसूरि संताने । अ० जगधर भार्या जमति पुत्र क्रांक्षण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ क्रांक्षण श्रेयसे श्री अजितनाथ विंश कारितं । प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

(520)

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू -- ।

(521)

संवत् १४८३ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय बहरा घड़ला भार्या ललता देवि सावित्रीदास हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंश कारित प्रतिष्ठितं । नागेंद्र गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पद्वे श्री सह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु ।

(522)

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवी अ० कावा भार्या विजी-परनागह प्रणमति ।

(523)

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपार्श्व विंश प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(524)

संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घीलहरण पु० सा० छेयतन श्री श्रेयांसनाथ विंश कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(१२३)

(526)

सं० १९३५ वर्षे माघ कृष्ण पंचमी भृगो अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय
बृह्म शाखायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या वार्ड रुकमिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ
विं० कारापितं महारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा वीरुटे ।

छोटे दादाजी का मन्दिर ।

(527)

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे तिथौ ८ बुधे महारक श्रीजिन कुशल सूरि पादुका
कारिता श्री स्याहजानावाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च बृहद्महारक खरतर
गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री मद्रादस्याह अकवर स्याह विजय राज्येशुभं
भूयात् ॥ संवत् १९०८ मिति चैत्र शुदि १२ सूर्यवारे श्रीजिन नंदि बर्द्धन सूरिभिः विजय
सधर्म राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या
राधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात् ॥ श्रीमान्माणिक्य सूरि शाखायां पाठक मति
कुमार तच्छिष्य हर्ष चंदोपदेशात् ॥

(528)

॥ संवत् १९२९ वर्षे वैशाख मास शुक्ल पक्षे ३ श्रीमाल ज्ञातीय धीधीद गोत्रे वखतावर
सिंधकस्य भार्या महताव वोवी श्रीशांतिनाथ विं० प्र० कारापितं प्रतिष्ठितं बृहत् खरतर
गच्छे श्रीजिन श्रीकल्याण सू० ।

(१२४)

(529)

श्री सं० १६७२ मिः माघ शुक्ल ६ शनिवासरे रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०
भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इंद्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त श्री
संचेन प्रतिष्ठितं जं यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पदा
श्रिते भ० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संचस्य
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक महा
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुए ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरौ श्री यश सूरि गच्छे श्रे० नागड सुत आसिग तत्पुत्र
रालहण धिरदेव मान् सूरिपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विंवं कारापिता ।

(531)

संवत् १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देवल
दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहडादे पु० संसारचंद । सामंत सोभा स० श्री
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

(१२५)

(532)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ गुरी श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो
सुता श्रे० द्यघा वीघा विरा भार्या भीमा पूना भगिनी हरष एतेषां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

(533)

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहूर पु० रानपाल
भा० कपूरी पुत्र - हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं०
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

(534)

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ६ रवौ ऊ० आर्डिचणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र
दसूरकेन आत्मश्रेयसे सितलनाथ वि० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

(535)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हीरा भा०
हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपापक्षे
श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(536)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरी श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे०
सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुत गाईया गुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या
श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा श्री उदय बल्लभ सूरिभिः ॥

(१२६)

(537)

संवत् १५२५ वर्ष चैत्र वदि ९ शनी प्राग्वाट ज्ञातीय श्र० सोमा भा० सूहूला सुत
सिवा भार्या सोमागिणि सुत् पद्मा भार्या पहती श्री सुविधिनाथ विंवं का० सद्गुरुषु
देशेन विधिना प्र० विंवं-----छ ॥

(538)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० प्राग्वाट ज्ञा० म० हेमादे सु० बर्डजा स्वसाकला
नाम्न्या श्री नेमिनाथ विंवं कारितं प्र० वृद्ध तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

(539)

सं० १५२८ माह व० ५ बुधे श्री ओस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहड़ पुत्र वीका
भार्या वीलहणदे पुत्रैः साह कोहा केलहा मोकलारुयैः स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं का०
श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्न सूरिभिः प्र० ।

(540)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ बुधे श्री पत्तन वास्तव्य मोठ ज्ञातीय ठ० भोजा भार्या
वाली सुत ० ठ० रत्नाकेन भार्या रूपार्ड सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं स्व
श्रेयोर्थं श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ श्रीलक्ष्मी सागर सूरीणा
पहे प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

(541)

सं० १६०३ वर्ष आषाढ वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे
पुत्र मानसिंघ भा० घेतसी युतेन स्वश्र यसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ०
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१२७)

(542)

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उसवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० भयरव
भा० भरमादे पुत्र मे० सुरताणारुयेन श्री सुविधिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे भ०
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(543)

संवत १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेढता नागर वास्तव्य उसभ गोत्र की० जयता
भार्या जसदे पुत्र की० दीपा घनाकेन श्रीपार्श्व वि० का० प्र० तपा गच्छे भ० श्री विजय
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू- - ।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

(544)

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० घन्नल सुत्त जैमल श्रेपोर्थे- -कारितः ॥

(545)

सं० १३७६ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय महं कंधा भार्या- - - पुत्र मारुह
श्री शांतिनाथ वि० का० प्र० श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(546)

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाट - - - स्व श्रेयसे पद्मप्रभ विं० का० श्री सोम
सुंदर सूरिभिः ।

(१३८)

(547)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख सु० ३ रवी रहुराली (?) गोत्रे सा० वीजल भार्या विजय श्री
पु० रावा-----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ वि० प्र० श्री धम-----श्रीपद्म शेषर सूरिभिः ।

(548)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जीलहा
केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम
हंस सूरिभिः ।

(549)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनी श्री षंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया
गोत्रे सा० महूण पु० षोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लषी पु० करमा नालहा सहितेन
स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत विंशं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(550)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनी उकेश ज्ञातो तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दादू
भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ
विंशं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(551)

सं० १४९० वै० सु० शनी श्री मूलसंघे नंदिसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री
कुंद कुंदाचार्यान्वये भहारक श्री पद्मनंदि देवाः सत्पट्टे श्री सकल कीर्ति देवाः । उत्तरे

(१२६)

अख्योभि (१) हं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मधूसुत विरुआ
भातृ वीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रज्ञ चतुर्विंशति पट्टः कारितः
तच्च सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

(552)

सं० १४९२ वर्षे मार्गशिर वदी १ गुरुवारे श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव
राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं
कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

(553)

सं० १४९९ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा भावल दे
सुतव्य० वेला पत्न्या वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर
सूरिभिः ॥श्री॥

(554)

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि १२ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सं० रामा मातृ
शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अभिनंदन नाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री
साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गोरईया वास्तव्य ॥

(555)

॥ १५१६ आषाढ सु० ५ ओष्ठे गोत्रे सीवा भार्या रूपा पु० तोल्हा तेजा -----
पद्मावति प्रणमति ।

(१३०)

(556)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे बुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी पु० नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नाषा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा० सोढा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

.....

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुके प्राग्वाट ज्ञा० श्री० डउठा भा० हरषू सु० श्री० नागा भा० आजी सुत श्री० जिनदासेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं आगम मच्छे श्रीदेवरत्न सूरि गुरूपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं ।

(558)

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुके उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस गच्छे सा० सोभा भा० घनाई पु० साधू सुहागटे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति माथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्कू सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं० १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पलहयउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा० वेलहा तत्पुत्र सा० सांगा --- प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं । वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(१३१)

(560)

सं० १५२४ आषाढ शु० १० शुक्रे उकेश वंशे--भा० संपूरा पु० जेसाकेन भा० धर्मि-
णि पु० माईआ पोत्र इसा वीसालादि कुटुंब युतेन पु० माडया श्रेयसे श्री नमि विंव का०
प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(561)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र वदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवाणि सं० गो-
ला भा० कर्मा पु० नरबदेन श्री श्रेयासनाथ विंव कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु
सुंदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा ।

(562)

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उकेशवंश भ० गोत्रे सा० नीवा भार्या पूजी
सा० पूना श्रावकेण भातृ सजेहण मा० अंवा परिवार युतेन श्री संभवनाथ विंव कारितं
प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(563)

संवत् १५४७ वर्षे मा० वदि ८ दिने प्राग्घाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देपू पुः मेरा
भा० हीरू श्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंव प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(१३२)

(564)

॥ संवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछाच गोत्र मा०
षीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंडेरग
गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः ।

(565)

सं० १५५६ (?) वर्षे आषाढ सु० १० सूरणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र स०
हेमराज भार्या हेमसिरी पु० प्जा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म
घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पद्मे नंदिवर्द्धन सूरिभिः ।

(566)

सं० १५५६ वर्षे आषाढ सुदि १० आईचणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन
भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रोपदी पौ० कसा पीघा
श्रोवंत युतेनात्मपूण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-
गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ द्युधे गोठि गोत्रे सा० - - - तत्पु० पहराज तत्पुत्र
राठा- - - त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजन-
चन्द्र सूरिभिः ।

(१३३)

(568)

संवत् १५७९ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र रत्न मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महामगरे ।

(569)

सं० १६०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथी श्रीअजमेर पूर्वा श्री चतुविंशति जिनमातृका पद्म लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर जंगमयुगप्रधान ज० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये ।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें ।

(570)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले बड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण भार्या तारू पुत्र सा० लषाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रीयसे श्रीशांतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पं० पुण्यनन्दन गणीनामुपदेशेन ।

(१३४)

जयपूर ।

याति श्यामलालजी के पासकी मूर्तियों पर

(571)

सं० १३ -- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड बागड (?) गण श्रीमन् --
मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० बाहड भार्या लाछि सुत भीमा भार्या राजलदेधि श्रेयोथं
सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति ।

(572)

सं० १४३६ वर्षे पौष ६ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० -- -- मायलदे पु० सामलेन
श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीद्युद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे । ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा०
धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ
विंवं कारितं श्रीम० तपागच्छे -- -- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० धर्मा भा०
धर्मादे सुत भोजाकेन भा० मली प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति
पहः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत्त सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(१३५)

याति किसनचन्दजी के पासकी मूर्तियों पर ।

(575)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे बटदेव पुत्र विसल पुत्र लषमणेन मातृ वीरी
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

(576)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ८ शनी श्री--- गच्छे --- जलहर गोत्रे सा० लुणाभा० लुणादे
पुत्र पविन पालहा सानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विंशं कारि० प्र० ---।

(577)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या सासु
पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंशं कारितं श्री पल्लि गच्छे ---- ।

(578)

संवत् १५०९ वर्षे ऊएस वंसे सा० हऊदा भार्या आलूणादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल
गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंशं कारितं ।

(579)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीष्ठा गोत्रे सा० वादी भ० षोमाइ सु० त्रिउण
श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रोवंत साजण प्र० कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ विंशं कारितं रोद्रपल्लिय
गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पद्मे प्रतिष्ठितं श्रीगुण सुंदर सूरिभिः ।

(३३६)

(580)

संवत् १५५६ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंदेन
भा० हीरादे पुत्र पुना धूनार्द कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र०
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

(581)

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुष्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० प्रैरवदास भार्या भर्मादे नाम्ण्या श्री नमिनाथ विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे महारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(582)

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ----हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ
विं० गृहीत घ० ट० श्रोतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

जोधपुर ।

यह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

धातुओंके मूर्त्तिपर ।

(583)

सं० १४५६ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्रो सषदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन
पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः ।

(३३७)

(584)

सं० १४८० वर्षे वैशाख सु० ३ धांधगोत्रे सा० मोल्हा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण
भार्या सिरिधादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(585)

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादियुतेन
श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(586)

सं० १५०३ आषा० सु० ६ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराज भा० सीता पु० पीद
भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विंवं कारापितं श्री - - र्षि गच्छे
श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शेषर सूरिभिः तपा पक्ष ।

(587)

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती भंडारी गोत्रे सा० सोमाभा० सोम श्री पुत्र हीरा
केन आत्म० श्री श्रीयांस विंवं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेषर सूरि पट्टे श्री
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

(588)

सं० १५१७ वर्षे चैत्र सु० १३ गुरौ उप० ज्ञा० म० नूणा भा० माणिकदे पु० सांडा भा०
वाल्हणदे पुत्र पेतसि वास० प्रा० मा० श्र० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० ब्रह्मणीया ग०
श्री उदय प्रभू सूरिभिः ।

(३३८)

(589)

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सु० ३ नना ज्ञा०श्रे० जइता भा० परि पुत्र गेला भा० वाली नाम्न्या पुत्र अमरसी भा० तिलू सजन कवेला मातृदूसी ज्येष्ठमाला प्रमुख कुटुंब युतया स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(590)

✓ सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य भ० पद्मनांदि तत्प० भ० श्रीसकल कीर्त्ति तत्प० भ० श्री विमल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं । श्री जे संग भा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय ।

(591)

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ९ बुधे श्री - - - गोत्रे सा० भादा भा० सावलदे पु० मेलाकेन भा० मालूणदे पुत्र वींभा कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पट्टे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः ।

(592)

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण भा० राउं सु० मीदा भा० भावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री जीरापलीय गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पट्टे श्रीसागर नांद सूरिभिः शुभं भवतु

(593)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे भ० श्री भुवन कीर्त्ति स० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरुपदेशे - -

(१३९)

(594)

सं० १५५१ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ वृष वासरे साइ चांपा भार्या मेघू हुंगर भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक छोली बाल गच्छे महारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(595)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरी प्रग्वाट झा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदो
--- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंवं का० प्र० पूर्णिमाक गच्छे
---सागर सूरि--- ।

(596)

सं० १५६५ वर्षे वैत्र सु० १५ गुरी उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिगदे पु० तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० बीकलदे पु० नामना डामर द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः ।

(597)

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवी श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या धम्मार्ह सुत बीसा सूरु भार्या लाली द्वि० भार्या अरघार्ह घर्म अयसे श्री शीतलनाथ विंवं प्रति० सिद्धांती गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र० ।

(598)

॥ अं संवत् १५६५ वर्षे वैशाख वदि १३ रवी ढेढीया ग्रामे श्री उएसवंशे सं० बीदा भार्या घरण पुत्र सं० तोला सुआवकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० लक्ष्मण भ्रातृ

(१४०)

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भावसागर सूरीणा
मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पट्टे कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन ।

(569)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिग
पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा०
हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिषमदास भार्या अमरादे सुत
अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण
सागर सूरिपट्टे श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः ॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन-भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद
करापितं ।

देविजीके मूर्त्तिपर ।

(४ भूजा + सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे बीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत
घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवी वेङ्करुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं ।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवोर पु० सा० सूर
भा० सूरवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल श्री० सूरवदे आत्मपुण्यार्थं
श्री शान्तिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(१४१)

(603)

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशापीय पोसालेवा गोत्रे
सा० पीमा भा० अधी-पु० सा० श्रीवंत भा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपा-
शर्वनाथ विंवं का० श्री कीरट गच्छे श्री कक्कू सूरिभिः ॥ श्री ॥

(604)

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उक्केश ग्रंशे व्य० परवत भा० फदकु
तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान कर्मा निज
- - - परिवार श्री योर्थे आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्रीमपल्लीय भ०
श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति भद्रं ।

(605)

ॐ संवत् १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य सोनी मनजी भार्या
मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्री श्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारा-
पितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरेश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर—मोती चौक ।

(606)

ॐ ॥ संवत् १२३९ द्विः वैशाख सुदि ६ शुक्रे पत्यपद्र वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे भ०
श्री देवाचार्य सत्क श्री नवत्सार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सलखणायाः श्री योर्थे श्री पार्श्वनाथ
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धि सागराचार्यैः ॥

(१४२)

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसींह भार्या देलूषदे पुत्र रेडा भार्या
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवा का० प्रति०
श्री घर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्ले श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजेन
पितृ मातृ आतृ समधर सारंगा भी मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विंवा
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ॥

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकीर्ति -- घर्मनाथ विंवा
प्र० वाई तपदे जा० कालहा -- ।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुकंट शास्त्रायां ठ्यै० तोला भा०
बेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीलहादि पुत्र पीत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवा
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० झंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा०
विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विंवा
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शान्ति सूरिभिः ।

(१४३)

(612)

सं० १८९३ ना मा । सु० १० वु० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्रीओसवाल ज्ञातीय शृद्ध
शाखायां संघ माणक चंद्र तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विंवस्य भरापोतं ।

(613)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । महारकीयेन सुयंत्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किल
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदुच्यं सिद्धेयः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते ।
अठ्ठे वैशाखमासस्य तृतीयायां सिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर ।

(614)

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० व्य० काला भा० कालहणदे सु०--पद्म
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र० ।

(615)

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२दिने नाहरवंशालंकारेण सा० चङ्गसिंह पुत्रेण आतृ
सा० सलकेन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः
श्री खरतर गच्छेशः ॥

(१४४)

(616)

सं० १४६६ वर्षे फागुण वदि २ गुरी श्री तावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जस-
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठायलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्त्तिका
चार्य सं० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवी उके० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुत श्री धर्मनाथ विंशं कारितं श्रेयसे
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः
श्री पद्म प्रभ विंश ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडतप श्री वन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

(619)

सं० १४६३ जेठ वदि ३ मंगले उप० झा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वीरहणदे पुत्र
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंशं का० प्र० वृहत्त गच्छे देवाचार्यान्वये
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे दोसी-धर्माकस्य पुण्यार्थे दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः
श्री श्रेयांस विंशं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(१४५)

(621)

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० श्रीमती सा-
पाभ्यां भा० मदीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विं०
का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्री जयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

(622)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरी उपकेश वंशे जारंडडा गोत्रे सा० विमपालात्मज
सा० गिरराज पुत्र सहदेवो भ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि विं०
का० प्र० तपा भट्टारक श्रीं हेमहंस सूरिभिः ॥

(623)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ आहतणा (आईचणा ?) गोत्रे सा० घना भा० रूपी
पु० मोकल भा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकल श्रेयसे श्री संभवनाथ विं० का०
उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० भ० श्री कक्क सूरिभिः ।

(624)

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दशरथ भा० सार्मिनी सुत माना
केन भा० राना भातृसालू भा० सोढी कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्री शांतिनाथ विं० का०
प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः नलुरीया गोत्रः ॥

(625)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ चंद्रे उपकेश ज्ञातो आदित्यनाग गोत्रे सा० तेजा
पु० जासी-भा० जयसिरि पु० सायर भा० मेहिणि नाम्न्या पु० गुणा पूता, सहज सहितया

(१४६)

स्वपुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंशं का० प्र० उपकेश ग० कुक्रदाचार्य स० श्री देव गुप्त
सूरिभिः ।

(626)

सं० १५६३ वर्षे माघ सु० १५ गुरौ उ० विदाणा गोत्रे सा० रतना भा० रतनादे पु०
रामा० रूपा स० पि० श्री कुंथनाथ विंशं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः
श्रेयात् ॥

दिनाजपूर ।

श्री मूलनायकजीके विंशं पर ।

(627)

--- सु० ४ श्रीचन्द्र प्रभ जिन विंशं संघेन कारितं प्रतिष्ठितं च ॥ श्रीजिनचन्द्र
सूरिभिः ॥ श्री विक्रमपुरे ।

धातुके मूर्तियों पर ।

(628)

संवत् १४४७ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे श्री अंचल गच्छे श्री मेरुतुंग सूरिणामुपदेशेन
शानापति ज्ञातीय मारू ठ० हरिपाल पति सूरुष सुत मा० देपालेन श्री महावीर विंशं
कारितं । प्रतिष्ठितं च श्री सूरिभिः ॥

(629)

सं० १५१५ वर्षे फागुण वदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय लघुशाखायां श्रे० अर्जन भा०
मंदोअरि पितृ मातृ श्रेयसे सुत गोईंदेन भा० माकू पुत्र मेहाजल सहितेन श्री कुंथनाथ

(११७)

विद्यं कारितं पूर्णिमा पक्षे भोमपल्लीय महारक श्रीजयचंद्र सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं
॥ श्रीः ॥ छ ॥

(630)

सं० १५३१ वर्षे माघ वदि ८ सोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्री० भरमा भार्या भरमादे
पुत्र आसा भार्या वर्हरामति नाम्न्या स्वभर्त्त पण्यार्थं आत्म श्रेयोर्थं श्री जीवित
स्वामि श्री सुविधिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री धर्मसागर सूरिभिः ।

(631)

सं० १६२७ वर्षे वैशाख वदि १० श्री मूलसंघे श्री सुमति कीर्त्ति गुरुपदेशात् का०
जो देवसुत को० सिंघा सु० धर्मदास हरिदास अनंतनाथ नित्यं प्रणमति ।

(632)

सं० १८४४ रा मित्ती अषाढ सुदी १३ श्री नेमनाथजी वि० ॥ छ ॥

दादाजी के चरण पर ।

(633)

सं० १८४८ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ तियो बुधवारे । श्रीजिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥
श्री जिनकुशल सूरिजी पादुका ॥ श्री जिनदत्त सूरिजीरा पादुका ।

(१४८)

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रस्वभदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्ति स्वामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहवोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर ।

(635)

सं० १५१६ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्री० पोमा भा० पोमी सु० जात्रलकेन भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेम स्वपितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवां का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।

पाषाण पर ।

(636)

श्री कायासवास वासीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (?) आदिनाथ प्रणमामि --
विक्रमादित्य संवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथौ वृध दिने चादी नाधुराल ---।

(637)

✓ श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत् १५७२ वैशाख सुदि ५ वार सोम-
वार श्री जशकराज श्री कला भार्या सोवनवाड़े चीजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ
नाथ प्रणम्य कहीआ फीईआ भार्या भरमी तस्या पवेई सा० भार्या हासलदे तस्य पग-
कारादेव रारगाय म्नात वेणीदास भार्या लास्टी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरपाल
श्री काष्ठा संघ --- श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिराज कुष श्री तां-री कुल --- ।

(१४९)

(638)

संवत् १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथी रविवासरे बृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन भक्ति
सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री १०५ श्रीजिनलाभ सूरिभिः । -- श्रीराम विजयादी प्रमुखे
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी -- ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

(639)

संवत् १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

(640)

संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे
श्री कुं -- ।

(641)

संवत् १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथी भृगुवासरे श्रीमूलसंघ काष्ठासंघ भट्टा-
रक श्रीरामसेनीन्वये तदाम्नाये भ० श्रीविश्व भूषण भ० यशः कीर्ति भ० श्रीचिमुव्रत
कीर्ति -- ।

(642)

संवत् १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्रीमूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री
श्रीकुंदकुदाचार्यन्वये भट्टारक श्रीसकल कीर्ति स्तदन्तर भट्टारक श्रीदामकीर्ति -- ।

(१५०)

(643)

संवत् १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ सोमवासरे महारक श्री विजय रत्न केशवर तपागच्छे काष्ठासंचे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचंद्र जी तस्यभार्या वाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री चातु जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं ।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्तया पद्मावस्थाः पदाम्बुजं । प्रशस्तिलिलरुयते पुण्या कवि-
केशर कीर्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः । वामांग मानस विकासन
राजहंसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति । ध्रुवेव मंडनकरा करूणा समुद्रः ॥ २ ॥
श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये । प्राज्यो गुणैर्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदत्त स्थिर-
तामुपैतु । संपश्यतां सर्वं सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा । सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद्र महा साधः । तपे गच्छमें तप जप तपो
उयत्त उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवी परगट कीधः । खेमतणो मन षा
तिसु लाहो भवनो लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद्र । उच्छ्रव क्रिधा
अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिङ् सुध गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास । सारे ही
प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम
राषो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त । सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंद्रहः । संघ मनुष्य सिरदार सहस
किरण सुषक्रे कंदहः ॥ बल्लभ दोसी बीर धीर जिन धर्म धुरंधरः । मुलचंद्र गुण मूलहीर
धोया उरगुणहरः ॥ सकल संघ सानिधकरः सुमतिचंद्र महासाधः । पास सदन कियो प्रगट

(१५१)

निश्चल रहो निरवाचः ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूजयकृद कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविल
लितायै संघेन सत्सीम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीघो
गुणहेर । रचयोविंशजिनराजको करुणा वंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या । शशीव सुख राज वर्षे ।
माघव मासे वलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुशारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-
गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवादयः । जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंवकं ॥ १३ ॥

श्री संवत् १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ
पार्श्वनाथ विंव प्रतिष्ठितं घृहत्तपा गच्छीथ सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

(645)

स्वस्ति श्री संवत् १८७३ वर्षे शाके १७३९ वर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-
मासे शुभे शुक्रपक्षे चतुर्दश तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार
गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक साह
श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक सिवलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम
ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भद्र रक शिरोमणि भट्टारक श्री श्री
विजय जिनेंद्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री घुलेवानगरे ॥ भंडारी दुर्लचंद
आगुंछइ ॥

दादाजी के चरण पर ।

(646)

संवत् १९१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री घुलेवानगरे श्री क्षेम
कीर्त्ति शाखयोद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजीगणि शिष्य महोपाध्याय शिवचंद्र

(१५२)

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सद्गुरुधरण कमलानि कारि-
तानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानि च वर्त्तमान श्री वृहत्स्वरत्नर गच्छ भट्टा-
रकाज्ञयाश्च श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिनकुशल सूरिणां चरणन्यासः ।

पालिताना ।

श्वेताम्बरियोका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठिया-
वाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है ।

मोती सुखियाजीका मन्दिर ।

(647)

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० आमा भा० सेगू सुत परवतेन
भा० माई कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्री श्रेयांस नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जय-
चंद्र सूरिभिः ॥ गणवाडा वास्तव्यः ।

(648)

संवत् १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधो गोत्रे अंविका भक्त ।
सा० छाजू सुत सेंधा पुत्र सूरु भा० मेथार्ड सु० साजंया भा० मकू नाम्न्या स्व श्रेयोर्थे
श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

(649)

संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय द्य०
चहिता भा० लाली पु० द्य० नारद भार्या नारिग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुख

(१५३)

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थं । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठित तपागच्छे
श्री सुमत्तिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छे नायक श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ श्री ॥

सिद्धचक्र पट्ट पर ।

(650)

संवत् १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ बुधे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय म०
वृत्ताकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः ।

सेठ नरसी केशवजिका मन्दिर ।

(651)

संवत् १६१४ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी देवा भार्या देवति सुत
दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुधजी नाम्न्या पितु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विं वं कारा-
पितं तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य पं० धर्मविजय गणिना प्रति-
ष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

(652)

संवत् १८२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ शुदि ७ तिथौ गुरुवासरे श्रीमदंघल
गच्छे पूज भट्टारक श्री रतन सागर सूरिश्वरणामुपदेशात् श्री कच्छदेसे कोठारा नगरे
ओशवंशे लघुशाषायां गांधिमोती गोत्रे सा० नायकमणजी सा० नाक नणसों तस भार्या
हीरवाई तत्सुत सेठ केशवजी तस भार्या पावी वाई (तत्पुत्र नरसी भाई नाना मना)
पंचतीर्थी जिनविं वं भरापितं (अंजन शलाका करापितं) अठास गण ।

(१५१)

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय वय० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । वय० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतै सात्म श्रेयोर्थे आदिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १८२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरी श्रीमदंचलगच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्धार्या पूरवाईना पुण्यार्थे श्री पार्वनाथ विंश कारितं सकल सघेन प्रतिष्ठितं ।

(655)

सं० १८२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरी श्री मदंचल गच्छे पूज महारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्धार्या देमतवाई तत्पुत्र सा० अत्रयचंदेन पुन्यार्थे शांतिनाथ विंश कारितं सकल सघेन प्रतिष्ठितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दर्जी का मन्दिर

(656)

संवत् १६८३ वर्षे वैशाख शुदि ६ गिरी वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या वाई अजाई

(१५५)

सुत सोनी बमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई शीति एतेन श्री विजयनाथस्य विंवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

(657)

सं० १३८३ वैशाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कीलहण देवि श्रेयसे सुत कीकमेन श्री महावीर विंवं कारितं प्रति०

(658)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं । आसो सुतेन देवाकेन स्ववांधव सहजा हरिचन्द पति पेटा-श्रियो निमित्तं श्री विमलनाथ विंवं कारापितं प्र० श्री हेम हंस सूरिभिः ।

(659)

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडोआ सा० साईआ भार्या सिरि-आदे पुत्र सा० भोला सा सुश्रावकेण भार्या कन्हार्ई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पघ राज भ्रातृद्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुदुंब सहितेन श्री विधिपक्ष गच्छपति श्री जयकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ आ-चन्द्रार्कं विजयतां ॥

(660)

सं० १५१५ वर्षे माह शुदि ५ शनी प्राग्वाट झा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया हांसलदे सु० मूल भा० अरषू सु० भोजा हासा राजा भा० प्रकू सु० हीरामाणिक हरदास

(१५६)

युतेन स्वपूर्विज पितृ श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री
श्री पाद प्रभ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

सं० १५१६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शनी प्रा० सा० काला भा० मालहणदे पुत्र स० अर्जुनेन
भा० देज आतृ सं० भीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री वासु
पूज्य विंश का० प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपट्टे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

संवत् १५२८ वर्षे वेशाष वदि ११ रवी श्री उकेश वंशे सा० चाचा भा० मायरि सुत
राजाकेन भार्या वरजू सहितेन श्री सुविधिनाथ विंश कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष
सूरिभिः ।

(663)

सं० १५२९ वर्षे फा० वदि ३ सोमे स० वाछा भा० राजू सु० महीपालेन भा० अहवदे
पुत्र वसुपालादि युतेन भा० संपूरो श्रेयोर्थं श्रीमुनि सुव्रतनाथ विंश कारितं प्र० तपा
गच्छेश श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(664)

संवत् १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवी श्रीश्री वंशे श्रे० देवा भा० पाचू पु० श्रे० हापा
भा० पुहती पु० श्रे० महिराज सुश्रावकेण भा० मातर सहितेन पितृ श्रेयसे श्री अंचल
गच्छेश जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सुमतिनाथ विंश कारितं प्र० श्री संघेन ।

(१५७)

(665)

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशरसूरिणामुपदेशेन उएशवशे सं० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्या युतेन स्वश्रेय से श्री अजितनाथ विं० कारितं प्रतिष्ठितं सु----।

(666)

संवत् १५३९ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरी श्रीश्री वंशे ॥ श्री० गुणोया भार्या तेजू पुत्र अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य विं० का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(667)

सं० १५६६ वर्षे माह षदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विं० कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरीणां पट्टे श्रीश्री कक्कसूरिभिः कालू-र ग्रामे ॥

(668)

सं० १५८३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति मं० वानर भा० रही पु० म० नाकर मं० भाजी म० ना० भा० हर्षादे पु० पघु वनु भोजा भार्या भवलादे एवं कुटुंब सहिते स्वश्रेयोर्थे सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० विवदणीक ग० भ० श्री देव गुप्त सूरिभिः । भारठा ग्रामे ।

(669)

सं० १६९४ व० माघ सुदि ६ गुरी देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृद्ध सा० जसमाल सुत सा० राजपालेन भा० वाह पूराई प्रमुख कुटुंब युतेन श्री सुमतिनाथ विं० का० प्र० तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१५८)

(670)

सं० १६८४ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उकेश ज्ञातीय बृद्ध शापायां
सा० राजपाल तद्वार्या वा० पूराह सुतसा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विव प्र० तथा
गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ।

यति कर्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर ।

(671)

संवत् १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० बर्द्धन गोत्रे श्रे० वना भार्या वनादे
सुत श्रे० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांडादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ
विंघं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनक्ष सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः ।

(672)

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञाती पीहरेचा गोत्रे सा-गोवल पु०
सा--भा० धारुपु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड । भा० चड --- पितुः श्रे०
श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्रीककू सूरिभिः ॥ श्री कुक्कुदाचार्य संताने ॥

गांव मन्दिर बड़ा ।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाल वंशे व्य० जीदा १ पुत्र व्य० जेता-
णंद २ पु० व्य० आसपाल ३ पु० व्य० अजयपाल ४ पु० व्य० वांका ५ पु० व्य० श्री वाउडि ६
पु० व्य० अणंत ७ पु० व्य० सरजा ८ पु० व्य० धीघा ९ पु० व्य० राजा १० पु० व्य० देपाल ११

(१५६)

पु० वसनाना १२ पु० वय० राम १३ पुत्र वय० मीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर
सुश्रावकेण भा० गउरी पु० भूभव पौत्र लाडण वरदे भातृ समधरीसायर भ्रातृ वयसगरा
करणसी- सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय
केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री
भवंतु ॥

(674)

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञा-
तीय दो० मोटा भा० रत्तु पु० वीरा भा० वानू पु० लषा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन
श्री शांतिनाथ विंवं स्वश्रेयोर्यं कारितं श्री संघ प्रतिष्ठितं ॥

(675)

सं० १५४८ वर्षे कातिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय घामी गोवल भा० आपू
सु० वावा भा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ स्वामि वि० का० प्र० चैत्रगच्छे
श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

(676)

सं० १५४९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह भावड भा० भरमादे
आत्मश्रेयोर्यं श्री जीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उसवाल
गच्छे श्रीकक्कू सूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(677)

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत
दो० भरणा भार्या कूयटि सुत दोसी बहु भार्या वल्हादे तेन आत्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

(१६०)

संभवनाथस्य चतुविंशति पट्टः कारापितः श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्रीगुणरत्न सूरि पट्टे
आचार्य श्री गुण वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री जीर्ण दूर्ग वास्तव्य ॥

(678)

सं० १६०३ वर्षे चैत्रवदि १३ रवौ उ० टप गोत्रे --- क सा० नरपाल भा० रंगाई पु०
महिराज सोहराज धनराज श्री महिराज भार्या धनादे पु० धनासुतेन स्वपुण्यार्थं श्री
पार्श्वनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संढेर गच्छे भ० श्री यशोमद्र सूरि संताने श्री
शांति सूरिभिः ।

(679)

सं० १९२१ व० माह सु० ७ गुरुवासरे श्री जिनविंशं प्र० सा० जीवा अषाजी - - - - ।

दिगम्बरी पंचायती मन्दिर ।

(680)

✓ संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि तेरस गुरौ श्रीमूलसंघे सरस्वति गच्छे बलात्कार गणे
भट्टारक श्रीविद्यानंदि गुरुपदेशात् ब्रह्मपदमाकर कारापिता ।

श्री शत्रुञ्जय तीर्थपर टोकोमें पञ्चतीर्थीयों पर ।

साकरचंद प्रेमचन्द टोंक ।

(681)

सं० १५०८ वर्षे मार्गशोर्ष वदि २ बुधे श्री दूताड गोत्रे सा० भूना भार्या मोल्ही
एतयोः पुत्रेण भा० नाजिग नान्याः पित्रो पु० श्रीचंद्रप्रभ विंशं का० प्र० श्री वृहद् गच्छे
श्री रत्नप्रभ सूरि पट्टे श्री महेंद्र सूरिभिः ॥

(१६१)

प्रेमा भाई हेमा भाई टोंक ।

(682)

सं० १५३२ वर्षे उषेष्ठ बदि १३ बुधे आसापद आ (?) श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मेघा सुत सा० कर्मण भार्या कर्मादे पुत्र व्य० समधर भार्या वईजू पुत्र व्य० सहिता व्य० सहिता व्य० सिंहदत्त व्य० श्री पति आत्म श्रेयसे सा० सहिसाकेन भार्या अमरादे --- युतेन श्री आदिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितश्च वृद्धतपा पक्षे श्री श्री उदय सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

प्रेमचन्द मोदी टोंक ।

(683)

सं० १३६८ वर्षे श्री० जगधर भार्या दमल पुत्र तीकतेन भार्या सहजल सहितेन - श्रेयसे श्रीशांतिनाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणचंद्र सूरि शिष्यैः श्री चर्मदेव सूरिभिः ।

(684)

सं० १३७८ प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० वयंजलदेव पुत्रिकाया वाएल -- मलधारि श्री पद्मदेव सूरि --- श्री तिलक सूरिभिः ।

(685)

सं० १८८१ वर्षे चैत्र सुदि ६ वार रवि दिने श्री वृद्धपोसल गच्छे -- श्री माली वृद्ध शाखायां सा० माणकचंद कुबेरसा -- भार्या वाई डाहीकेन श्रीसुमतिनाथजी विं वं भरापितः श्री आणंद सोम सूरिजी प्रतिष्ठितं सुख श्रेयस्तु ।

(१६२)

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ --- विंशं का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाही पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोयं
श्री महावीर विंशं का० प्र०----- श्री सालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्र सूरिभिः ।

(688)

सं० १३८७ --- श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ धणसोह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत
सादाकेन श्री अजितनाथ विंशं पंचतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नप्रभ
सूरिभिः ॥ छ ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० - - - श्रेयसे सुत भादाकेन श्री
आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरिणामुपदेशेन ।

(691)

सं० १४८६ वर्षे -- श्रीमाल - - आदिनाथ विंशं प्र० श्री नरसिंह सूरिणामुपदेशेन ।

(१६३)

(692)

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ६ रवौ उषवाल ज्ञा० म० पूना भा० मेलादे सु० वीजल भा०
डाही तयो श्रेयसे भातृ आसुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विं वं का० पूर्णिमापक्षे भीम
पल्लीय महा० श्री जयचंद्र सृरीणामुपदेसेन प्रतिष्ठितं ॥

(693)

सं १५१९ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा भा० नाऊ सुत जूठाकेन
पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विं वं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सुरि पहे
श्री वीर सुरिभिः ॥ बलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

(694)

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्रि रा० पुजा का ---- श्री नमिनाथ विं वं श्री
विजयदेव सुरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(695)

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुमतिनाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रभ सुरिभिः
पिप्पलगच्छे ।

सेठ वाल्हा भाई टोंक ।

(696)

संवत् १५२५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनी श्रीमूलसंचे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे
श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पदे भ० श्री सकल कीर्ति देवा तत्पदे

(१९४)

म० श्री विमलेंद्र कीर्ति गुरुपदेशात् श्री शान्तिनाथ हूँ वड़ ज्ञातीय सा० नाटू भा० जंमल
सु० सा० काहू भा० रामति सु० लषराज भा० अजो आ० जेसंग भा० जसमादे भ्रा०
गंगोज भा० पदमा सु० श्री राजसचवीर नित्य प्रणमंति श्रीः ।

(697)

संवत् १६२८ वर्षे वै० शु० १० शुधे श्रीमालज्ञातीय महपेता भा० हासी सुत मूलजी
भा० अहिबदे केम श्री वासपूज्य विंवं कारापितं श्री तपा श्री होर विजय सूरिभिः प्रति-
ष्ठितं शुभं भवतु ॥ छ ॥

मोती साह टोंक ।

(698)

सं० १५०३ ज्येष्ठ शु० ९ प्राग्वाट स० कापा भार्या हासलदे पुत्र काभनेन भार्या
नागलदे पुत्र मुकुंद नारद आतृ घना श्रेयसे जीवादि कुटुम्ब युतेन निज पितृ श्रेयसे
श्री नमिनाथ विंवं क० प्र० तपा गच्छे श्री जयचन्द्र सूरि गुरुभिः ।

मूल टोंक ।*

(699)

सं० १६६३ ना मित्ती ज्येष्ठ वदी १२ गुरुवासरे श्रोमकसुदाबाद वास्तव्य ओसवाल
जातीय वृद्ध शाषायां नाहार गोत्रीय सा० खडग सिंहजी तत् पुत्र सा उत्तम चंदजी तत्
भार्या वीवी मया कुंवर श्री सिद्धाचलीपरि श्री ऋषभदेवजी परी प्राशाद मध्ये

* श्री आदिशंकर भगवानके मूल मंदिरके ऊपर संग्रह कर्ताकी वृद्ध पितामही साहिबाकी प्रतिष्ठित यह आलेख का लेख है ।
इस महान तीर्थके और लेख प्रशस्ति आदि पञ्चस्त प्रकाशित होगे ।

आलोषे प्रतिमां विधि मया कुंवर स्वहस्ते स्थापितं प्रतिष्ठितं च श्री वृहत स्वरत्न
गण्डे प्र० । यं । जु । श्री जिन सौभाग्य सूरि जी विजै राज्ये प० देवदत्त जी तत् प्रि०
प० हीरा चंद्रेण प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

रैनपूर तीर्थ ।

मारवाड़के पंचतीर्थोंमें रैनपूर तीर्थ नलिनीगुल्म विमानाकार तेमफिला अगणित
स्तम्भोंसे भरा हुआ त्रिलोक्य दीपक नामक विशाल मंदिरके कारण जगत्प्रसिद्ध है ।
“आधुकी कोरणी रैनपूराकी मांडनी” देखने ही योग्य है ।

मंदिरकी प्रशस्ति ।

स्वस्ति श्री चतुर्मुख जिन युगादीश्वराय नमः ॥

श्रीमद्विक्रमतः १४८६ संख्य वर्षे श्री मेदपाट राजाधिराज श्री वप्प १ श्री गुहिल २
भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभर ६ सिंह ७ सहायक ८ राज्ञी सुत युतस्व सुवर्णतुला
तोलक श्रीखुम्माण ९ श्रीमदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्ति-
वर्म १४ जोगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ बैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्री अरिसिंह २०
चोडासिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ क्षेमसिंह २४ सामंतसिंह २५ कुमारसिंह २६
मयनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहूमान
श्रीकोतूक नृप श्रीअल्लावदीन सुरत्राण जैत्र वप्प वंश्य श्री भुवन सिंह ३२ सुत श्रीजय
सिंह ३३ मालवेश गोगादेव जैत्र श्री लक्ष्मसिंह ३४ पुत्र अजबसिंह ३५ भ्रातु श्री अरिसिंह
श्री हम्मीर ३७ श्री खेतसिंह ३८ श्री लक्षाहूयनरेन्द्र ३९ नंदन सुवर्ण तुलादिदान पुण्य
परोपकारादि सारगुण सुरद्रु म विधाम नंदन श्रीमोकल महिपति ४० कुलकानन पंचान-

नस्य । विषम तमाभंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडलकर बुंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभिमानस्य । निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य । म्लेच्छ महीपाल व्याल अक्रवाल विदलन विहंगमेन्द्रस्य । प्रचंड दोर्दंड खंडिताभिनिवेश नाना देश नरेश भाल माला लालित पादारावंदस्य । अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य । कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रताप व्याप पलायमान सकल थलूस प्रतिकूल क्षमाप श्वापद वृंदस्य । प्रबल पराक्रमाकांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातपत्र प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राज्ये तस्य प्रासद पात्रेण विनय विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमया भरणभासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति साहचर्य कृताश्चर्यकारि देवालयान्दंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण । अजा हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैनविहार जीर्णोद्धार पद स्थापना विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महार्थ क्रयाणक पूर्यमाण भवार्णव तारण क्षम मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावतंस स० सागर (मांगण) सुत स० कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत धरणाकेन ज्येष्ठ भ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं० लाषा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० स० धारल दे पुत्र जाज्ञा जावडानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण नरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार कारितः प्रतिष्ठितः श्रीवृहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि श्रीदेवेन्द्रसूरि संताने श्रीमत् श्रीदेवसुन्दर सूरि पट्ट प्रभाकर परम गुरु सुविहित पुरंदर गच्छार्थधराज श्रीसोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदंच सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख विहारः आचंद्रार्कं नंदाताद् ॥ शुभं भवतु ॥

(१६७)

पाषाण और धातुओंके मूर्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोमद्र सूरिभिः ---ल स्थाने देव
सरण सुत बीशके ---श्री गुह - - कारिता ।

(702)

संवत् १२६० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्री० बढपाल श्री० जगदेवभ्यां श्रेयीधं पुत्र
सामदेवेन भातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीयैः
श्री शांति प्रभू सूरिभिः ।

(703)

संवत् १४६६ वर्षे सा० साजण भार्या सिरिआदे पुत्र चांपाकेन भार्या चापल
देव्यादि कुटुम्ब्य युतेन अनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंवं का० प्र० तपा श्री सोम
सुन्दर सूरिभिः ।

(704)

संवत् १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्वाट व्य० करणा सुत रामाकेन भार्या तीचणि युतेन
श्री क सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर सूरिभिः ।

(१६८)

(705)

शत्रुंजयके नक्सैके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० जकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० घर्मा सं० केल्हा भा० हेमादे पुत्र स० तोल्हा षांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिभिः सकुटुंबैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव प्रासादे --- घन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमंतीर्थं नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं क्षेत्रं सिद्धाद्रिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रूसुपूजकस्य --- ।

(306)

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि— दिने श्री उसवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाघा पुत्र सा० धीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० मोतादे प्रमुख युतेन माता विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ षदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उग्र वंश शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विंश कारितं । प्र० वृ० तपा श्री उदयसागर सूरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे चरण विहारे ॥ श्री ॥

(११९)

सहस्रकूट पर ।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री बच्छ करावित (उत्तर तर्फ) वा० गांगादे नागरदात वा० साडापति श्री मूजा कारापिता धा० नीत्तवि० रामा० भा० कम --- ।

(709)

संवत् १५५२ व० मिगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० घणपति भा० चांपाई भाई मं० हरषा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वंश सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० धरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उसवाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः ।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उसवंश सा० आसदे भार्या सपांड सुत सा० साजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोग राजेन भ्रातृ सभागा स्वभार्या प्रथ० सोवती देती० सं० अखा --- सहजो सा० भाकर प्रमुख कुटुंब युतेन

(१७०)

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख
प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

(712)

संवत् १५८— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा०
उमला मातृ पुण्यापे श्री धम्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके स्वभे पर ।

(713)

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु
विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भद्वरक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन
श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री धरण विहार श्री महम्मदाबाद नगर निकट वच्युसमापुर
वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा०
नायकाभ्यां भावरधादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतील्या मेघनादाभिधो मंडपः
कारितः स्व श्री योर्थे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिचनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत् १६४७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथी गुरुवासरे श्री तपा
गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भट्टारिक श्री श्री श्री ४
हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री धरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा०

(१७१)

खेता नायकेन वर्द्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्वं दिक्कसत्क प्रतोली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात् । संवत् १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास भार्या गम्भीरदे अमोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे भहारक श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी चेला रतनसी

(716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन राणकपूर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधाने --- ।

(717)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरी दिने पूज्य परमपूज्य भहारक श्री श्री कक्क सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर मुनिना ॥ श्रीरस्तु ॥

(718)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनैश्वराणां चरणेषु । पं० शिवसुंदरः समागतः ।

(१७२)

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

(719)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ-विक्रमादित्य समयात्--
१६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णापक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री
उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साह श्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र
साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री त्रिभवणदे २ बहू
श्री असडवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है ।

(720)

संवत् १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

(721)

-- संवत् १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार --- ।

(722)

संवत् १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार --- राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये --- ।

(१७३)

(723)

संवत् १६६६ भाद्रपद शुक्र पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-
नाथ आसाढ भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री
सिंह सूरि राज्ये श्री संघेन लिखितं ।

(724)

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्र पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे
श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे महारिक श्री
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसोजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित
श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना वरजांगिन कृतं ॥ भ्रात्रोज
सामा मेया कला पुत्र कल्याण ॥ भानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा
शुभं भवतु - - -

(725)

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आसाढ शुक्र ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री
तेजसिंहजी राज्ये श्रीतपागच्छे महारिक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये ।

(726)

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च । संवत् १६७८ वर्षे शाके १५४४ प्रवर्तमान
द्वितीय आसाढ सुदि २ दिने रविवारे रावल श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पलिकीय

(१७४)

गच्छे महारक श्री यशोदेव सूरजो विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किका
कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु । उपाध्याय श्री कनक शेखर
शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजड़ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सूत्र
धारः ऊजल भातृ काका घडिता भवन कचरा- - ।

छत्रीमें ।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां युजाप्तोदया । घन्याचार्यपदावदात-
वदिताः श्री कीर्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रस्मणि विभा प्रोच्छासितां हिंद्वया ।
राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखपालान्वया ॥ - - - - -

बालोतरा ।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्तियों पर ।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात वाहड़
वीरदे श्री चार्थमकारि प्र० देव सूरभिः ।

(१७५)

(729)

सं० १४०१ वैशाख ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे स्व० कुलियात्मजा सा० काम पुत्रेण
स - - पुत्र श्रेयसे श्री शान्ति विंश कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ यदि ६ बुधे उपकेश ज्ञाती आविणाग गोत्रे सा० कालू पु०
वील्ला भार्या देवा आत्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विंश कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डोडा पुत्र सा० नाय - - -
सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विंश का प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरिभिः ।

(732)

सं० १५०८ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरौ उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - पुत्र
हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विंश कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

(733)

सं० १५०८ वर्षे - - उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० - - - श्री सुमतिनाथ विंश
कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(१७६)

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष यदि ६ शुक्रे श्री उपकेश ज्ञातीय श्री दूगड़ गोत्रे मं०
पनरपास पु० वछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाम्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंघु-
नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र परलीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पहे मं० श्री सोम
सुंदर सूरिभिः ।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने
सा० कुता भार्या लपमादे सा० डाहृत्य श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन
श्री घर्मनाथ विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरि पहे
श्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्ष गच्छके उपासेरमें केशरियानाथजी का देरासर ।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०८—वैशाख यदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति ।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र बुढाकेन भा० - -
कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री - ।

(738)

सं० १७१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे
वापणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - - ।

(१७७)

वाङ्मोड ।

गोपोंका उपासरा ।

धातुके मूर्तियों पर ।

(739)

सं० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० सालहा भा० ह्योसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा० गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(740)

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० सषो सु० सं० हेमा भा० हमीरदे मं० भचाकेन भा० वमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ विंवे श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

(741)

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्री० सहसा भा० मोली पुत्र जिन-दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ विंवं का० आगम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(742)

सं० १५१४ मा-शु० - प्राग्वाट ज्ञा० रूल्हाकेन भा० वजू सुत सा० वीरा माणिक

(१७८)

बछादि कुटुंब युतेन पितृव्य/सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ विंशं कारितं प्र० तपा श्री
सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पद्वे श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्श्वनाथजीका ।

सभा मण्डप ।

(743)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥ संवत् १८५६ वर्षे माह सुदि ५ शुक्ल पक्ष
प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउत श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका
नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान युग
प्रधान श्री पता श्री धर्म मूर्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं
श्री पार्श्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

(744)

सं० १९०३ माह अदि ५ शुके श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र फणा पार्श्व-
नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त मीणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थ कारापितं
तपा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च ।

दुसरा मंदिर ।

(775)

संवत् १५४० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० अस्ता
पितामहो कोल्हणदे सुत पितृ स० पवा मातृ राजश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

(१७९)

घरणा एतौ श्री आदिनाथ मुखयश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साधु रत्न
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंङ्गलि वास्तव्यः ।

(746)

सं० १५२० श्री मूल संघेन महारक श्री विजय कीर्ति श्री०

सभा मंडप ।

(747)

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ सुाद १५ रात्र वासरे खरतर गच्छ महारक श्री जिन
रत्न - - पुष्य नक्षत्रेः राजत श्री उदयसिंहजो विसरि विजय राज्ये जयराज्ये ॥ श्री
सुमतिनाथ रउ नववु कीउ श्री संघ करावउ सूत्रधार पीसा पुत्र नता नववु कीउ ।
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

(748)

सं० १६२८ वर्षे मद्रपद कृष्णपक्ष ७ बुध - - वृहत्खरतर गच्छे महारक श्रीमगत
सुर रावतजी श्री वाकीदासजी - - । जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतनाथजी-
शिणगार कीधी - - ।

(749)

॥ ॐ ॥ संवत् १३५२ वेशाख सुदि ४ श्री बाहडमेरी महाराज कुल श्री सामंत सिंह
देव करुयाण विजय राज्ये तन्नियुक्त श्री करण मं० वीरामेल वेलाउल भा० मिगन प्रभुत
बोधं अक्षराणि प्रयच्छति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संविष्टमान श्री विघ्नमर्दन

(१८०)

क्षेत्रपाल श्रीचउंड राज देवयो उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभया-
दपि उष्ट्र सार्थ प्रति द्वयो देवयोः पाइला पदे प्रियदश विशोप का० अर्दुर्दुर्न ग्रहीत-
व्याः । असौ लागो महाजनेन सांमतः ॥ यथोक्तं बहुभिर्बसुधा भुक्ता राजभिः समरा-
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डानियोंका मुहल्ला ।

(750)

संवत् १६७७ वर्स ॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाया तिथौ शनि रोहिणी योगे
श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पाताणी गोत्रोय सं भोजा भार्या भोजलदे
पुत्रेण संघपति धेतसोकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेय
से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर वट्टु श्री ऋषभदेव विहार मंडन सपरिकरं श्री आदिनाथ
विवं कारितं प्रतिष्ठापितं च प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च तपागच्छे श्रीमदकव्वर सुरन्नाण
प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक महारक श्री हीर विजय सूरि राज पट्टोदय
पर्वत सहस्र किरण यमान युग प्रधान महारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पट्ट प्रभावक श्री
श्री मद्दु जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महातपा बिरुद्धारक श्री महावीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित
श्री सुधर्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सभा शृंगार महारक श्री विजय देव
सूरिभिः ।

(१८१)

सर्व धातुकी मूर्तियों पर ।

(751)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरी भंडारी गोत्रे सा० वीलहा संताने मं० मायर
भार्या सुहदे पुत्र स० अस्का भार्या लषमादे भातृ सांपायने श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं
श्रेयसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रीईश्वर सूरि पढे श्री शांति सूरिमिः ।

तपगच्छका उपासरा ।

(752)

सं० १६५३ वर्षे चै० शु० ४ श्री कुंथनाथ विंवं गांदि गोत्रे श्री—स० सुरताण भा०
सवीरदे पुत्र साडूल - - - श्री तपागच्छे श्री विजयसेन सूरि - - पं० विनय सुंदर गणि
प्रतिष्ठितं ।

श्री पार्वनाथजी का मंदिर ।

(753)

सं० १५२८ वर्षे फा० वदि १३ श्री माली श्री० समरा भा० धर्मिणि पु० श्री० मूलू भा०
श्री० काका भा० काउं पुत्री लापू नाम्न्या पु० सांगा भा० बाधी २० कुटुम्ब युतया श्री
शांति विंवं का० तपा श्री क्षेम सुन्दर सूरि - - - ।

(754)

सं० १६७७ वर्षे अक्षय तृतीया दिने शनि रोहिणी योगे मेढता नगर वास्तव्य सा०

(१८२)

छाया भा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुव्रत विंशं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-
सेन सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद विख्यात युग प्रधान समान
सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्री० आसधर भार्या गागी सुत
मदन दमा जिनदास गोवा पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शान्तिनाथ
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छै श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ सं० जसवंत भा० जसवंत दे पु० अचलदास
केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंशं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

(757)

सं० १७५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधे ज० गुगलिया गोत्रे सा० श्रीरा प० सोहाकेन
श्री आदिनाथ विंशं स्व श्रेयसार्थे संहर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शान्ति सूरिभिः ।

(758)

सं० १७६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ जकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना भा० ललनादे
पुत्र लपमा भार्या लाखण दे पुत्र दीलहा भार्या श्रीलहणदे पुत्र घडसी सकुटुम्बेन श्री

(१८३)

वासपूज्य विंशं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति
सूरिभिः ।

(759)

सं० १५१५ वर्षे आषाढ षदि १ दिने श्री उकेश वंशे घुल्ल गोत्रे सा० सार्दूल
जाया सुहवादे पुत्र स० पासा श्रावकेण भार्या रूपादे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन
श्रीशांतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

(760)

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० घन्ना पुत्र सा० हिमपाल
पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंशं कारितं प्रति-
ष्ठित तपागच्छ भट्टारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः ।

(761)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० १३ रवी श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० चाईया
केन भा० सलपू सु० दो० दासा संना कणेशी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाडा दाया
प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल विंशं कारितं श्री मधूकरा खरतर - - - ।

(762)

सं० १५५६ वर्षे चैत्र सु० ७ सोम प्राग्वाठ ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलषणदे
पुत्र लोला सा० पीमा भा० पंतलदे - - - सकुटुम्बयुतेन आत्म पु० श्री चंद्रप्रभ स्वामि
विंशं का० अंचल गच्छे श्री सिवांश साभर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्द्धन मणीमा-
मुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंघेन - - - ।

(१८१)

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा० भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल दे स्वपुण्यार्थं श्री श्री श्री श्रेयांस विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सु० २ सोमवारे पट बह गोत्रे सा० सा - र - - - श्रेयसे श्री आदिनाथ विं वं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे ऋ० पुण्यकीर्ति सूरि पद्वे महा० श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं ।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे उकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवास आवकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन श्री श्रेयांस विं वं कारित - - ।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विं वं श्री विजय जिनेन्द्र सूरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

(767)

सं० १५०७ वर्षे फा० ब० ३ बुधे । ओश वंशे वहरा हीरा भा० हीरादे पु० व० बेता

(१६५)

भा० पैतलदे पु० व० हियति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं श्री खरतर गच्छे
श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

(768)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्र श्री माल ज्ञातीय पितामह वीरा पितामही वीरादे
सुत पितृ डाहा मातृ जासू श्रेयोर्थं सुत राजा भोज ठाकुर सी एतै श्री विमलनाथ
मुख्य चतुविंशति पट्टः कारितः श्री पूणिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री साधु सुंदर
सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संबेन आंवरणि वास्तव्यः ।

(769)

संवत् १५७६ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थे धासी जकेश ज्ञातीय
सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जइता भार्या फते पुत्र सा० सीहा सहिजा भा० गुरी(?)
पुत्र सा० पडालिक भा० कमला पुत्र सा० जीराकेन भा० पुनी पितृव्य सा० सीमा पापा
विजा कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रति०
तपागच्छे श्री साम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पट्टे श्री हेम विमल
सूरिभिः महोपाध्याय श्री अनंत हंस गणि प्र० परिवार परिवृत्तौ ।

(770)

संवत् १६११ वर्षे वृहत खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राज्ये श्री माल
ज्ञातीय पापड़ गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र उणगढमल तद्धार्या नयणी तत्पुत्र जीवराजेन
श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं - - धर्म सुंदर गणिना प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

(१८६)

(771)

सं० १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय गणधर ओपड़ा गोत्रीय सं० नामा
भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका भा० देवलदे
पु० कचरा भार्या कउडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री
अर्घुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तोर्य यात्रादि सद्गुण कर्म करण सम्प्राप्त
संघपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमोपाल कपूरचंद स्वपुत्र
ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीवदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारितं
शत्रुजयाष्टमोदुारमध्य स्वयं कारित भवर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विंश
कारितं पितामह बचनेन प्रचितामह पुत्र मेधा कोक्ता रत्ताना समुख पूर्वज नाम्ना
प्रतिष्ठितं श्री वृहत्स्वरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रववारक प्रतिबोधित साहि श्रीमदक-
वर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन चन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान
पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजया-
ष्टमोदुार श्री भाणवट नगर श्री शान्तिनाथादि विंश प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री
पार्श्व प्रतिहार सकल भहारक चक्रवर्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटो-
पमान प्रधानैः ।

(772)

सं० १७०० व० द्वि० चै० सित ८ गुरौ गोलकुंडा वा० सा० मेधा भा० मीहणदे सुत
सा० नानर्जा नाम्ना श्री मुनि सुव्रत विंश का० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरु भहारक
श्री विजयसेन सूरि पट्टालद्वार पतिर्याहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री
विजयदेव सूरिभिः ।

(१८७)

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

(773)

सं० १६६९ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे महाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह ावजय राज्ये श्री उपकेशि झातीय लोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे तत्पुत्र स० लाषाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारित प्रतिष्ठित श्रीमत श्रीवृहत्स्वरतर गच्छे श्री आद्यपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि तत्पट्टोदयाद्रि मार्तंड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

(774)

सं० १२७१ वर्ष माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे वापणा गोत्रे सा० सोइड सु० दाद भा० -- ण पितृ -- निमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० उएसगच्छै श्री देव गुप्त सूरभिः ।

(775)

सं० १५१० जैष्ठ सु० ३ दिने प्राग्घाट पोपलिया बासिया तीरा भा० वीरी पुत्र सा० हुंगर भ्रातृ सा० खेतसि सहसा समरंदे धारकमी भार्या जासलि जत भाई कर्मादि कुटुम्ब युतेन श्री मुनि सुव्रत (?) विंवं का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिसुन्दर सूरि पट्टे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(१८८)

(776)

सं० १५२६ वर्षे माघ वदि ५ रवी उकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा०
भरमादे पु० - - - दि कुटुंब युतेन श्री कुंचुनाथ विंवां का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री
प्रज्ञ शेखर सूरि पट्टे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

(777)

सं० १५३२ जैष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर
भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंवां का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर
सूरि पहालंकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(778)

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काण्टा - - - भ० श्री सोम कीर्त्ति आ०
श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय धोरटेच गोत्रे सा० पेईया भा० खेई पुत्र सा० भीमा
जा० प्रटी श्री आदि - - कारापितं नित्यं प्रणमति ।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र - सोमकेन भा०
गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ विंवां कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे
श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे उकेश वंशे लोढा गोत्र संघवी
टाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

(१८६)

भगिनी सुश्राविका वीरा नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ विंघं कारित प्रतिष्ठित
श्री चतुर्विंशति जिन विंघं प्रतिष्ठित श्री बृहत्स्वरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तत्पद्मे
श्री जिनहंस सूरि तत्पट्टालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभिः सकल संघेन पूज्यमान
आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर ।

(781)

संवत् १६८४ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सद्य हरषा भा० मीरा दे तत् पु० संघवी जस-
वंत भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे
भट्टारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

महावीरजी का मंदिर ।

(782)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ बुधे श्री शांतिनाथ विंघं गादहीआ गोत्रे सं० सुरताण
भा० हर्षमदे पु० सं० हांसा भा० लाडमदे पु० पदमसी कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे
श्री हीर विजय सूरि पद्मे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय सुन्दर गणः प्रणमति ॥
श्री रस्तु ॥

(783)

॥ ॐ ॥ संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्य
श्री मेडता नगर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे वार्द्ध पूरा नाम्न्या पु० सक-

(१६०)

मंणादि सपरिवार - श्री सुमतिनाथ विंशं कारित प्रतिष्ठित तपा गच्छाधिराज महारक
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख
परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत् १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेढता वास्तव्य ऊ० ज्ञा०
समदडिआ गोत्रीय सा० माना भा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात
भा० केशरदे पुत्र जईतसी लपमीदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुब्रत विंशं का०
प्र० तपा गच्छे महारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पहालद्वार भ० श्री विजय देव
सूरि सिंहैः ।

(715)

सं० १६७७ ज्येष्ठ षदि ५ गुरौ श्री ओसलबाल ज्ञातीय गणधर चोपडा गोत्रीय स०
कचरा भार्या कउडिमदे चतुरगदे पुत्र स० अमरसी भा० अमराटे पुत्ररत्न स० अमी-
पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूर
वदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ वि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छा-
धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पह प्रभाकरै श्री अकबर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षापाढीया
ष्टाहिकादि षामोसिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि मीनादि जीव रक्षकैः श्री
शत्रुंजयादि तीर्थकर मोषकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान
श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा०
हंस प्रभोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

(१९१)

(787)

संवत् १६७७ ज्येष्ठ अदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणघरचोपडा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भा० तोली पु० माला भा० मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा० कडडिमदे पु० अमरसी--भा० अमरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अबुदाचल विमलाचल संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पह नंदि महोत्सव विविध धर्म कर्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भातृ अमीपाल कपूरचन्द स्वभार्या अजाइयदे पु० ऋषभदास सूर दास भ्रातृव्य गरीबदासादि सार परिवारेण श्रेयोर्थं स्वयं कारित मर्माणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठित श्री महावीरदेव - - - परंपरायत श्री वृहत्स्वरतर गच्छाधिप श्रीजिन भद्र सूरि संतानीय प्रतिबोधित साहि श्री मदकवर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र सूरि विहित कवित काश्मीर विहार वार सिंदूर गज्जणा विविध देशामारि प्रवर्त्तक जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पद्मोत्तंस लब्ध श्री अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाण्ठमोदुार प्रदर्शित भाण बडमध्य प्रतिष्ठित श्री पार्व प्रतिमा पीयूष वर्षण प्रभाव बोहित्य वंशमण्डन धर्मसी धारलदे नन्दन भहारक चक्रवर्त्ति श्री जिनराज सूरि दिन करैः ॥ आचार्य श्री जिन सागर सूरि प्रभृति यति राजैः ॥ सुत्रधार सुजा । प्रतिष्ठित भहारक प्रभु श्री जिन राज सूरि पुरंदरैः श्री मेडता नगर मध्ये ।

ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है । यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्ति चिन्ह विद्यमान है । शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है । सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके जनशतके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है ।

मंदिर प्रशस्ति ।

(788)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्ववित्सर्वं दर्शी । समुर भनुज राजामीश्वरोनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्द्यः स्मर्यते योगिवर्ष्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दृग्दृष्ट्वा विष्टप-मुद्गवद् घनघृणः प्राणभृतां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादी सहस्रां शुवत्प्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां अद्रंस नाम्नेः सुतः ॥ २ ॥ यो गात्राण सर्व-निद-भिहितां शक्ति मश्रदृधा नः क्रूरः क्रोडा चिकीर्ष्या कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्ट्या यस्याहलो सौ मृति मित इयता नामरत्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं वितरतु भगवान्-न्वस्स सिद्धार्थ सूनुः ॥ ३ ॥ स्वामिनिकं स्वर्निर्वासालय घन समयोस्माक माहं - - - - नस्यावसाने - - - उक्त महती काचिदन्याय देषा इत्युद्भ्रान्तरात्मा हरि मति जयतः सख जेशच्य नीचैर्घटपादांगुष्ठकोद्याकनक नगपती प्रेरिते व्यात्सवीरः ॥ ४ ॥ श्री मानासीत्प्रभुरिह भुवि - - - यैक वीर स्वैलोक्येयं प्रकट महिमा राम नामासयेन चक्रे

शाकं दृढं नरमुरो निर्द्वयालिङ्गनेषु स्वप्नेयस्या दशमुख वधोत्पादित स्वास्थ्य
 वृत्तिः ॥ ५ ॥ तस्या काषट्किल प्रेम्णालक्ष्मणः प्रतिहारताम् ततोऽभवत् प्रतोहार वंशो-
 राम समुद्रव्रतः ॥ ६ ॥ तद्वंशे सवशी वशी कृत रिपुः श्री वत्स राजोऽभवत्कीर्तिर्द्यस्य
 तुषार हार विमला ज्योत्स्नास्तिरस्कारिणी तस्मिन्मामि सुखेन विश्व विवरे नत्वेव
 तस्माद्बहिर्निर्गन्तुं दिगिभेन्द्र दन्त मुसल वयाजाद् काष्यीन्मनुः ॥ ७ ॥ समुदा समुदायेन
 महता चमूः पुरा पराजिता येन - - - समदा ॥ ८ ॥ - - - समदारण तेनावनीशेन कृता भिरक्षीः
 सद्ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रैः । समेतमेतत्प्रयितं पृथिव्या मूकेशनामास्ति पुरं गरीयः ॥ ९ ॥
 - - - सक्रान्तं परैः - - - - मित्र श्री मत्पालितं यन्महोभुजा । तस्यान्तस्तपनेश्वर
 स्य भयनं शिभुद्रुशं शुभ्रसामभ्रस्पृम्द्रुगराज कुंजर युतं सद्ब्रैजयन्ती लतम् किं कूटं
 हिम - - - सृत रति - - - ॥ १० ॥ तद् काश्यं ताद्यं बचसा संसार - - - या ॥ ११ ॥
 क्वचित् - - - रघुद्रुयोधिकम धोयते साधवः क्वचित्पटुपट्टीयसो प्रकटयन्ति धर्म
 स्थितिम् । क्वचिन्तु भगवत्स्तुतिं परिपठयन्ति यस्या जिरे - - - - -
 धनिभदेव गाम्भीर्यत ॥ १२ ॥ वीक्षणे क्षणदां स्वस्य वर्गलक्ष्मी विपरिचिताम् । बुद्धि-
 भवत्यवशास्ते यत्र पश्यन्त्यदः सदा ॥ १३ ॥ आचार्यादेर्वचन धन - - - न्नि - - -
 मुक्त्वाः सवर्षाव - - - - पर्यायः प्रतिध्वान दण्डम् सत्यं मन्ये यदु दित मित्तीवावादीत्स-
 मन्तारसोयं भूयः प्रकट महिमा मण्डपः कारितोत्र ॥ १४ ॥ - - - किं चान्ह - - - - -
 यिकार त्रैव -
 मार्गणेन ॥ १५ ॥ पुत्रस्तरुया भवत्सौम्यो यणिगिजन्दक संज्ञितः । इन्दुघटकान्ति - - -
 लयः ॥ १६ ॥ - - - चदुह्वरा - - - ह्वया प्रसाद युक्ता स्वयशोभिरामा । सदानुसत्री स्वपतिं नदीनं
 मार्गणावात् - - - - तरगा ॥ १७ ॥ तस्मात्तस्यामभूद्रुर्मा त्रिवर्ग - - - - - - - - - - -
 -
 -
 न्नात्थिं जनरपि प्रतिगतं यद्गोहमभ्यर्त्थितं । किं चान्यद्बुवने दरोरु सरसि वयाप - -
 नीर नोर दसित ॥ १८ ॥ जिनेन्द्र धर्म प्रति युक्त योनयो

.....तायेकुमतेर्मर्नागपि । मि । वंसतोपिहि मण्डलेथवान सन्मणीनां
 भवतीहकाचता ॥२०॥ यदि वादि संज्ञिता
 जाकलावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वी स्वर्गो सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गया प्रतिमा कारि स
 त्रधामनि ॥ २२ ॥ आस्रकात्सर्वदे वयातु यत देवदत्त
 मिवागमे ॥ प्रति दिनमिति
 या कार्यं प्रति विदधते यद्वदधिकं ॥ ध्यैर्द्यवन्तो पिये त्यन्तं भीरवः परलोकतः । भोगि
 हिको च दूरगाः ॥ ति बला
 बतत्स भिः पुन्रयं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिभारा
 विकलः सन्गोष्ठिकानु जिन्दक मतदु व्य
 कृतोय नेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मत्स दृग्दृश्यते
 द्वेजयत्री भूजयन्त ॥ संवत्सर दशशत्यामधिकार्यां वत्सरे स्त्रयो दशभिः
 फाल्गुन शुक्ल तृतीया भाद्र पदाजा सं० १०१३
 र्याम ॥ प्राजापत्यं दधदपि मना गल्लमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपिथ
 करोवः पाया भुवन गुरुन्नति ॥ भावद्गौर्गूढ वन्हिर्गुरु
 भर विन मन्मूर्धुभिर्द्वार्यते घोषावन्मेरुर्मरुभिर्निर्नि ति युते ।
 वशिखमुखच्छेद श्रो मद्द दशा पूच नित्यमस्तु ॥ जयतु
 भगवांसताव कीर्त्तिर्नि रीति वपुः सदा ॥ यस्मादस्मिन्नजम्मन्यवरि पति
 पति श्री समा प्रकट सुतारनो सूत्रधारत्व
 विधति दित मिदं ।

(१९५)

तोरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तोरणं प्रतिष्ठापिमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ बांधल पुत्र यशोधर वोहिव्य मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५९ कार्तिक सु० १२ सुचेत गुप्ती सहदिग पुत्रीः शशु दरदी सुखदी सल्ल सर्व
प्रसादै चतुर्विंशति जिनः मातृ पहिका निज मातृ जन्हव श्रेयोर्थ कारिता श्री कक्क
सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन बदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री बासदेव सूरि संघ नानेतिहड
श्रेयार्थ राखदीव कारिता ।

(793)

सं० १२३४ वैसाख सुदि १४ मंगल । नागदेव वर्षा शामपद घनाय शोधं । भार्या
यशोदेव्या त्रामर्थे पोथं पदे ।

(१९६)

(794)

सं० १२३४ वैशाख शुक्र १४ मंगलवार साव्रंदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारेन
जिन तुत्रित सादेव मणि कुतेन ।

(795)

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे मोढ वास्तव्य सा० डा-भार्या यससारदे भार्या
सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विंव कारितं
भागम गच्छे श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

(796)

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेचा गोत्रे सा०
वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूरयाभी पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंव
कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः ।

(797)

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसन्न से० भार्या माणिकदे सुत रणाग्र
भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंथुनाथ विंव कारितं प्रतिष्ठित
श्री वृहद् तपापंकज श्री विजय तिलक सूरि पट्टे श्री विजय धम्म सारे श्री भूयात् ॥

(798)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीढ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-
ताभ्यां श्री धम्मनाथ विंव पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विश्वाधर गच्छे श्री हेम प्रभु
सूरि मंडलिराभ्यां कृ१ः ।

(१९७)

(799)

सं० १५४६ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-
भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन मा० भर्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन
स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ विंव कारित प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय
सागर सूरिभिः ।

(800)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री लालूणं करापितं ।

(801)

सं० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कडुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजवाई केन श्री सम्भव
विंत्र सा० तेजपालेन प्र० ।

(802)

संवत् १७५८ वर्षे आपाठ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छे
भहारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्यं - - - ।

नीवमें प्राप्त मूर्तिके टूटे चरण चौकि पर ।

(803)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - सालीमद्र - - - - - देव कर्म
श्रेयर्थे कारित जिनेत्रिकम् - - - ।

(१६८)

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्योह श्री केलहण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र श्री कुंमर सिंहे सिंह बिक्रमे श्री माढव्य पुराधिपती - - - दम्भिकान्वीय कीर्ति पाल राज्य वाहके तद्भुक्ती श्री उपकेशीय श्री सञ्जिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिलंगो क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क सञ्चिका देवि भक्ति परेण श्री सञ्चिका देवि गोष्ठीकान् भणित्वा तत्समक्ष तद्भयं व्यवस्था लिखापिता । यथा । श्री सञ्चिका देवि द्वारं भोजकैः प्रहरमेकं यावदुद्धाद्य द्वार स्थितम् स्यात्तव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश वर्षीयोत्परः । तथा गोष्ठीकैः श्री सञ्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा १०॥ घृत कर्ष १ भोजकेभ्यो दिनं प्रति दातव्यः ॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरी घोर बडांशु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु जालहण तस्य भार्या सृहवं तयोः सुतेन साधु मारुहा दोहित्रेण साधु गयपालेन-- सञ्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चंडेका शीतला श्री सञ्चिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं ।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पालिहया धीय देव चन्द्र अधू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा समन्तेन स्वगृहं दत्तं ।

(१६६)

(807)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्योह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - -
पालिहया धीत देव चंड बधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं समस्त
गोष्ठि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्गं समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

हूंगरीके चरण पर ।

(808)

सं० १२४६ माघ अदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोपाध्याय शिष्यैः श्री कनक
प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके लेख पण्डित रामानन्दजीने
संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

(809)

संवत् ११४४ वैशाख अदि ७ पल्लिका चैत्ये धीर ।

(810)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ अदि ४ शीघ्रिल - - - ।

(२००)

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुर्ले भाजिताभ्यां सांत्याप्त
कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः ।

(812)

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरौ - - - ।

(813)

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनी श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये
श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सधण देवी
तयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या
निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर विंशं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः ।

(814)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ यदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त
नाथ देवस्य ।

(815)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ यदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल
नाथ देवस्य ।

(२०१)

(816)

सं० १५ - - - सुदि ३ सा - - - - का० सा० मया - - - स्व श्रेयसे श्री कुंयनाथ
विं वं का० प्र० श्री मिन्नमाल गच्छे ।

(817)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ रवी - - - ।

(818)

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उकेश सा० मदा भा० बालहृदे पुत्र सा० क्षेमाकेन भा०
सेलखू भातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विं वं का० प्र० तपा
श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

(819)

सं० १५२६ वर्षे माह सु० ५ रवी ऊ० भोगर गो० सा० राणा भा० रत्नादे पु० चाहड़
भा० रङ्गणे पु० खरहथ खादा खात खना धितु श्री नेमिनाथ विं वं कारि० श्री नागेन्द्र
गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः ।

(820)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ऊ० गुगलिया गोत्र सा० खीमा पुत्र काजा भा०
रत्नादे पु० वरसा नरसा धादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संडेर गच्छे श्री
जिथो भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सालि सू - - ।

(821)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री उकेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पासड़ भार्या
लखमादे पुत्र सा० भोजा शुश्रावकेण भ्रातृ सा० पदा तत्पुत्र सा० कोका प्रमुख परिवार

(२०२)

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ऊ० चूदालिया गोत्रे च ऊ० सा० सिवा भा० सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाडिमदे पुत्र आसा भार्या ऊमादे इत्यादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंशं का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे ।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त भार्या साह पुत्र सा० वरु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विंशं श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं ।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वादि १ शुक्रे उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारमल पुः ऊदा चांपा ऊदा भा० रूपी पु० वाला खतावाला भा० बहरङ्गदे सकुटुंब श्री० उदा पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विंशं कारितं प्रतिष्ठित श्री संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः ।

(825)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनी महाराजाधिराज महाराज श्री गज सिंह बिजय माम राज्ये युधराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान वशावतन्स श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

(२०३)

माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा० डुंगर भाखर नाम भ्रातृ
द्वयेन सा० डुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रत्न सा० पीत्र सा० टीला सा०
भाखर भा० भावलदे पुत्र ईसर अरोल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवलखाख्य
प्रसादोयारि श्री पार्श्वनाथ विंवं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितं च स्व प्रति-
ष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीमदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धारक तपा गच्छाधि-
राज भट्टारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार
भट्टारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर
परिकरितैः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे ब्रह्मी भादा मादा कौतयोः श्रेयार्थं
लखमण सुत देशलेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महाचैत्ये देवकुलिकायां कारित ॥

(826)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे अष्टमी दिवसे श्री
मेड़ता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० ईसर हदाह सा नामनि पुत्र लखा
खोखा सुरत्राण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केशवादि परिवार परिवृतैः स्वश्रेयसे श्री
महावीर विंवं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० दुंगर भाखर कारित
प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री श्री श्री
विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

(827)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे अष्टमी दिवसे महाराजाधिराज
महाराज श्री गजसिंह विजयमान राज्ये तत्सुत युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते
तत्प्रसाद पात्रं चाहमान वंशावतंस श्री जगन्नाथ नाम्नि श्री पालि नगर राज्यं कुर्वति
तन्नगर वास्तव्य श्री श्री श्री माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा०
भाखर नाम्ना भा० भावलदे पुत्र स० ईसर अटोल प्रमुख परिवार युतेन स्व श्रेयसे श्री

(२०४)

सुपार्श्व विंशं कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठितायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकवर
शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन
सूरि ।

(828)

स० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय
मुहंणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि
युतेन श्री शीतल पार्श्व वीर नेमी मूर्ति स्फूर्ति मत्कोशं विंशन्ति जिन विंश विराजित
दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजय
देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

(829)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ६ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान
राज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - - हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरपा भार्या मिरादे
पुत्र सा० असवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं स्यापितं च । महाराणा
श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरेश्वरोपदेशतः वाचरला ।
वास्तव्य समस्त संघेन । शिशरिराया उपरि निर्मापितेन विंशेन प्री० श्री प्रतिष्ठितं च
तप गच्छाधिराज भट्टारक श्री मदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भ० हीर
विजय सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री विजय सेन सूरेश्वर पट्टालंकार भट्टारक
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर
परिकरितैः ।

(२०५)

लोढारो बासका मंदिर ।

(830)

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह षुण साहजी विजय राज्ये । संवत् ११८६ वर्षे
वैशाख सित्ताष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय
राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगन्नाथ जी राज्ये ऊपकेस ज्ञातीय श्री श्री
माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० हुंगर भातृ सा-भाषर --
नामभर्या - हुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्यघर भना भाषर भार्या चाचलदे
पु० इसर आयेल रूपा - पु० टीला युतेन स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विव कारापितं
प्रतिष्ठितं ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरी
तत्पद्मे श्री रत्नचन्द्र सूरि वा० तिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व
श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जोर्णोद्वार कारापित मूल नायक श्री
पाशवंनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां विव० प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश डंडे रूप्य
सहस्र ५ द्रव्य दयय कृते नाव बहु पुन्य उपाजितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री
पाशवं गुरु गोत्र दैवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(831)

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ९ - - - ।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(839)

संवत् १२०९ द्वि० ज्येष्ठ बदि ४ अद्येह श्री पालिकायां ग्रामे अणहिल पाटकाधिष्ठित

(२०६)

समस्त राजावलो विराजित परम भ्रहारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर
लब्ध - - - - - निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी मूशल श्री मत्कुमार
पाल देव कल्याण विजय राज्ये - - - - - ।

नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० श्रीमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितैः देवणाग नागढ जोगढ सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री नेमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना
प्रतिष्ठितं ॥

(834)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० श्रीमे वीसाढा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितैः देवणाग नागढ जोगढ सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री
मद्देव सूरि विनेवेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना । यावद्दृष्टि चन्द्र स्वीर्यातां
धर्मोजिन प्रणीतोस्ति । तावज्जाया देत्त जिन युगलं वीर जिन भुवने ।

(२०७)

(835)

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-यवत जैता भार्या० कह पुत्र नामसी भार्या कमालदे
पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंश कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांनदेव सूरिभिः ॥

(836)

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्रे० समरसी सुत दो० घारा भा० सूहृददे सुत
दो० महिपाल भा० मालहणदे सुत दो० मूलाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईआभ्यां
च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुदर
सूरिभिः ।

(837)

श्री चन्दा प्रभु विंश । सं० १६८६ प्रथमाषाढ वदि ५ शुक्रे राजाधिराज श्री गज
सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जेसा सुत जयमल जी नाम्ना श्री चन्द्र
प्रभु विंश कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-
धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पहालंकार भ० । श्री विजय सेन सूरि पहालंकार
पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः स्व
पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः राणा श्री जगल
सिंह राज्ये नाहुल नगर राय विहारे श्री पहूम प्रभ विंश स्थापित ॥

(838)

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमाषाढ व० ५ शुक्रे राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये योधपुर
नगर वास्तव्य मणोत्र जेना सुनेव । जयमल जी केन श्री शांतिनाथ विंश कारित

(२०८)

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश ओ ५ श्री विजय देव सूरिभिः
स्व पहालंकार आचार्य ओ ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः स परिवारः ॥

ताम्र शासन ।*

(४३९)

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठः परिहृत मद मार
क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्भः स्वो वशीयं च सम्भ सित्रभुवन कृतसेवा श्री
महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासान
नडूले भूपः श्री लक्ष्मणादी ॥२॥ तस्मात् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री
बलि राजो राजा विग्रह पालोन् चपितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवारुयः ।
तज्जः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद इत्यजना
पार्थिव श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत् क्षितिपः सुभटः श्री जैद्र राजारुयः ॥५॥ श्री पृथिवी
पालोऽभूत् तत्पुत्राः सौर्यवृत्ति शोभाक्यः । तस्मादभवत्भ्राता श्री जो जल्लो रणरसात्मा ॥६॥
तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः । तत्पुत्राः क्षाणियः श्री अरुहण देव
नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप प्तालं संकुल दिक् चक्र पृथुल विस्वारः । सिंचति सुदिताहित
गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिशः सारमिटं युद्धिमान् चिन्तयत ।
इह संसार असारं सर्वं जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गर्भं स्त्रि कुक्षिः मध्ये पल रुधिर
बसा मेदसा बहु पिण्डो मातु प्राणांतकारी पसवन समये प्राणनां स्थान्नु जन्मा
घर्मादानामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वरूप मात्रं
स्वजन परिभ्रश्च स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ स्वशोतोद्योग तुलयः क्षणः मिह सुखदाः सम्पदा
दृष्ट नष्टः प्राणित्वं चंचलं स्याद्दुःखमुपरि यथा तार विन्दुर्न लिप्याः ज्ञास्त्रैमं स्व

* यह ताम्रपत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड माहब यहांसे लेकर विलायतके रयल एशियाटिक सुसाइटीमें दान किया है ।

पित्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्मं कीर्त्तिं देशान्तो राजपुत्रान् जनपदगणान्
 बोधयत्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ वर्षे श्रावण सुदि १४ रवी अस्मिन्नेव महा
 चतुर्दशी पक्षवर्षी । स्नात्वा घीतपटे निवेश्य दहने दत्त्वाहुनीन् पुण्यकृन् मार्त्तण्डस्य
 तमः प्रपाटनपटोः सम्पर्द्य चावज्जलिं । त्रैलोक्यस्य प्रभुं चराचरगुरुं संस्नप्य
 पंचामृतैः ईशानं कनकान्नवस्त्रनदनैः सम्पूज्य विप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुतिलकुशाक्ष-
 तीदकः प्रगुणो भूतापसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छतयावत् चंद्राकं भूपालं ॥१३॥
 श्रीनड्डूलमहास्थानेश्रीसंडेरकगच्छेश्रीमहावीरदेवाय श्रीनड्डूलतलपदशुल्क
 मंडपिकायां मासानुमासं धूपवेलायं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् अस्य देवरस्यनं
 भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिर्भवि प्रोक्तिभिरपरैश्च परिपंधाना न कार्या । यतः सामा-
 न्योयं धर्मसेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्वान एव भावीनः
 पार्थिवेन्द्रभूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मदन्वयजा भूपाभावी
 भूपतयश्च ये । तेषामहं करे लग्नः पालनीय इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः
 कश्चिन् नृपतिर्भवेत् तस्याहं करे लग्नीस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ बहुभिर्व-
 सुधाभुक्ता राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥
 षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमत्ता च तान्येव नरकम्
 वशेत् ॥१८॥ स्वदत्तं परदत्तं वा देवदायं हरेत यः स विष्टायां कृमिभुत्वा पितृभिः
 सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो वयतोयासु शुष्ककोटरवासिनः । कृष्णा ह्योनि जायंते
 देवदायमहरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महाश्रीः । प्राग्वाटवंशे धरणिगनाम्नः सुतो महो
 मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः प्रतिष्ठा निवासो लक्ष्मीधरः श्रीकरणे नियोगी ॥२१॥
 आसीत् स्वच्छमला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्रज्ञानसुधारसप्लवित
 धिष्टज्जो भवत वासलः । पुत्रस्तस्य वभूव लोकवसनिः श्रीश्रीधरः श्रीधरे
 संपास्ति रचयांचकार लिखिते चेदं महाशासनं ॥२२॥ स्वहस्तोयं महाराज श्री
 अलहणदेवस्य ।

(२१०)

तामापल (महाजनों के पास)

(४१०)

ॐ स्वस्ति ॥ श्रिये भवन्तु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये
जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरो नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्ध्रय लब्ध
जन्मा । राजा महाराज नतांहि युग्मः ख्यातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले
समाभूतदोय तनयः श्री लक्ष्मणा भूपति स्तस्मात्सर्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभि-
तारुयः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो मही ख्यातो विग्रह
पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽभवत् ॥३॥ तस्मिन्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो
भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्गुर्दुर्गैर बैरि कुंजर यथ
प्रोत्ताल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलाली कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥
तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे वधापाद्य
सौराष्ट्रकान् । शीचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर
वृत्तिरमलः श्री अलहणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रीड वंश जव
रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण वै जनकजेव विधा-
हिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जग धयो रूप सौंदर्य युक्ताः । शस्त्रैः शास्त्रैः
प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशालाः ज्येष्ठ श्री केलहणारुय स्तदनु च गज
सिंह स्तथा कीर्ति पालो । यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदथामीजने बंदनीयाः ॥७॥
मध्यादमीसां परिवारानथो ज्येष्ठोगंजः क्षाणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारी निज
राज्य धारी श्री केलहणः सर्व गुणोरूपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आलहण देव
कुमार श्री केलहण देवाभ्यां राजपुत्र श्री काल्तिपालस्य प्रसादे दत्त नड्डूलाई प्रतिवद्दु
द्वादश ग्राम ततोरज पत्र श्री काल्तिपालः । संवत् १२१८ श्रावण वदि ५ सोमे ॥ अद्यैह
श्री नड्डूले स्नात्वा श्री गणेशाय निलाक्ष्मण कृश प्रणयिन दक्षिण करं कृत्वा

देवानुदकेन संतर्प्य । बहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसो निःशेष पातक पंक प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पूर्जा विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती दृष्ट्वा नलिनी दल गत जल लत्र तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रुमौ स्नपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति भाद्रपद मासे चंद्राकृतं क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरवंदं माडाड । काण सुवं । देवसूरो । नाडाड मउबडो । एत्रं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्वदाप्यस्मामिः शासने दत्तौ । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं लगित्वा सर्वदापि वर्षं प्रति भाद्र पदे दातव्यौ । अत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रान्ति योऽन्य कोपि भविष्यति तस्याहं करे लग्नो न लोप्य मम शासनं । षष्ठि वर्षं सहस्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येषु नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्य साठनप्रा शुभं करः दामोदर सुतो लेखि शासनं धर्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

संवत् १२१३ वर्षे मार्ग वदि १० शुके ॥ श्रीमदणहिल्ल पाटके समस्त राजा बली समलं कृत परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति बर लब्ध प्रसाद प्रीद प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देव कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महामात्य श्री बहड देव श्री श्री करणादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंथयति यथा । अस्मिन् काले प्रवर्त्तमाने पोरित्य त्रौढाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदं तदीय सुत संजात महामंडलीक० श्री वस्त

(३१२)

राजस्तदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिंह शासनं प्रयच्छति यथा । अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महाद्योर चैत्ये । तथाऽारष्ट-नेमि चैत्ये शील बंदडा ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एव देव त्रयाणां स्थाय धर्मार्थे वदयं मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारकब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त त्रिहाइकां रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यामदं । यः कोपि लोपयति सो ब्रह्महत्या गो हत्या सहस्रेण लिप्यते । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः । यः कोपि बालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्ठामीति । गौडान्त्रये कायस्थ पाण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं ।

नाडलाई ।

वर्तमानतः मारवाड़के देसूरी जि०के नाडोलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संघत् दश दाहोतरे वदिया चोरासी बाद ।

खेड नगर थो लायिया, नारलाइं प्रसाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्तमान हैं ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(४१२)

संघत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री षंडेरकान्त्रय देशी चैत्य देव श्री महावीर दत्तः । मोरकरा ग्रामे घाणक तैल बल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तरा सुत विसराकेन कलसो दत्तः ॥ रा० वाच्छल्य समेत । साखिय भण्डौ नाग सिउ । ऊतिवरा

(२१३)

वीट्टुरा पोसरि । लक्ष्मणु । बहुभिर्बसुधा भुक्त्वा राजिभिः सागरादिभिः । जस्य जस्य
यदा भूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

(843)

ॐ ॥ संवत् ११८६ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज
रायपाल । देव तस्य पुत्रो रुद्रपाल अमृत पालौ । ताभ्यां माता श्री राज्ञो मानल देवी
तथा नदूल ढागिकायां ॥ सतां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । घाणकं
प्रति धर्माय प्रदत्त भं० नागसिख प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० तिमटा वि० सिरिया
खणिक पोसरि । लक्ष्मण एते साखिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो हत्या सह-
स्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

(844)

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये
--- हास --- समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । आत्म । पाडुला मध्यात्
सर्वं साउत पुत्र विसोपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तेल बल मध्यात् । माता निमित्तं
पलिका द्वयं । प्लो २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद समक्षाय । धर्माय निमित्तं
विसोपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च । स्त्री हत्या
भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

(845)

संवत् १२०० कार्तिक अदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये । श्री
नदूल ढागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नदूला इय महाजनेन सर्वे मिलित्वा श्री
महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । घृत तैल चौपड़ मणि पित पादय प्रति । क० धान लव-

(२१४)

नमपि तद्रोणं प्रति मा० १ कपास लोह गुडर षाड होंगु माजीठा तौल्ये घडी प्रति । पु० १
पूगहरी तकि प्रमुख गणितैः । सहस्रं प्रति । पुगु १ एतत्तु महाजनेन चेतरेण धर्माय
पूदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

(846)

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज षदि ५ शुक्रे । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागिकायां । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा-
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थं । श्री अभिनव पुरीय वदाण्यां । अत्रेषु समस्त वणजार
केषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइल ल गमाने । ततु बीसं प्रति । रुआ २
किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारके धर्माय पूदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या सतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

(847)

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ षदि ६ नाडलाई रीमाउहीत को-विसति को नेल सेर० ॥
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ पूत देस ।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

(849)

सं० १५६९ वर्षे । कुतवपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात्
मुजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

(850)

सं० १५७१ वर्षे कुतवपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद
सुन्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पवर्ग दुर्गा श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात्

(२१५)

(851)

सं० १५७ वर्षे ऋतधपरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद
मुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनोय श्री संबेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

(852)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५९७ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे
षड्यां तिथौ शुक्र वासरे पुनवसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संद्वेरे गच्छे कलिकाल
गीतमावनारः समस्त भविक जन मनोबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि
विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि
घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः षष्टि सुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः ।
श्री पंडेरकीय गण बुधावलंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर
नभो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्तू चूडामणिः भ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः
तत्पट्टे श्री चाहुमान वंश श्रद्धारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री
वदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रबोधनैक प्राप्त परम यशो वादः
भ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः ।
एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा सूरणां वंशे पुनः श्री शालि
सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पट्टालंकार हार भ० श्री शांति सूरि बराणां सपरिकराणां
विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे । श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री शिला
दित्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री खुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर
श्री पेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वशीद्यांतकार प्रताप मार्तंडा-
वतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा
श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुशासनात् ।
श्री उकेश वंशे राय जडारो गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे मं० मयूर सुत मं०
सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० साहा समदाभ्यां सद्वांधव मं० कर्मसाधा रालाखादि सुकुटुम्भ

(२१६)

युताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ८६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतायां त० सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पट्टे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ० श्री ईश्वर सूरिभिः । इति लघु प्रशस्तिरिय लि० आचार्य्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्ण सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(853)

संवत् १६७४ वर्षे माघ यदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती भण्डारी गोत्रे० सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान गम भार्या तत् पु० । भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र सकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद्र जादव । मं० सिवा पुत्र पूजा जेठा संयुतेन श्री अदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि तत्पटालंकार श्री विजयसेन सूरि तत्पटालंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

(854)

महाराजाधिराज श्री अभय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ श्री नहुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातोय वृ० सा । जीवा भार्या जसमादे सुत सा । नाथाकेन श्री मुनि सुव्रत विवं कारापितं प्रतिष्ठितं च । भटारक श्री हीर विजय सूरिभिः ।

(855)

संवत् १७३६ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ऊकेश ज्ञान १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर सी पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिलेन संप्रति प्रतप (प्रतिष्ठितं) माणिक्य त्रिजै शि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशात् शुभे भूयात् ।

(२१७)

(856)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगोरी महा तपा विरुद्धारक भट्टारक श्री विजय देव सूरेश्वरोपदेश कारित प्राक् प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्मापित श्री ज्ञेयल पर्वतस्य जीर्ण प्रासादोद्धारणे श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मदकवर शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धारक तपामच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री होर विजय सूरेश्वर पट्ट प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरेश्वर पट्टालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृतैः श्री नडुलाई मंडन श्री ज्ञेयल पर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंवं ॥ श्री ॥

श्री नेमिनाथजी का मंदिर ।

(857)

ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११८५ आसउज वदि १५ कुजे ॥ अद्येह श्री नडूलडागि-
कायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयीराज्यं कुर्वतस्ये तस्मिन् काले श्री
मदुर्जित तीर्थः श्री नेमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजाद्यर्थे गुहिलान्वयः ।
राउस उधरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मार्गे
गच्छता नामा गतानां वृषभानां शोकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विंशतिमो भागः
चंद्रार्कं यावत् देवस्थ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वृंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया ॥
अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपि लोपयिष्यति । तस्याहं
करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोयं साभिज्ञान पूर्वकं
राउ० राज देवेन मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षिण ज्योतिषिक दूदू पासूनुना गूगिना ॥ तथा
पला० पाला पृथिंवा १ मांगुला ॥ देवसा । रापसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(२१८)

(८५८)

ओं ॥ स्वरित श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्रे श्री नहुलाई नगरे चाहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्थ स्वच्छ श्री मदवृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री धर्मचन्द्र सूरि पट्ट लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि भिरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्य यदुवंश शृंगार हारस्य श्री नेमीश्वरस्य निराकृत जगद् विषादः प्रसाद समुद्ध्ये आचंद्राके नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी ।

(८५९)

ओं ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३८४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्रे श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्य ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मानु पित्रोः पुण्यार्थं ठिकुय उबाडी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्क यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्ब सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

धानेराव ।

(८६०)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक वैजल्ल देन राज्ये श्री वंस

(२१६)

गत्तीय राउत महण सिंह भुक्ति वंसंह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्षं प्रति द्राम
४ खाज सूणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांभत्य । सेठ रायपाल सुत राव राजमल्ल
महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्स दिवहिं ।

बेलार ।

मारवाड़ के देसूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

(861)

ओं संवत् १२३५ वर्षे श्री० साधिग भार्या मालही तत्पुत्रा आववीर घदाक आवधराः
आववीर पुत्र सालहण गुण देवादि समन्वित आत्म श्री यसे लुगिकां कारितवान ।

(862)

ओं संवत् १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरी प्रौढ प्रताप श्री महुांधल देव कल्याण
विजय राज्ये बाधल दे चैत्ये श्री नाणकीय गच्छे श्री शांति सूरि गच्छाधिपे शाश्व ।
आसीद् धर्कट वंश मुख्य उसभः श्राद्धः पुरा शुद्धीस्तद्गोत्रस्य विभूषणां समजनि
श्री ष्टि सपाश्वभिधः । पुत्री तस्य वभूवतुः क्षितितले विख्यात कीर्ति भूशं पूमलह प्रथमो
वभूव सगुणी रामाभिधश्चापरः ॥ तथान्यः ॥ श्री सर्वज्ञ पदार्चने कृत मर्तिदाने दयालु
मर्मुहु राशादेव इति क्षिती समभवत पुत्रोस्य घांघाभिधः । तत्पुत्रो यति संप्रतिः प्रति
दिनं गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विचारदो जिन गृहोद्धारोद्यतो योऽजनि ॥२॥

(२२०)

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं । गोष्ठ्याच्च राम गोसाभ्यां कारितो रंग
मंडपः ॥३॥ भद्रं भवतु ।

(४६३)

संवत् १२३८ पौष षदि १० वला नागू पुत्र श्री० उदुरण भार्यया श्री० देवणाग
पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं
कारितः ।

(४६४)

अ ॥ संवत् १२३८ पौष षदि १० श्री० आंब कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०
नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रेयार्थं श्री पा ।

(४६५)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या
लक्षा श्री पालहाया - - - मालहा - - - - भार्या श्री ति - - - - भार्या - - - न भार्या
पूरां श्री गोसाकेन सकल बंधु सहितेन सोहि ।

(४६६)

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिरुये सुधम्मं सुत वल्हणः । अनुच्चारित्र संयुक्तो बाल भद्रो
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राहो मुनिचन्द्रं - - परः । तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे ।
घोस सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारयामास
गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

(४६७)

ओं संवत् १२६५ वर्षे धक्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या
सुखमति तत्सुत थांथां कालहा रालह घोर सीह पालहण प्रमुख गोसा पुत आम्र

(२२१)

वीर आम जाल कालहा पुत्र लक्ष्मीधर महीधर रालहण पुत्र आखे शूर घोरहसी पुत्र देव जस पालहण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेवोर्थं स्तंभ लगामिमं कारापयामासूः ।

(868)

ओं संवत् १२६५ वर्षे उसभ गोत्रे श्रेष्ठि पार्श्व भायां दूल्हेवि तत्पुत्र मगाकेन भार्या राजमति रालहू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अन्नय कुमार मेघ कुमार शक्ति कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अन्नय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुम्ब सहितेन स्तंभन माकारितेदमिति - - - ।

(869)

ओं संवत् १२६५ वर्षे श्री नाणकीय गच्छे धक्कट गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या धिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम कारयदात्म श्रेयसे ॥७॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

(870)

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये श्री प्राग्वाट वंसीय रोपि मुणि मं० दसाढाभ्यो आत्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवत् ॥

(२२२)

(871)

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मण कारिते । पंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संघ
भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः रुयाताश्च-
तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्रारुयः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पद्मं
श्री पार्श्व चैत्येऽचीकरदद्भूतं ॥३॥

केकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(872)

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण दास
ददिवा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्री ॥१॥

(873)

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनन्द
सूरि देशनया श्री० घाघल श्री० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख श्राक - - ।

(874)

ॐ ॥ नमो धीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-
गन्त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदन्व रिद्धिरादीश्वरः शारद भास्य
दिद्धि ॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजंते । युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्वा प्रसारः सवट प्रसारः । कच्छ
 प्रसारो ब्रतति प्रसारः । इमे समे कोटितमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥
 गीर्वाण सालो नहि काष्ठ भावात् । तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः । मृदां विकारा-
 न्नहि काम कुंभश्चितामणिर्नैव च कर्कुरत्वात् ॥४॥ सूर्या न तापाकुलता करत्वात् ।
 सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्णं शैलो न कठोर भावात् । नाभ्यंगजातेन तुला-
 मुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विदून् । पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान् ।
 करोत्करान् शारदः चन्द्र सत्कान् । कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां
 प्रभवति विद्याः । सुपंखलोकादिव काम गव्यः । द्रव्योऽपि वांछाधिक दान दक्षाः ।
 पुष्पात् पुष्पानि स नाप्ति सूनुः ॥७॥ यतीतराया स्त्वरितं प्रणेशु । मृगाधिराजा दिव
 मार्गः पूगाः । यद्वा मयूरादि वले लिहानाः । स मारु देवो भवताद् विभूत्यै ॥८॥ राठोड
 वंश ब्रतति प्रताना नीकोपमो नीक निकाय नेता । राजाधिराजो जनि मल्ल देव ।
 स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मीरसस्सम जनिष्ट बलिष्ठ बाहुः प्रत्यर्पिता
 पनकदर्यन पठ्वं राहुः । श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्र रश्मिः । श्री मानभूदुदय सिंह
 नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांति कुल्या नदीप । स्तनु जित मधु दीपः
 सौम्यता कौमदीपः । नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः सितरद मुचुकुंदः सर्व्व
 नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो । वाच्यस्तद न्यैरथ वृद्ध राजः ।
 यस्येति शाहिर्विरुदं स्मदद्या । दकधरो वठ्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेम्नः कष
 पट्ट शोभा । मधीभरत्संप्रति सूर सिंहः । यो माष पेषं द्विपतः पिषेष । निर्मूल काष
 कषितार्त्तितांतिः ॥१३॥ राज्य श्रियां भाजन मिदु धामा । प्रताप मंदी कृत चंड धामा ।
 संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमत्
 रच सूर्य । सिंही गती व्योम धनं च भीती । अन्वधती नाम जगाम सूर्य्य । सिंहे तियः
 सर्व्व जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदीय सेनोच्छलितै रजोभि । मलीमसांगो दिनसाधि नायः ।
 परो दया वस्त मिषेण मन्ये । स्नातुं प्रवृंशं कुरुते विनम्रः ॥१६॥ अप्येक मीहेतन

शुद्ध वंशो । धारे चक्रं तस्मिन् युतो विशेषात् । स्वयं हताराति वसुधरा स्त्रो परियहात्त
 द्रुहता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवंति विज्ञा विविधैः कवित्वैः ।
 वहन्ति भक्तिं स्व कुटुंबलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युगमं ।
 सुरेष यद्वन्मघवा विभाति । यथैव तेजस्विषु चंद्र रोचिः । न्यायानुयायि ष्विव राम-
 चन्द्र । स्तथाघुना हिन्दुषु भूधयोयं ॥१९॥ द्रव्य जिनाचौचित कुंकमादि दीपार्थ मा
 जाद्यममारि घोषं । आचामतोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना
 पुत्र वित्ताहरणं न चोरी नम्या समोषो न च मद्य पानं । नाखेटको नान्य वशा निषेवे ।
 त्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्धानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो
 गजासिंह नामा । गत्या गजोऽतीव बलन सिंहस्ते नैव लेभे गजासिंह नाम ॥२२॥ श्री
 ओसवालान्वय वाद्धिचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तद्रः । विज्ञ प्रमेयो चित्तवाल
 गोत्रः पणेष्वपिस्त्रेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेच । प्रायः प्रभूतैर्द्र-
 विणैरुपेतः जगाभिधानो जगदीश सेवा । हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां
 युगमं । विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां । करे पुरे योधपुराभिधाने । दंतं प्रमाणाद्भवया
 जगारुयः सएष तुयं व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तद्गजन्मा जनित प्रमेदः पुण्यात्मनां पुण्य
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो । नाथा भिधो नाथ समाप्र
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शाला । भार्या भवद् गूजर दे सुनामा । रूपेण
 वर्या गृह भार घुर्या । श्री देव गुर्व्याः परिचर्य यार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व दिगेव सूर्यं ।
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वजांकुरं रोहण भूमि केव । नापाभिधानं सुत राज
 रतनं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विष्वक । तदर्थिनोन्धेपि
 समर्जयंतु । गुणान्सपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नबलादे । धनिता धनितार
 सार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या गम्या नापाहूये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-
 भिधश्च । सुधर्म सिंहोप्युदयाभिधोपि । सादूल नामेति च संति पंच । तयोस्तनूजा
 इव पांडु कुंत्याः ॥३१॥ आसा भिधानस्य वभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुती द्वी ।

तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुश्चिचरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्याऽमृत
 संज्ञितस्य । मृगे चणाऽमेलक देभिधाना । सुता वभूतामनयोस्तथा द्वी मनोहरास्यो
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुदे धारल दे भिधाना । सुधर्म सिंहस्य सधर्मिणीति ।
 कुटुम्बिनी साउछ रंगदेवी । प्रिया वभूवोदय संज्ञितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत
 शचोउजयंत शत्रुंजये ष्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५९ संख्ये । वर्ष हर्षेण ना
 पारुयः ॥३५॥ अर्घुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे । योत्रां युग षट् पद
 पद । कला १६६४ मितेवदे चकार पुनः ॥३६॥ श्रीविक्रमाकर्कटितु तर्क षडभू । वर्ष १६६६
 गते फालगुन शुक्ल पक्षे । ती दंपती स्वी कुरुतः स्मत्तुर्य । व्रतं तृतीया हनि रूप्य दानैः ॥३७॥
 दानं च शीलं च तयोपकार । स्त्रयात्मकोयं शुभ योग आस्ते । नापाभिधान व्यवहारि
 मुख्ये । यथाहिलोके गुरु पुष्य पूर्णा ॥३८॥ भुजाजिर्जताया निज चारु संपदो । न्याय-
 जितायाः फलमिष्टमिच्छता । वांणागषट् शीतगु १६६५ संख्य हायने । विधापित
 स्तेनहि मूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वे अपि पार्श्वयो द्वयो । नापा भिधानेन विधापिते
 इमे । पित्रोर्यशः कीर्ति रुभे इव स्वयोः । कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध
 वादि मतं गज केशरी । कपट पंजर भंग कृते करी । भव पयोधि समुत्तरणे तरी । प्रबल
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पद्यश्चयसागरः । स्व गुण रंजित नायक नागरः ।
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड् । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । तत्प-
 द्वादयि रवयो विजयंते विजय सूरेशः । श्रो उचितवाल गोत्रावतंस तुल्या
 अनूचानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदा विभा करे । गगा तरंगालिल सद्य शोभरैः ।
 जिनालयोय प्रतिभा यधुवरैः । प्रतिष्ठितो वाचक लब्धि सागरैः ॥४४॥ पंडित पंक्ति
 प्रभाव आ विजय कुशल विबुध वरास्तेषां शिष्येणोदय रुचिना प्रशस्तिरेषा विनि-
 रमति ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधी विनेय जय सागरः प्रशस्ति ममां । उदली
 लिख १६६७ ॥ ४५ ॥ तोडर सूत्रधारेण ॥४६॥

(२२६)

सेवाड़ी ।

मारवाड़के जोड़वाड़ इलाकेके वाली जिलेके समीप यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीर जी का मंदिर ।

(८७५)

ॐ ॥ सं० ११६७ चैत्र सु० ६ महाराजाधिराज श्री अश्वराज राज्ये । श्री कटुक राज युवराज्ये । समी पाठीय चैत्ये जगतौ श्री धर्मनाथ देवसां नित्य पूजार्थं । महा साहणिय पूअवि --- पीत्रेण ऊसिम राज पुत्रेण उप्पल राकेन । मां गढ आंवल ॥ वि० सल खण जोगरादि कुटुंब समं । पट्टांडा ग्रामे तथा मेद्रं चा ग्रामे तथा छेछड़िया मट्टुडी ग्रामे ॥ अरहटं अरहटं प्रति दत्तः जघ हारकः ॥ एक यः कोपि लोपयिष्यति ते स्मदीय धर्म भाग्याः सदा भविष्यति । इति मत्वा प्रतिपालनीय । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलं । बहुभिर्वसुधा मुक्ता राजभिः सगरादिभिः ॥१॥छ॥

(८७६)

ॐ ॥ स्वजन्मनि जनताया जाता परतोषकारिणी शांतिः । विग्रुध पति विनुत चरणः स शांति नामा जिनेो जयति ॥१॥ आसीदुग्र प्रतापाद्यः श्री मद्गण हिल भूपतिः । येन प्रचंड दोर्दंड प्रराक्रम जिता मही ॥२॥ तत्पुत्रः चाहमाना नामन्वये नीति सद्बुहः । जिन्द राजाभिधो राजा सत्यस शौर्य समाश्रयः ॥३॥ तत् नूजस्ततो जातः प्रतापा क्रांत भूतलः । अश्वराजः श्रियाधारो भूपतिर्भूतां वरः ॥४॥ ततः कटुकराजेति तत्पुत्रो धरणी तले । जज्ञे स त्याग सीभाग्य विख्यातः पुन्य विस्मितः ॥५॥ तद्भुक्ती प्रत्तनं रम्यं शमी पाटी ति नामकं । तस्त्रास्ति धीर नाथस्य चैत्यं स्वर्ग समोपमं ॥६॥ इतश्चासीद् विशुद्धात्मां

(२२७)

यशोदेवो बलाधिपः । राज्ञां महाजनस्यापि सभायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री षंढेरक
सगदच्छे यंधूनां सुहृदां सतां । नित्योपकुर्वता येन न श्रान्तं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो
बाहडो जातो नराधिप जन प्रियः । विश्व कर्मैव सर्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः
॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म परायणः । उत्पन्नः यल्लको राज्ञः प्रसादगुण
मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्बुद्ध्यान संयुतः । श्री मत्कटुक राजेन यस्य
दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येत्र्यं वक संप्राप्तौ वित्तीर्णं प्रति वर्षकं । द्रुमाष्टकं प्रमाणेन
यल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजार्घ्यं शांति नाथस्य यशोदेवस्य स्वत्तके । प्रवर्द्धयतु चंद्रार्कं
यावदादनमुज्ज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाट्यां जिनालये । कारितं शांति
नाथस्य बिंबं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्मैण लिप्यते राजा पृथिवीं मुनक्ति यो यदा ।
ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

(877)

ॐ ॥ संवत् ११८८ अश्वीज षदि १३ रवौ अरिष्ट नेमि पूर्व दिशायां अपवरिका
अग्रं भित्ति द्वार पत्रे चतुर्लभाते कर्तुं मम च गोष्ठ्या मिलित्वा निषेधः कृतः ॥ लिखितं
प० अश्वदेवेन ।

(878)

सं० १२४४ आसाढ षदि ८ रवौ श्री संभव देव फागुण सुदि ८ चवण - - - लर - -
पधर - - - ॥ - - - सुदि १४ जंसो - - - हेकर जिसं देव ॥ - - - सुदि १५ विरवार
- - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्तिक षदि ५ माणु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि
५ रवौ - - - ण शांभव ॥

(879)

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्तिक षदि १ रवौ अश्व वाससा नालिकेर ध्वजा खासटी मूल्यं

(२२६)

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः । प्रदत्तात् बलाः
५ मास पाटकेने चके वयनीयाः ॥ छ ॥

(८८०)

॥ अं ॥ संवत् १२९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरी बासहड़ वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि
बांदा सुत नाना - - - - देव सधोरण सुत आस पाल गुण पाल सेहड़ सुत पूस देव
साबूदेव पूसदेव सुत घण देव सहड़ भायां शीत पुत्रिका साजणि जालह सती रण
भायां राहीअई - - - - सेहड़ भायां अहहव सूमदेव भायां मदावति सावदेव भायां
प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहड़नेन भायां समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेव
पुत्रिका देह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के बाली जिलेमें है ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(८८१)

श्री पंडेरक चैत्ये पंडित । जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाम गुरो मूर्ति
कारिता थिरपाल मुक्ति बांछतां सं० ११४९ वैशाख वदि-- ।

(८८२)

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरी अद्येह श्री पंडेरक निवासी श्रेष्ठि गुणपाल
पुत्रीकाया गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया । श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका
कारापिता ।

(१२९)

(883)

ॐ ॥ संवत् १२२१ माघ षडि २ शुक्ल अष्टोह श्री केलहण देव विजय राज्ये । तस्य मातृ राज्ञी श्री आनन्त देव्या श्री षंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र वदि १३ कल्याणिक निमिषां राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः । तथा राष्ट्रकूट पातू केलहण तद्भातृज उत्तमसीह सूद्रग कालहण आहड आसल अणतिगादिभिः तला रामाव्यथस ? गटसत्कात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री षंडेरक वास्तव्य रघकार धणपाल सूरपाल जोपाल सिगडा अमियपाल जिसहड-देल्हणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र - - - -

(884)

संवत् १२३६ कार्तिक षडि २ बुधे अष्टोह श्री नड्ले महाराजाधिराज श्री केलहण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जालहण देवि ऋको श्री षंडेरक देव श्री पारवनाथ प्रतापतः थांथा सुत रालहाकेन मा भ्रातृ पालहा पुत्र सोठा सुभकर रामदेव धरणि यवोहीष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगठा ? रासां धीरण हरिचन्द्र वर देवार्दिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थ विदित निज गृहं प्रदत्तः ॥ रालहाय सत्क मानुषै थसद्भिः वर्षा प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया । शेष जनानां वसतां साधुभिः गोष्टिके सारा कार्या ॥ संवत् १२६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनी सोयं मातृ धारमति पुनः स्तंभका उधृत । थांथा सुत रालहा पालहाभ्यां मातृ पद श्री निमित्त स्तंभको प्रदत्तः ।

नाना

मारवाड़के वाली जिलेमें यह ग्राम है ।

(885)

संवत् १२०३ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महंत सूरिभिः प्रतिष्ठितः समस्तः ॥

(२३०)

(८८६)

संवत् १९२६ माह अदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोठ झा० ठ० रत्न ठ० अर्जुन
ठ० तिहणा पुत्र मोठ देव श्रीयसे भातू टाहाकेन श्री पार्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उद०
देव सूरिभिः ।

(८८७)

सं० १५०५ वर्षे माह अदि ६ शनी श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर विंमं प्र० श्री शांति
सूरिभिः - - - - षष्ठ ण जिन - - - भवतं

(८८८)

सं० १५०६ वर्षे माघ अदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

(८८९)

सं १५०६ वर्षे माघ अदि १० गुरी गोत्र वेलहस ऊ० ज्ञातीय सा० रत्न भार्या रत्ना
दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्भ युतेन श्रीवीर परिकरः कारित
प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

(८९०)

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित समयात् संवत् १६५६ आद्रपद मासा शुक्ल
पक्षे ७ सातमी तिथी शनिवारे । श्री वैद्य गोत्रे । श्री सविया किण्णोत्रजा । मंत्रीश्वर
त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० धेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १
चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागढ सिवाणे साको करी
मूड । पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिघा ४ सहसा ५ मुहता
श्री नारायण नुराणा श्री अमर सिंघ जी मया करेने गांव नाणो दीयो मुहता नाराइण
अरहट १ साइमल देव श्री महावीर नु सतर भेद पूजा सारु केसर दीबेल सारु दीधो

(२३१)

हीदूनां बरोस । उत्थापे तियेनुं गाईरो--सुंस । तुरक उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस
बले - - - - को उथाप जो - - - गांव नाणारो चढियो गांव वीथलाणै - - - वी-सि-ए ।
इ जाएन - गांव - दम १ चेटियो - - - - तको उथाप जो । वीजोको उथापसी तिणनु
गदहउ गाव मुहता श्री नारायण भार्या नवरंगदे तत्पुत्र मु० श्री राज - - जणयल - - -
दा पुत्री जषमी - - - - नाराडण विजी भार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री - - -
गच्छे भटारक श्री सिद्ध सूरि विद्यमाने - - - । ० श्री - - - - चंद शिष्य चांपा लिपितं ।
ए - - - - जको - - - तिणु - - - - ।

लालराई ।

मारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें
यह लेख है ।

(८९१)

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक भोक्ता राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अभय
पाल तास्मन राज्ये वर्त्तमाने चा० भीवड़ा पड़ि देह बसी सू० आसधर समस्त सीर
सहितै खाड़ि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्तं श्री शांति नाथ देवस्य
दत्ता पूण्याय यः कोपि लुप्यते स पापो न छिद्यतेमंगल भवतू ॥ तथा भड़िया उअ
अरहते आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरोयु १ गूजर तूयात्रहि वील्हस्य
पुण्यार्थ ॥ १ ॥

(८९२)

ॐ ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ अदि १३ गुरौ अद्यहं श्री नडूले महाराजाधिराज श्री
केल्हण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्त्तिपाल देव पुत्रे सिनाणकं भोक्ता राज पुत्र लाखण

(२३२)

पालह राज पुत्र अन्नय पाल राज्ञी श्री महिषल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा
निमित्तं भडिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल
समक्ष एतत् - - - दामं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सी० देवलये०
समीपाटीय - - - पाजून आप्र - - - समक्ष आदानं - - - मितस्य २ त - - - हत्या
पातकेन लि - - - ११ ।

हटुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२६६ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुके श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण
चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट
उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच
कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं १ वर्ष स्थितिके कृत द्र० २४ चत्व
विंशति । द्र०माः वर्षं वर्षं प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातठयाः पालनीयश्च
बहुभिर्बसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य
तदा फलं शुभं भवतु ॥

(२३३)

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठिकी नाग श्र । श्र - - अर सोहेन सध पक्षे दत्त द्र० उत्तयं द्र ३६
समीपाटी मंडपिकायां व्याष्टपृथ माण पंच कुलेन वर्षं वर्षं प्रति आचंद्रार्क - - यावत्
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो बीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेडा ग्रामे
महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो बीत रागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथम भाद्रवा वदि ६ शुक्र दिने अखेह
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पंत सिंह देव राज्येन्न तन्नियुक्त श्री ॥ श्री करण
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि अक्षराणि पञ्चा ॥ समी तल पदित्य मंडपिकायां
साधू० हेमाकेन भाद्वि हाथीउड़ी ग्रामे श्री महाधीर देव नेवार्थे वर्षं प्रति वर्या - - क द्र
२४ चत्वर्षिसि द्रमा० प्रदत्ता शुभं भवतु ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिपि ।
जस्य जस्य जदा भूमी तस्य तस्य वदा फलं ॥ कपूर विजय लिषतं ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

(898)

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा सख्या जवस्तवः । परिशासतु ना' - - परार्थ स्यापना
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना धिनाम समये यत्पाद् पद्मोन्मुख प्रेखा संरुध मयूख

शोखर नख श्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैः कादशभिर्गुणं दशशती शक्रस्य शुभमदृशां कस्य
 स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - क्त - - नासत्करीलोप
 शोभितः । सुशोखर - - लौ मूर्द्धि हृद्यो महीभृतां ॥३॥ अग्नि बिभ्रद्रुषिं कातां सावित्रीं
 चतुराननः हरिवर्मा वभूवात्र भूविभ्रुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज
 स्फुरदनं बुद्ध बाल दिशाकरः । रिपु बध्वदनेन्दु हत द्युतिः समुद्रपादि विदग्ध नृप-
 स्ततः ॥५॥ स्वाचार्यैर्यो रुचिर बचनेर्वासुदेवाभिवाने र्वाधं नीतो दिनकर करैर्नीर
 जन्मा करो व । पृथ्वीं जैनं निजमिव यशो कारयद्दुस्त्रिकुण्ड्यां रम्यं हर्म्यं गुरु हिम
 गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय । भागद्वयं
 द्यतीर्यत भागश्चाचार्यं वर्याय ॥७॥ तस्माद्भूच्छुद्धु सत्त्वो ममटारुयो महीपतिः ।
 समुद्र विजयी श्लाघ्य तरवारिः सद्रूमिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन
 जनित लोचनानन्दः । धवलो बसुधा व्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भक्तवाघाटं
 घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज
 राजे । श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूर्जरेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव
 शरण्यः सुरणां अभूव ॥१०॥ श्री मट्टल्लभराज भूभुजि भजैर्भजत्य भंगां भुवं दंडैर्भण्डन
 शौढ चंड सुभटै स्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरिव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेद्रं
 पुरा सेनानारिव नीति पौरुष परो नैषोत्परां निवृत्तिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु
 बलः श्री मूल राजो नृपो दर्पाधो धरणा बराह नृपतिं यद्बद्धवपिः पादपं । आयातं
 भुविकां दिशी कमभिको यस्तं शरण्यो दधो दंष्ट्रायानिव रूढ मूढ महिमा कोलो मही
 मण्डलं ॥१२॥ इत्थं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थितोयः । पाथो
 नाथो वा विपक्षास्त्वपक्षं रक्षा कांक्षै रक्षणे बद्ध कक्षाः ॥१३॥ दिवाकरस्वेव करैः कठोरैः
 करालिता भूर कदम्बकस्य । अशि श्रियं ताप हतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्र
 नीघा ॥ १४ ॥ धनुर्धर शिरोमणे रमल धर्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य
 पारंपरं । समीयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव

लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदीर्णं विषुर्विशेषात् बलगतुरंग खुरखात मही
 रजांसि । तेजोभिरुज्जितं मनेन विनिज्जितं त्वाद्वास्वान्विलज्जितं इवाततरां तिरो-
 भूत् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् घ - लनां दधी । अनन्योद्धार्य सत्कार्यं भार धुर्योर्ध-
 तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्रोदनिः शुद्धया । भीष्मो वंशेन वंचितेन
 वचसा घर्मेण घर्मात्मजः । प्राणेन प्रलाय निलो बलभित्तो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण
 प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्णोभवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये थाल प्रसाद मतिष्ठिप
 त्परिणतवया निःसंगो यो बभूव सुधीः स्वयं । कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्म चमस्कृ-
 ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं
 लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं । पार्थादि पार्थिव गुणान् गणयन्तु सत्यानेकं ध्यधा-
 द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोचरयन्ति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका रुचिरं ।
 वाचस्पते उर्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत्पूर्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो भक्तुं स्तस्यास्ते हस्ति
 कुण्डिका अलका धनदस्येव धनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हरहास हिमांशु हारि
 भ्रातृकार वारि भुवि राज विनिज्जराणां । वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप
 संपद पहार परं परेषां ॥२३॥ धीत कल धीत कलशाभिराम रामास्तना इव न यस्यां । संत्य
 परेष्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना कलाः कुवलय
 दृशां संदृश्यते दृशस्तरलाः परं । मलिनित मुखा यत्रोद्भृत्ताः परं कठिनाः कुचा निविड
 रचना नीचौ वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि सार्द्धं शुचि कुच कलशैः
 कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्णानि प्रकामं सहं घन जघनैर्देवता मंदिराणि । भ्राजन्ते दभ्र
 शुभ्राण्यतिशय सुभगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्री जन हृत हृदयैर्विभ्रमैर्यत्र
 सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पठर्वाणो हृद्यरूपा रसाधिकाः । यत्रेक्षु वाटा लोकेभ्यो नालि-
 कत्वाद्भिदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभिर्गौरवाहो गुणौघैर्भूपाणां
 त्रिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्तिः । नाम्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितुं
 भासमाना समानोकामं कामं समर्था जनित जनमनः संमदा थस्य मूर्तिः ॥२८॥ मन्येमुना
 मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः । स्त्रधनेपि न स्वरूपेण समगन्स्ताति लज्जतः ॥२९॥

प्रोद्यत्पद्माकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरित शुभ रुचिं
 वासुदेवाभिधस्य । अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका
 लोकावलोकं सकलमचकलस्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण
 संग्रहः । अभग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निर्वाण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्वगुणानुगतं
 जनं विधिरयं विदधाति न दुर्बलधः । इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल
 सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं धन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-
 निलांदोलितं । गरिष्ठ गुण गोष्ठ्यदः समुददी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ
 कृन्मदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं । इदं मुखं मिवा भाति भास
 मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन घाड्डनिकं शुभ शुक्ति करोटक युक्त मिदम् । बहु
 भाजन राजि जिनायतनं प्रधिराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन
 गृहेति जोर्णं पुनः समं कृत समुद्रुताधिह भवांबुधिरात्मनः । अतिष्ठिपत सोप्यथ प्रथम
 तीर्थं नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिव मूर्त्तामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्यै स्त्रि-
 पंचाशे सहस्त्रे शरदा मियं । माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध
 नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्द्वी सुदान मवदान धारिदम पोपलन्नाद्भुतं । यतो धवल
 भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघटमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष
 शिरस्य मेक रजतस्युणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मंडपा मल तुलामा लंबते भूतलं ।
 तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्वं धीर ध्वनिर्द्वामन्यत्र धिनोतु धार्मिक धियः सद्गु-
 वेला विधौ ॥३९॥ सालकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-
 सत्तद्विता ख्यात नामा । सृत्ताढ्या रुचिर विरतिर्दु यमाध्यवर्षा सूर्याचार्यै द्यंरचिरमणी
 वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्भत १०५३ माघ शुक्ल १३ रात्रि दिने पुण्य नक्षत्रे श्री
 ऋषभ नाथ देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक
 जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नागपोचिस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म क्षयार्थं
 स्व संतान प्रवादिध तरणार्थं च न्यायोपाडर्जत वित्तैर्न कारितः ॥४१॥ परवादि दर्प
 मथनं हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्णं । प्रथम जन दुरित शमनं जिनेन्द्र वर शासनं
 जयति ॥४२॥ आसीद्दी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वलो विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपेत्तमांगार्चिवतः । योषिस्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो
 यः श्री मान्हरि धर्म उत्तम मणिः सदृश हारे गुरो ॥२॥ तस्माद्भूव भुवि भूरि गुणोपपेतो
 भूप प्रभूत मुकुटाच्चिवत पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्विदग्ध
 नृपतिः प्रकट प्रतोपः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तः परं भाजनं संभूतः सुतनुः
 सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः । येनास्मिन्नज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा
 तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पालयते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यविदग्ध नृप पूजितं
 समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावदुत्तं भवते मया प्रपालयते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां
 चैत्य गृहं जन मनोहरं मत्क्या । श्री मद्बलभद्र गुरोर्यद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मि-
 ल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्रार्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्षयं ॥७॥
 रूपक एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रब्रह्मणानां । धर्म - - - क्रय विक्रयेच तथा ॥८॥
 संभूत गंडया देयस्तथा वहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपा-
 द्या ॥९॥ श्री महलोक दत्ता पत्राणां चोलिका त्रयोदशिका । पेल्लक पेल्लक मेतद्
 द्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावार्त्तिक - - - प्रत्यर घटं घान्या-
 ढकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्मस्य विशोपक स्तथा भारे ।
 शासन मेतत्पूर्वं विदग्धेन राजेन संदत्तं ॥१२॥ कर्पासकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि
 सर्व्व भांडस्य । दश दश पलानि भारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आदानादे तस्माद्भाग
 द्वय महंतः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहितः ॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र
 पोत्रैश्च गोष्ठ्याः पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्षयं नोपेदयं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्ते
 दाने फलं दानोत्पोलिते पालनात्फलं । भक्षितो पेक्षिते पापं गुरुदेव धनेधिकं ॥१६॥ गोधूम
 मृदग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्रोणम् प्रति माणकमेक मत्र सर्व्वेण दातव्यं
 ॥१७॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य
 तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमासे । श्री मद्बलभद्र
 गुरोर्विदग्ध राजेन दत्त मिदं ॥१९॥ नवसु शतेषु गतेषु तु षण्णवती समधि केषु माघस्य
 कृष्णैकादश्यामिह समर्थितं मंमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूधर भूमि भानु भरतं भागीरथी

(२३८)

भारती भास्वत्मानि भुजङ्ग राज भवनं भ्राजद् भवांभोदयः । तिष्ठन्त्यत्र सुरासुरेन्द्र
महितं जैनं च सच्छासनं श्री मत्केशव सूरि सन्तति कृते तावत्प्रभूयादिदम् ॥२१॥ इदम्
शाक्षय धर्म साधनम् शासनम् श्री विदग्ध राजेन दत्तं ॥ सम्बत ९७३ श्री ममट राजेन
समर्थितम् सम्बत् ९९६ ॥ सूत्रधारोद्भव शत योगेश्वरेण उत्कीर्णं यम् प्रशस्तिरिति ।

जालोर ।

मारवाड़का यह भी बहुत प्राचीन स्थान है । इसका प्राचीन नाम जावालीपूर था ।

तोपखाना ।

(८९९)

----- त्रैलोक्य लक्ष्मी विपुल कुलगृहं धर्मवृक्षालवाल । श्री मन्ना
भेय नाथ क्रम कमल युगं मंगलं व स्तनोतु । मन्ये मंगल्य माला प्रणत भव भूतां सिद्धि
सौध प्रवेशे यस्य स्कंध प्रदेशे विद्यसति गल श्यामला कुंतलाली ॥१॥ श्री चाहुमान
कुलांबर मृगांक श्री महाराज अण्णहिला न्वयोषद्भव श्री महाराज आरुहण सुत -----
यावली दुर्ललित दलित रिपुवड श्री महाराजकीर्तिपाल हेत्र हृदयानं दिनांदन महाराज
श्री समर सिंह देवकल्याण विजय राज्ये तत् पाद् पद्मोपजीविनिनिज प्रौढि मातिरेक-
तिरस्कृत सकल पीलवाहिका मंडल तस्कर व्यातिकरे । राज्यचित्तके जोजल राजपुत्रे
इत्येवं काले प्रवर्त्तमाने । रिपुकुलकमलेन्दुःपुण्यलावण्यपोत्रं नय विनय निधानं धाम
सौंदर्य लक्ष्म्याः । धरणि तरुण नारी लोचनानंदकारी जयति—समर सिंह क्षमा पतिः
सिंह वृत्तिः ॥ २ तथा ॥ औत्पत्तिकी प्रमुख बुद्धि चतुष्टयेन निर्णीत भुप भवनोचित
कार्य वृत्तिः । यन्नातुलः समभवत् किल जो जलाहो ----- खंडित दुरत विपक्ष
लक्षः ॥ ३ श्री चंद्रगच्छ मुख मंडन सुविहित यतितिलक सुगुरु श्री श्री चन्द्रसूरि चरण
नलिन युगल दुर्ललित राजहंस श्री पूर्ण भद्र सूरि चरण कमल परि चरण चतुर मधु-
करणे समस्त गोष्टिक समुदाय समन्वितेन श्री श्रीमाल वंश विभूषणश्रेष्ठि यशोदेवसुतेन
सदाज्ञाकारि निज-सूयशोराज जगधर विधीयमान निखिल मनोरधेन श्रेष्ठि यशोवीर

परम श्रावकेण संवत् १२३६ वैशाख सुदि ५ गुरो सकल त्रिलोकी तलाभोग भ्रमेण परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥ नाना देश समागतेर्नवनवैः स्त्री पंसवर्गं मुहु र्यस्ये -- -- पाव लोकन परैर्नो तृप्तिरासाद्यते । स्मारं स्मारमयो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं सौत्कंठभावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्रवंभरावर वधू तिलकं किमेतलीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः । दत्तं सुरै रमृतकुण्ड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्तापूरेण पातालं - - - ष महीतलं । तुंगस्वेन नभो येन ध्यानशे भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्ज-द्वयोमसरः समीनमकरं कन्यालिकुभाकुलं मेघाढ्य सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोद्यद्दृषालं-कृतं । ताराकैरवमिन्दुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नद्यादसी मंडपः ॥ ७ ॥ कृतिरियं श्री पूर्ण भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संघाय ॥

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालपुरीय कांचनगिरि गढ़स्योपरि प्रभु श्री हेमसूरि प्रयो-धित गूर्जर घराधीश्वर परमार्हत चोल्लक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमार पाल देवकारिते श्री पारर्वनाथ सत्कमूल विंश सहित श्री कुवर विहारामिधाने जैन चैत्ये । सद्बिधि प्रव-र्त्तनाय वृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे आचंद्राकं समर्पिते ॥ सं० १२१२ वर्षे एतद्देशाधिप आहमान कुल तिलक महाराज श्री समर सिंह देवादेशेन भां० पासू पुत्र भां० यशोवीरेण समुद्भूते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवा चार्य शिष्यैः श्री पूर्ण देवाचार्यैः । सं० १२५६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पारर्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मूल शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२६८ वर्षे दीपोत्सव दिने अभिनव निष्पन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव सूरि शिष्यैः श्री रामच-न्द्राचार्यैः सुवर्णमय कलसरोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ सुभं भवतु ॥ छ ॥

(२४०)

(१००)

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देल्हा सलक्षण
क्कांपारुयाः क्कांवा पुत्रो वीजाकस्तेन देवदु सहितेन पितृक्कां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय
श्री महावीर जिन चेत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

(१०१)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज
श्री चंदन विहारे श्री क्षीं व रायेश्वर स्थान पतिना महारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री
महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात्
मठ पतिना गोष्ठिकेश्च द्रम्म १० दशकं वेचनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(१०२)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय
राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महामात्यः श्री जल्लदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महा-
राज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री मट्टनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भवेन महं नर-
पतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव
भांडागारे द्रम्माणां शतार्द्धं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्मारुर्द्धेन नेचकं मासं प्रति
करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(१०३)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्ण गिरौ अद्येह महाराज कुल
श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव
राज्य धुरामुद्भवमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंबड पुत्र ठकुर जस पुत्र
सोनी महणसीह भार्या मालहणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी मालहण गजसीह तिहुषा
पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

(१४१)

पाल सुहृदपाल द्वितीय भार्या जालहण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन भार्या नायक देवि
श्रेयोर्थे देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्रा निक्षेप हृदमेकं नरपतिना
दत्तं तत् भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी बलिः
कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(१०४)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अद्योह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पट्ट
श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये.....मुहणोन्न गोत्रे वृद्ध उसवाल ज्ञातीय
सा० जैसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा
सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गी परिस्थित श्री मत
कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी
वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नङ्गणसी सुन्दरदास आस करण लघुभार्या सोहागदे पुत्र सा०
जगमालदि -- पुत्र पोत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नाम्ना श्री महावीर विंवं प्रतिष्ठा
महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री-तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारक शिथिला-
चार चारक साधु क्रियोद्धार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पट्ट प्रभाकर श्री विजय
दान सूरि पट्ट शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतिशोधक
सद्वृत्त जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक षणमास
अमारि प्रवर्त्तक महारक श्री ६ हीर विजय सूरि पट्ट मुकुटायमान भ० श्री ६
विजय सेन सूरि पट्टे संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शेखरायमाण महार-
रक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री विद्यासागर गणि
शिष्य पण्डित श्री सहज सागर गणि शिष्य पं० जय सागर गणिना श्रेयसे कारकस्य ॥

(२४२)

(905)

संवत् १६८३ अषाढ वदि गुरी अखण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महुणोत्त गोत्र दीपक मं अचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंत दे पु० मं श्री जयलला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब यत्नेन स्व श्रेयसे श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक प्रहारक श्री हीर विजय सूरि पहालंकार प्रहारक श्री विजय सेन - - - ।

(906)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी सूत्रधार ऊद्धारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा । दूहा हांराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ म० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(907)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी । महुणोत्त गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे समर्पित । श्री सुपार्व विंवं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे प्र० - - ।

(908)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंवं प्र० त० प्र० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(909)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय प्रामेष्वा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री कुंथुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज प्रहारक श्री विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितैः ॥ श्रीरस्तुः ॥

(२१३)

(910)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरी म० लठांक श्री माण विप्र आ० विजयदेव सूरिभिः ।

(911)

चौमुखजी का मन्दिर ।

संवत् १६८९ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरी श्री श्री मुहणोत्र । गोत्र सा० जेसा भार्या
जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ विव कारित प्रतिष्ठा
महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणा मादेशेन जय
सागर गणिना ।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

(912)

संवत् १२३१ मार्ग सुदि ८ म० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आत्म श्रेयार्थं प्रदत्तः ॥

(913)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-वा० श्री मुनिशेपर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य
त्कथा केकृत ॥

(914)

संवत् १५१७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विलास म० सोम रात्रे आः - -

(२४४)

(915)

श्री शीलै सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा वीर देयिते । महिमा कीर्ति लेखा स्या । तस्य
देवेषु दुर्लभा ॥

(916)

-- श्री पञ्जु वधू असोचय -- बहुया भजजा सुहंकर वणिस्स । सो भन सरावि-
याए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

--- चंदण वाल नासा --- पा मति सिरी सा --- पी --- लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है ।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरी महाराज कुल श्री सामंत सिंह
देव कल्याण विजय राज्ये तन्निष्क श्री २ करणे मं० चीरासेल वेठाउल प्रां० मिगल
प्रभृतयो घर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न
मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २०
उभयादीप ऊर्द्ध सार्थं प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला । पक्षे भोम प्रिय दशविशापक अर्द्धार्द्धेन
ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः
सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

(११५)

जूना वेडा (मारवाड)

(919)

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ अर्षतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेउजकेन स्वयं प्रपूर्ण
वज्र मानाद्यैर्मिलित्वा सर्व वांधवैः ॥ १ ॥ खन्नके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे
कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सुरे प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा
भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(920)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उकेस ज्ञातीय वापणे गोत्रे सेंधवी टीलु भार्यादीडम
दे पुत्र सं० गोपा भार्या गेलमदे पुत्र रूपा चंदा श्री राटुलिया भार्या मन भगोदे पुत्र
भोजा भा० ना - - - श्री पार्श्वनाथ विंव कारित सपा गच्छ भहारक श्री श्री हीर
विज - - - ।

(921)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री ऊकेश गोत्रे श्री सिद्धा चार्य संताने श्रे०
बेरूह भा० देमलतपुत्र श्रे० जन सीहेन सकुटुम्बेन आत्म श्रेयसे पार्श्वनाथ विंव कारितं
प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(922)

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि ५ रवौ प्र० ग० दोला राजू पु० बीसा भा० विमलादे
पु० डुगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विमलनाथ विंवे का० प्र० श्री महाहडां गच्छे श्री नय
कीर्ति सूरि भि० माल्हेणसू ग्रामे वास्तव ।

(११६)

(923)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सोलाकी
बाबणे सागासाहा भी दाजा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरसी श्री
कुंथुनाथ विंवं श्री हीर

(924)

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति ठय० चाहड भार्या राणी पु० ठय० वेला प्रमुख
कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः
चंपरा ग्रामे

(925)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहड़ा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिलहरा
सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या
कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विंवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

(926)

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उक्तेष लोढा गोत्र सा० फांजू आ० कपूरी सुत सा०
वीरपालेन मा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मसी भातृ दिलहादि युतेन आ० संभवनाथ विंवं
कारित प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

(927)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथौ इहर नगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय।
मं० श्री। लहुआ सुत मं० जसा मं० श्री रामा महा आधेन भार्या रला। दम० कडूआ

(९१७)

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं । श्री श्रीतपागण्ड
बुगप्रधान विजय दान सूरि पहे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि
दशमी दिन ॥

(९१८)

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ८ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा भा० रतनादे
पु० आका भा० यस्मीदे पु० हराजावड मेरुदि साहि तिथी चति मत्तं श्री वास पूज्य
विंवं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(९१९)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उषदेशेन प्रतिष्ठितं ।

(९२०)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय वाहडा गोत्रे - - - - संभवनाथ
- - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव (मारवाड)

(९२१)

संवत् १५१६ वर्षे पौष वदि ११ दिने गुरुवारे श्री राडूउड राज्ये श्री सोम्र वंम पुत्र
श्री श्री वयं रसल्ल नरेस्वरेण बांधव सामंत सलहा पुत्र हरुव मुख सपरिवारेण तेज बाई
मरतार माटी महिप पुण्यार्थं गोबिंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि
उपदेशेन पटहो बांधव मं० धारा पुत्र धायल मंडाही पुत्र नालहा मं० जाणा मं० दे०
ऊट प्रमुख श्री संघ समु मरां पटही बाणमानो चिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लघतं ॥

(२७८)

सांचोर (मारवाड)

(१३२)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज
श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय भंडारी भंजग सिंह पुत्र भंडारी
पालहा सुत छोवाकेन वृद्ध भ्रातृ भ० साम वधू घासकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म
श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारतः ॥

रत्नपुर ।

मारवाडके जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

(१३३)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्रे० उद्धारण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रि-
कया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयार्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारतः ॥

(१३४)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंश कुमार पुत्र श्रे० धवल भार्यया वला० नागू
पुत्रिकया संतोष परम श्राविकया स्व श्रेयार्थे श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोय
कारितः ॥

(१३५)

ॐ ॥ संवत् १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री
चाचिंग देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभति पंच
कुल प्रतिपत्ती रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं महं माघव

सुत महं मदन सुत महं घीणा । श्री कुमरसिंह सुत महं ऊदल प्रभृति पंच कुलेन श्री
 पार्श्वनाथः देव प्रतिवद्गु श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि
 शिष्य श्री अजित देव सूरीणा मुपदेशेन हह द्वय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्रार्कं नंदतु ॥
 बहुभिर्बसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य
 तदा फलं ।

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुराबद्येह रत्नपुरे महाराज कुल श्री सांवन सिंह ।
 कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्तमहं कटुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ
 प्रतिवद्गु महा महणा श्री सांता महं विजयपाल गो लषण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां
 विदितं अक्षरानि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वांस्तव्य गूर्जर न्यातीय श्री राजा सुत आदा
 गांगा सुत मंडलिक मदन प्रवृत्ति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद्गु तोडक प्रवेश
 द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हहात् द्वितीय हह श्री गांगा श्रेयोर्ये आदा सत्क देव कुलिका
 शिव पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकैः । विदितं हहं समर्पितं । अस्य हह
 निक्रड प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाचकेन वीसल प्रीययाय एक विंशत्तयाधिक
 शत मेकं प्रदत्तं । हह मिदं चतुर्भि गोष्ठिकैः संमिलतै भूत्वा भाहक संस्था करणीया
 स्वात्मीय परिणा श्रीष्टि आदा भुक्तक सांघ विनैः भाहके हहं कस्यापि नार्पणीयं । तथा
 सत्क उत्तपत्ति ठयय कर्ण वाणगोष्ठिकानु विना एकाकिनैः न कर्त्तव्या । उत्तपत्ति मध्यात्
 देव कुलिकाया शिंघानां नेचकप देवी ० द्र २ । ३ वर्षं प्रतिदातव्या उत्तपत्ति मध्यात्
 हह पत्तित दुसित पदे कमठाय कारापनीया । यच्च भाहक स्वक द्रव्यं वर्द्धति तत् पोष
 कल्याणक दिने देव कुलिकाया शिव भोग करणीय । उरितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ सत्क
 नाडि कायां यवं । न्यां खेपनीयं निक्षेप उधार गोष्ठिकै करणीय । अत्र मतान महा
 महणा मतं श्रीष्टि सोता मतं धराणे गभी वा हस्तेन महं विजय पाल मतं । गोष्ठिक
 लषणा मतं ॥ स

(२५०)

बिलाड़ा (मारवाड)

(१३७)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगधिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अमयसिंह जी कंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये वृहत् खरतर श्री आचार्य गच्छे । महारक श्री जिन कीर्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति । श्री बिलाड़ा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्थानको श्रमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कलावत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नाय श्री सुमतिनाथ जी देव लो जातः - - - - द्रघर प्रीषन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रतापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव-श्री भवतु ।

बोईया (मारवाड)

(१३८)

संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवा भुडपद्र वास्तव्य श्रावक साम्रण भार्या जिसवई सुत रोहड रामदेव प्रावदेव कुटुंब सहितेन रामबदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्वा० २० ।

(१३९)

सं० संवत् १२५० आषाढ वदि १४ रवौ बहुविध वास्तव्य २० रोहिल सुत चांचल तत्सुत गुण घर सालहणाभ्यां मातृ धिरम्मति श्रेयार्थे स्तम्भ लता - - - - द्वां० २० प्रदत्ता ।

(२५१)

कोटार (गोड़वाड़)

(१४०)

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽथेह समाण . . . सउ ि . . . या प्रा०
इनउ . . . पयरा महं सज्जन ठ० मह भा . . . ठ घणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च
कुलेन श्रीधात भिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतु-
विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पालनीया शच ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥
शुभं भवतु ।

(१४१)

सं० १३३६ वर्षे श्रेष्ठि को सीहन चयपने दत्तद्र १२३ - यद्र ३६ स - प - १ मुंडा -
या स्वस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षे वर्षे प्रति - - - - या दातव्याः ॥

किराडू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दुओं के समय में इस
स्थान का नाम किराट कूप या और जैनियों के प्रसिद्ध नृपति कुमार पाल ने इस
स्थान में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कईएक बहुत सुन्दर शिव मन्दिर बनवाया
था । काल के चक्र से इस समय उन देवालियों की बहुत बुरी हालत है और सब लेख
भी नष्ट हो गये हैं ।

(१४२)

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥ नमोऽनंताय सूक्ष्माय ज्ञान गम्याय वेधसे । विश्वरूपाय शुद्धा-
य देव देवाय शंभवे ॥१॥ देवस्य तस्य चरितानि जपन्ति शंभोः स (श) इवत् कपाल

विधु (भस्म) विभूषणस्य । गठर्वः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गौरी जितं च चिर-
 बलकल वर्षं दर्शात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - भूषिते वरूद भूधरे । सुरभ्याः
 परमाराणां वंशो - - - - - नल कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु
 धिराजो महाराज - - - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गल मिलद्वैरि - -
 - - - - - प्रतापो ज्वल दूषलः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमोशाभ्यर्चनीयो भू - - - - -
 सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो लवण वैरिहं भवः ॥ - - - - - ॥७॥ सिंधु राज घरा
 धार घरणी घर धाम वान ॥ मा - - - - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया
 देव राजेश्वर- - - - - ॥९॥ - - - - - मपहाय मही मिमां । मन्ये कल्प
 द्रुमः प्रायाद दृश्यक - - - - - ॥१०॥ - - - - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि
 राजेंद्रो रंजितो - - - - - ॥११॥ - - - - - धंधुक - तः । येन दुर्वार वीर्येण
 भूषितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः
 ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोच्छ्रु राजारुयः स्य - - - - - स्व - - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा
 दुदय राजारुयो महाराज- - - - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोड गौड कर्णाट
 मालवोत्तर पश्चिमं । - - - - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-
 त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण भपि यो राज्य मुद्घ्रे
 भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - - - यद्व - ॥ १८ ॥ - - - - - अतश्च नव गत वर्ष ११८६
 १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा जयसिंहस्य सिद्धराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर
 राजेन सिंधु राजपुरोद्वं । भूपो निर्व्याज शीर्येण राज्य मेतत्समुद्भूतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश
 संख्येषु पञ्चाधिक शते १२०५ ष्वलं । कुमार पाल भूपालात् सप्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥
 किराट कूप मात्मोयं शिव कूप समन्वितं । निजेन क्षत्र धर्मेण पालयामास यश्चिरं ॥२२॥
 अष्टा दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशकेऽश्विने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते
 दिनात् ॥ २३ ॥ दंडं सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात् । सह पंच नखांश्चैवमय-
 रादिभिरष्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोद नवसरो दुर्गो सोमेश्वरो ग्रहात् । उच्चांगवरहा
 साह्यां चक्रे चैवात्म सादसी ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः । पुनः

(२५३)

संस्थापयामास तेषु देशेषु जज्जकं ॥ २६ ॥ प्रद्यस्ति मकरो देतां नरसिंहो नृपाज्ञया ।
लेखको त्रय (णे] देवः सूत्र धारोस्तु जयोधरः ॥ २७ ॥ विक्रमे संवत् १२१८ अश्विन
सुदि १ गुरौ ॥ मंगल महा श्रीः ॥

सूधा पहाड़ी ।

मारवाड़के जसवंतपुरा के पास उत्तरकी तर्फ पहाड़ीके ढलावमें सूधा माता नामक
चामुंडाके मंदिरमें लगे हुए दो पत्थरों पर यह लेख खुदे हुए हैं ।

(१४३)

श्रीं ॥ श्वेतांभोजातपत्रं किमु गिरि दुहितुः स्वस्तटिन्या गवाक्षः किंवा सीरुयासनं
वा महिम मुख महासिद्धु देवी गणस्य । त्रैलोक्यानंदहेतोः किमुदितमनघं श्लाघ्य
नक्षत्र मुश्चै शंभोर्भालस्यलेदुः सुकृति कृतनुतिः पातु श्री राज लक्ष्मीं ॥ १ ॥ ईशस्यां-
कारानिरनुपमानंद संदीह मूला चंचद्वासोचल दलमयी भूषण प्रौढ पुष्पा । सल्ला-
वणयोदय सुफलिनी पाठ्यती प्रेम वल्ली लक्ष्मीं पुष्पात्वनु दिन मति व्यक्त भक्त्या
नतानां ॥ २ ॥ विकट मुकट माद्यतेजसा व्योम्नि दैत्यानिव भुवि मणिमय्या मेखलायाः
क्लणेन । अनणुरणित लीला हंसकैस्त्रासयंती फणि पति भुवनांतरचडिका वः श्रियेस्तु
॥ ३ ॥ श्री मद्रत्समहर्षि हर्ष नयनो द्रुभूतांबु पूर प्रभा पूठवोर्ध्वीधर मौलि मुख्य शिख-
रालंकार तिग्मद्युतिः । पृथ्वीं त्रातु मपास्त दैत्य तिमिरः श्री चाहमानः पुरा वीरः क्षीर
समुद्र सोदर यशो राशि प्रकाशो भवत् ॥ ४ ॥ रत्ना वल्यामिव नृपतती तत्क्रमे विश्रु-
तायां धर्मस्थान प्रकर करण प्राप्त पुण्योत्सवायां । श्री नद्दूलाधि पतिर भव
लक्ष्मणो नाम राजा लक्ष्मीलीला सदन सदृशाकार शाकंभरीद्रः ॥ ५ ॥ आपाताला
स्वमर जलधिं मदरो यस्य खड्गो मुष्टिव्याजाद्भुजग पतिना ऋखले नावबहुः ।
निर्ममध्योच्चैः सपदि कमलां लीलयोद्घृत्य मत्तश्चक्रे नृत्तं रणित कटकः केलि कंपच्छलेन

॥ ६ ॥ तस्माद्भि माद्रि भवनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्व तनूद्वयोथ । गां-
भीर्यैर्य सदनं बाल राज देवो यो मञ्जुराज बल भंगमचीकरत्तं ॥७॥ साम्राज्याशा क रेणुं
रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जह्ने यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंध्य शैलाव
मनि । मुक्ता शुक्कोटु कांतोज्ज्वल रुचिषु लसत्कीर्तिरेवातटेषु प्रीढानेदोपचारो लक्षण
पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ८ ॥ तत्पितृव्य जतयाथ बांधवः श्री महांदुर जनिष्ट
भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायाया विरहितं मुखं द्विषां ॥ ९ ॥ जह्ने कांतस्तदनु
चभुवस्तत्तनुजो श्वपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्णं चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु
तमसा नैव दोषाकरात्मा तेजो मक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ केयूराग्र
निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाडं वरं वयक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः प्रिता ।
वीरेषु प्रसृतेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निम्मल गुणैर्वश्या
प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन खष्टा यस्य वधघित
यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंभतरचारु चले मध्यस्थायि
ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजय-
द्रुणेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं बलं वाडवानल दृशांबुधे र्जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल
वसुमती मंडलस्तत्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदय जिताराति मल्लो जहिल्लः । भीम
क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्र हृद्यार्थां भोनिधि रघु कृते वहे पंक्तिः खलानां
॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण
व्यापार पारंगमा । पानानि प्रसन्नं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य
नरेश्वरस्य तुलनां सेनांशु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्वीरुद् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दस्वा
दृशं ध्यातास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि वनांतरेषु वित्त-
तान्या लोक्य हाहेति वाक् सस्मारा तपवारणानि शतशो यद्द्वैरि राज व्रज — ॥ १६ ॥
दृष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरीं यो बलाज्जग्राहानुजघान मालव पतेर्भोजस्य
साढाह्वयं । दंढाधीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय य-
शसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जह्ने भूभृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमहमा-

भृश्वरण युगली मर्दन वयाजतो यः । कुर्वन्पीडा मति बलतया मोक्षयामास कारागा-
 राद् भूमी पति मपि तथा कृष्णदेशा निधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्मो जलद् भ्रमं दधुरहो सैन्येस्य से-
 वारसा यातर्तुप्रतिमे समुत्तुत्रल पटा वासा मराल श्रियं । कपं वायु वशेन केतु निवहाः
 शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां चित्ते तु तापं द्विषः ॥ १९ ॥ श्रीमां-
 स्तस्याजनि नर पति र्बांधवो जिंदुराजो यः संडेरैऽर्कं इव तिमिरं वैरि वृद्धं शिमेद ।
 यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-
 मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भ्रूषणानां प्रपाते वाष्पासायै-
 र्घनतति तुलां शिञ्जतीनामरण्ये । दूर्वा भ्रांतिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांबूलीय
 भ्रममिव चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र मतिमान् यः कर्षुका-
 णां करं मुञ्चन् प्राप यशांसि कुंद घवला न्यानंद हृद्याननः । पृथ्वी पाल इति ध्रुवं क्षिति
 पति स्तस्यांग जन्माभवत्प्रत्येक्षोरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णस्य सैन्या पद्मः ॥ २२ ॥
 यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्त्तिं स्ववंती पयः स्वच्छंदं सचराचरेपि भुवने शत्रू-
 स्तृणी कुर्वती । धर्मं व्रत्समिव स्वकीय मनघं वृद्धिं नयती मुदा कस्यानंद करी बभूव न भुवो-
 भीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजको भूपतिरस्य बंधु विवेक सौध प्रबल प्रतापः ।
 श्वेतात् पद्मेण विराजमानः शक्त्याणहिल्लारुय प्रेपि रेमे ॥ २४ ॥ त्यक्त्वा सौधमुदार
 केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पल्यंका क्षयणं करेणुषु मुदां स्थानं समंताद्पि । यस्या-
 रि क्षितिपाल घाल ललनाः शैले वने निर्भरे स्थूल ग्रावशिरस्सु संस्मृति मगुः पूर्वोपभुक्त
 श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा समजनि वसुधा नायक स्तस्य बंधुः साहाय्यं मा-
 लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः । तुष्टो घत्ते स्म कुंभं कनक मय महो
 यस्य गुप्यद्गुरु स्थं तं हर्तुं नैव शक्तः कलुषित हृदयः शेष भूपाल वाग्मिः ॥ २६ ॥ उदय
 गिरि शिरः स्थं किं सहस्त्रांशु बिंबं वितत विशद कीर्त्ते मूर्ध्नि किंनु प्रतापः । उपरि
 सुभग साया उद्गता मंजरी किं कनक कलश आभाद्यस्य गुप्यद्गुरु स्थः ॥ २७ ॥ कनक
 रुचि शरीरः शैलसाराभिरामः फणि पति मयनीयस्यावतारः स विष्णोः । सलिल निधि
 सुहाया मंदिरे स्कंध देशे दधद्वानि सुदारामग्निमः पुण्य मूर्तिः ॥ २८ ॥ सत्रागार

तडाग-कानन-हरप्रासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्ममे द्विज जनानंदी क्षमा मण्डले ।
धर्मस्थान शतानि यः किल घुघ श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शैल धवलं स्तोतुं
यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुश्रुवां चंचनमौक्तिक-
भूषणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि । प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुभ्राणि
बह्वीकषां वृदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मी श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रियं
बृहद्गच्छीय-श्री जयमंगला चार्य-कृतिः ॥ भिषग्विजयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता ।
सूत्र जिषपाल-पुत्र-जिसरविषोत्कीर्णा ॥

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नन्त्रेषु
नृपतां । प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तथा तथा वा देयाद्वः शुभ मिह सुगंधाद्रि
मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाह्वो जज्ञे भूभृदुवन विदित
श्चाहमानस्य वंशे । श्रीनदूदूले शिव भवन कृदुर्म सवस्व वेत्ता यत्सा हाय्यं प्रति पद
महो गूज्जंरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्केतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाला गुरु स्फूर्ज्ज
श्चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाम्र कर्मा गिरी । सौराष्ट्र कृटिलोग्र कण्टक भिदात्युद्गाम
कीर्त्तिस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तथा सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज
इह नृपः केलहणो दक्षिणा शाधीशोदचद्विलिम नृपते र्मान हृत्सैन्य सिंधुः । निर्भि-
द्योच्चैः प्रबल कलितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥ ३४ ॥
आतास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद् भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-
वांबु वाहो पमः । यत्स्वङ्गां युनिधौ हतारि करिणां कुंभस्यलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो
मराल ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥ ३५ ॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भिस्वा शरैरासलं
तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरंजित्स्वारण प्रांगणे । श्री जाबालि पुरे स्थितिं व्यरचयन्-
द्दुल राज्येश्वर शिचंता रत्न निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

समर सिंह देवस्तनयः क्षोणि मण्डलाधिपतिः । इन्द्र इव विबुध हृदयानन्दी पुरु-
 षोत्तमो हरिषत् ॥ ३७ ॥ प्राकारः कनका चले विरचितो येनेह पुण्यात्मना नामा यंत्र
 मनीह कोष्ठक ततिर्वद्याधरी शीर्षवान् । किं शेषः फण वृंदमेदुर तनुर्वक्ष स्थले वा भुवो
 हारः किं अमण अमादुङ्गणः किं वेष भेजे स्थिति ॥ ३८ ॥ कमल वनमिवेदं वप्रशीर्षा
 लि दंभास्त्रिखिल विपुल देश श्री समा कर्षणाय । लिखित विशद चिंदु श्रीषिवन्मत्त
 बैरि क्षितिपति विफला जिस्तोम संख्या निमित्तं ॥ ३९ ॥ तोलयामास यः स्वर्णैरा-
 त्मानं सोमप्रवणि । आराम रम्यं समरपुरं यः कृतवानथ ॥ ४० ॥ श्रीकीर्त्ति पाल
 भूपति पुत्रो जावालि पुरधरे चक्रे । श्री रुदल देवी शिव मंदिर युगलं पवित्र मतिः ॥ ४१ ॥
 श्री समरसिंह देवस्य नंदनः प्रबल शौर्य रमणीयः । श्री उदयसिंह भूपतिरभूत्प्रभा भास्व-
 दुपमानः ॥ ४२ ॥ श्री नद्गूल-श्री जावालि पुर-माण्डव्यपुर-वाग्भटमेरु-सूराचंद्र-
 राटहृद-खेड--रामसैन्य श्री माल-रत्नपुर-सत्यपुर-प्रभृति देशा नामय मधिपतिः
 ॥ ४३ ॥ शेषः स्तोतुमिव प्ररुढ रसना भारः समंतादभूत् क्षीराब्धिः परिरब्ध् मुद्गधुरभुजः
 कलोल माला मिषात् । द्रष्टुं चानि मिषाक्षि-पंकज वनो वास्तोः पतिर्यस्य तां
 विश्व श्री हृदयस्य हारलतिकां कार्तिं सितांशुज्ज्वलां ॥ ४४ ॥ श्री प्रह्लादनदेवी राज्ञो
 यस्यां गजं प्रसूते स्म । श्री चाचिग देवाह्वं तथैव चामुंडराजाख्यं ॥ ४५ ॥ धीरो
 दात्तस्तुरुष्काधिपमददलतो गूर्जरेंद्रैर जेयः सेत्रायात क्षितीशोचित करण पटुः सिंधु
 राजांतको यः । प्रोढामन्याय हेतु भरत मुख महा ग्रन्थ तत्रार्थ वेत्ता श्री मज्जावालि
 संज्ञे पुरि शिव सदन द्वंद्व कर्ता कृतज्ञः ॥ ४६ ॥ तत्पहोदय शैल भानुरनघप्रोढाम चर्म
 क्रिया निष्णातः कमनीय रूप निलयो दानेश्वरः सु प्रभुः । सौम्यः शूर शिरोमणिश्च
 सद्यः साक्षादिवेद्रः स्वयं श्री मांश्चाचिग देव एव जयति प्रत्यक्ष कल्प द्रुमः ॥ ४७ ॥
 म्रुंगेन भयंकरेण विजित प्रत्यर्थि भूमी पतिः श्री मांश्चाचिग देव एव तनुते निर्विघ्न
 वृशिं भुवं । द्वैजिह्वयं विदधातु पन्नग पतिर्वक्रं वराहो मुखं कूर्मो नक्रततिं करीद्रि
 निवहः संघात सौस्थ्यं परं ॥ ४८ ॥ मेरोः स्थैर्यं वचन रचनं वाक्पते यस्य तुल्यं पृथ्वी
 भारीदुरणमसमं पन्नगेंद्रानुषंगि । साक्षाद्रामः किमयमथवा पूर्णं पीयूष रश्मिश्चिंता

रत्नं प्रणयिनि जने देव एवैष तस्मात् ॥ ४९ ॥ स्फूर्जद्वीरम गूर्जरेण दलनो यः शत्रु शल्य
 द्विषश्चंचत्पातुक पातनैकरसिकः संगस्य रंगा वहः । उन्माद्यन्नहरा चल स्य कुलिशा
 कार खिलोकी तल आम्यत्कीर्त्तिर शेष वैरि दहनोदग्र प्रतापोल्लवणः ॥ ५० ॥ श्री माले
 द्विज जानुवाटिक कर त्यागी तथा शिग्रहादित्य स्यापि च राम सैन्य नगरे नित्यार्च-
 नार्थ प्रदः । प्रोत्तुंगेप्य पराजितेश भवने सौवर्ण-कम्भध्वजारोपी रूप्यज मेखला
 वितरण स्तस्यैव देवस्य यः ॥ ५१ ॥ चक्रे श्री अप राजितेश भवने शाला तथा-
 स्यां रथः कैलास प्रतिमखिलोक कमलालंकार रत्नोच्चयः । येन क्षोणि पुरंदरेण
 कृतिना मानंद संवित्तये भाग्यं वा निज मेव पर्वत तुलां नीतं समंतादपि ॥ ५२ ॥
 कर्णो दान रुचिर्बलिश्च सुकृती श्लाघ्यो दधीचि स्तथा हृद्यः कल्पतरुः प्रकाम मधुरा-
 कारश्च चिन्तामणिः । श्री मन्वाचिगदेव दान मुदिता स्तन्नाम गृह्णन्ति यत्तत्कीर्त्त-
 रपि नूतनत्व मन्मथद्वभूमीभुजां सद्गुणसु ॥ ५३ ॥ स्फूर्जन्निर्भर भाङ्कृतेन सुभगं तत्केत-
 कीनां वनं मिथी भूतमनेक कम्ब कदली वृन्देन घत्तेऽन्न यः । आम्राणां विपिनं च देव
 ललना वल्लोरुह स्पर्द्धये बोद्यत्प्रोढ फलावली कवचितं जम्बू वने नाचितं ॥ ५४ ॥ मरी
 मेरो स्तुल्यस्त्रिदश ललना केलि सदनं सुगन्धा द्विर्नानातरु निकर सन्नाह सुभगः ।
 नृपेणेंद्रेणैव प्रसूमर तुरङ्गोच्चय खुर प्रकं प्रोवर्धी पीठ रतिरस वशात्तेन ददृशे ॥ ५५ ॥
 तन्मूर्दिघ्न त्रिदशेंद्र पूजित प्रदां भोज द्वयां देवतां चामुंडा मघटेश्वरीति विदिताम
 भ्यर्चितां पृथ्वीजैः । नत्वा भ्यर्च्य नरेश्वरोथ त्रिदधेस्या मदिरे मंडपं क्रोडत्किंनर
 किन्नरी कल रवो न्माद्यन्मयूरी कुलं ॥ ५६ ॥ सम्बत् १३१९ त्रयोदश शतै कीन विंशती
 मासि माघवे । चक्रेऽक्षय तृतीयायां प्रतिष्ठा मंडपे द्विजैः ॥ ५७ ॥ संपल्लार्थं घटयतु
 शुभं कुंभि ब्रह्मो गणेशः सिद्धि देयादभि मत तमां चांडिका चारु मूर्तिः । कल्याणाय
 प्रभवतु सतां धेनु वर्गाः पृथिव्यां राजा राज्यं भजतु विपुलं स्वस्ति देव द्विजेभ्यः ॥ ५८ ॥
 स श्रीकरी सप्तक वादि देवा चार्य स्य शिष्योऽजनि रामचन्द्रः । सूरिर्विनेयो जय मङ्गलो
 ऽस्य प्रशस्तितेशां सुकृती व्यधत् ॥ ५९ ॥ भिषग्वर-विजय पाल-पुत्रेण नाम्बसीहेन
 लिखिता ॥ सूत्रधार-जिसपाल-पुत्रेण-जिसराविणोत्कीर्णना ॥

घटियाला ।

यह स्थान मारवाड़ के राजधानी जोधपुर के पश्चिम उत्तर की ओरमें अवस्थित है और इसी गांवके पास यह शिला लेख मिला था इसकी भाषा प्राकृत है और मारवाड़ के सब लेखों से प्राचीन है ।

यह लेख जोधपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने मारवाड़ के प्राचीन लेख नामक पुस्तक में संस्कृत अनुवाद के साथ छपवाया था वही यहां पर प्रकाशित किया जाता है ।

घटियाला ।

ओं सग्गापत्रग्गमग्गं पढमं खयलाण कारणं देवं । जीसेस दुरिअ दलणं परमं गुणं
 णमह जिणणाहं ॥ १ ॥ रहुत्तिलओ पडिहारो आसी सिरिलक्खणोत्तिरामस्स । तेण पडि-
 हार वग्गो समुण्हं एत्थ सम्पत्तो ॥ २ ॥ विपो सिरि हरिअन्दो भज्जा आसीत्ति खत्तिआ
 भद्दा । अस्स सुओ उप्पणो वीरो सिरि रज्जिलो एत्थ ॥ ३ ॥ अस्सवि णरहइ णामो जा
 ओ सिरि णहइत्तिए अस्स । अस्सवि तणओ ताओ तस्सवि जसवट्ठणो जाओ ॥ ४ ॥
 अस्सवि चन्दुअ णामा उप्पणो सिल्लुओ विए अस्स । ऋडोत्ति तस्स तणओ अस्स
 वि सिरि भिल्लुओ जाइ ॥ ५ ॥ सिरि भिल्लुअस्स तणओ कक्को गुरु गुणेहि गारविओ ।
 अस्सवि कक्कुअ णामो दुल्लह देवीए उप्पणो ॥ ६ ॥ ईसिविआसहसिअ महुरं
 भणिअं पलोइअं सोम्मं । णमयं जस्सण दीणां रासोथे ओथिरामेत्ती ॥ ७ ॥ णोजम्पिअं
 ण हसियणं कयं ण पलोइअं णम्सरिअं । णथिअं णपरिदभ मिअं जेण जणे
 कज्ज परिहीणं ॥ ८ ॥ सुत्थादुत्थादि पया अहमातहउत्तिमा तिसोक्खेण । जणणिव्व जेण
 धरिआ णिक्खंणिय मण्डले सव्वा ॥ ९ ॥ उअरोहरा अमच्छर लोहे हिमिणाय वज्जि
 अं जेण । णक ओदो एह विसेसो ववहारे कावमण यम्पि ॥ १० ॥ दिअवर दिएणाणुज्जं
 जेण जणं रज्जिऊणं सयलम्पि । णिम्मच्छरेण जणिअं दुट्ठाणं विदण्डं णिट्ठणं ॥ ११ ॥

घनरिद्ध समिद्धाणं वि पउराणं निअकरस्स अक्षमहिअं । लक्खं सयञ्जु सरिसं तर्णाञ्च तह
 जेण दिट्ठाईं ॥ १२ ॥ णवजोठवणरूअपसाहिएण सिंगार गुणम कक्केण । जणवयाणउज
 मलउजं जेण णेह संचरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरु तरु णाण तह सही गय वयाण तण
 ओठव । इय सुचरिऐहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सवधो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणसया
 सम्माणं गुण युद्धं कुणं तेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणइण धर्णाणवहं ॥ १५ ॥ मरु
 माइवल्ल तमणी परिअंका अउजगुञ्जरित्तासु । जणिओजेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि
 अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिउण गोहणाइं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ
 जेण विस मेवडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं दमहु अविं
 देहि । वरइच्छुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्टारह
 समगलेसु चेतम्मि । णक्खत्ते विहु हत्थे वहवारे धवल वीआये ॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण
 हट्टं महाजणं विप्यपय इवणि वहुलं । रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किशि विट्ठिए ॥ २० ॥
 मड्डोअरम्मे एक्को वीओ रोहिन्स कुअगामम्मि । जेण जसस्स व पुजांए एत्थम्मा स-
 मुत्थविआ ॥ २१ ॥ तेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठलणं । कारविअ
 अचल मिमं भवणं भत्ताए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेएं भवणं सिट्ठस्स धणेसरस्स
 गच्छम्मि । तह सन्त जम्भ अम्भय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले
 कलंक रहितं रूपं नवं योवनं । सौभाग्यं गुण भावन शुचि मनः क्षांति
 यथो नम्रता ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गापवर्गं मार्गं प्रथमं सकलानां कारणं देवं । निःशेष दुरित दलनं परम गुरुं नमस्त
 जिन नाथम् ॥१॥ रघु तिलकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार
 वंशः समुन्नतिमत्रं संप्राप्तः ॥२॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत् इति क्षत्रिया भद्रा ।
 अस्य सुत उत्पन्नः वीरः श्री रज्जिलोत्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भट्ट नामा जातः श्री नाग
 भट्ट इति एतस्य । अस्यापि तनयस्तातः तस्यापि यथो वर्द्धनो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंदुक नामा उत्पन्नः सिल्लुकोपि एतस्य । ऋट इति तस्य तनयः अस्यापि श्री सिल्लुको
 जातः ॥ ५ ॥ श्री सिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्वितः । अस्यापि कक्कुक नामा
 दुर्लभ देव्यामृत्पन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाशं हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं सौम्यं । नमनं
 यस्य न दीनं रासः स्थेयः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न प्रलोकितं
 न संमृतम् । न स्थितं न परिभ्रातं येन जने कार्यं परिहीनं ॥ ८ ॥ सुस्था दुःस्था द्विपदा
 अधमा तथा उत्तमा अपि सौरुयेन । जनन्येव येन धृता नित्यं निज मण्डले सर्व ॥ ९ ॥
 उपरोध राग मत्सर लोमैरपि न्याय वर्जितं येन न कृतो द्वयोर्विशेषः व्यवहारे कदापि
 मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञं येन जनं रक्तवा सकलमपि । निर्मत्सरेण जनितं दुष्टा-
 नामपि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्धं समृद्धानामपि पीराणां निज करस्याभ्यर्थितम् ।
 लक्षं शतं च सदुशस्त्रेण तथा येन दुष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन शृङ्गार
 गुणज्ञ कक्ककेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नेह संचरितम् ॥ १३ ॥ धालानां गुरुस्तरुणानां
 तथा सखा गत वयसां तनय इव । प्रिय सुचरितैर्नित्यं येन जनः पालितः सर्वः ॥ १४ ॥
 येन नमता सदा सन्मानं गुणस्तुतिं क्वंवा । जल्पता च ललितं दत्तं प्रणयिभ्यो घन-
 निवहः ॥ १५ ॥ मरुमाडवल्लस्त्र मणी परि अंका अज्जगुर्जरेषु । जनितो येन जनानां
 सचरित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोधनानि गिरी जाला कुलाः पल्लयः । जनिता
 येन विषमै वटनाय कमण्डले प्रकटम् ॥ १७ ॥ नीलोत्पल दण्डगन्था रम्यमाकन्द मधुप
 वृन्दैः । वेरक्षु पर्णछन्दा एषा भूमिः कृतायेन ॥ १८ ॥ वर्षं शतेषु च नवसु अष्टादश सम
 ग्रहेषु क्षेत्रे नक्षत्रे त्रिधु भस्थे बुधवारे धनलि द्वितीयायाम् ॥ १९ ॥ श्री कक्ककेन हृत्
 महाजनं विप्र प्रकृति यणिज बहुलम् । रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं कीर्तिं वृद्धै ॥ २० ॥
 मण्डोवरे एको द्विनोयो रोहिन्स कूप ग्रामे । येन यशस इव पुञ्जावेतौ स्तंभौ समुत्तमौ
 ॥ २१ ॥ तेन श्री कक्ककेन जिनस्य देवस्य दुरित निदलनम् । कारितमचलमिदं भवनं
 प्रकथा शुभ जनकम् ॥ २२ ॥ अपितमेतद्भवनं सिद्धस्य धनेश्वरस्य गच्छे । सहशांत जम्बु
 आचक्र वनि भाटक प्रमुख गोष्ठये ॥ २३ ॥ श्लाघ्य जन्म कुले कलक रहितं रूपं नव
 यौवनं । सौभाग्यं गुण भावनं शुचिमनः क्षान्तिर्यशो नम्रता ॥ २४ ॥

(२६२)

पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है । यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं ।

(946)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या धनी पुत्र केलहा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केल्ला पीडरवाडा ग्रामे श्री महावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । साः जीवा श्रीयोर्ये सा० जीवा दिने ४० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे । रायि श्री दुर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या बेलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास — — — — वाई लाछल दे श्रीयोर्ये पीडरवाडा ग्रामे श्री महावीर प्रासादे देहरी कारापितं । श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्री० वा० लाछलदे श्री० ।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासिल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या बेलदे ।

(२६३)

छाछलदे ससारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन सी रामदास शहंस कर्ण पीडरवा
ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्री चोर्ये श्री तपा गच्छे श्री
हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सू० शुभं भवतु
कल्याणमस्तु ॥

(१४९)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्रे श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण सालजी
विजय राज्ये प्राग वंशे सा थाथा भार्या गांगादे पुत्र सा - मा भार्या कसमीरदे पुत्री
रभी पीडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं भाई गांगादे श्री चोर्ये श्री
तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(१६०)

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे भागुण वदि ११ शुक्रे श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उदह
सिंघ जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाल
भार्या छाछलदे पुत्र रामदास करण सी सहस करण - - - पीडर वाडा ग्रामे श्री
माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे आणद
विमल सूरि - - - -

(१६१)

आंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्राग्वाट वंशे व्यवहारि सागा सूनुः प्रसूनोज्ज्वल कांत
कारिः । श्री पुण्य पुष्पा जनि पूर्ण सिंह स्वस्य प्रिया जालहण देवि नाम्नी ॥ १ ॥ मदुर
प्रद्वारत रोरु - - - - कलापः किल कुर पालः । जाया घर्म मोदिकन्दो प्रमुक्ता तस्या
प्रवत्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ सदयो २ वामामृतैः सुहितो लोक हितो सतां मतिः ।

समथी विनयी चिती चणौ विजयते तनयी तयोरिमौ ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन श्रेणी रत्नं
 रत्नाभिधो धनं । धनापह्य जन मूढ - राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्विती-
 बेंदु कांति कांच गुणोच्चयः । धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी
 धारल देव्यो जात्यो तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिणी
 ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५-तेजा पासल वास जालहणेनारुयाः । शांत स्वभाव कलिसा गुण
 करु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार
 शैलरः । पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला मिधः सूनु स्त-
 स्पुत्रो भावतोऽशठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सूवित्तः ।
 लीवाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सू
 देवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते ढययो पेटे शीलानुद्यम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा
 देवी तनुजो मनुजो चित्त चारु लक्ष्मणो पेतः । अमरो धमरो गुरु जन जन -- जनन्यादि
 पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे धरा धीशे
 प्राज्य राज्यं - रीक - ॥ १३ ॥ आस्यामुत्ताभ्यां धनि पूर पाल लीवाभिधाभ्यां सदु-
 पासकाभ्यां । ग्रामेऽग्निमे पीडर वाढकारुणे प्रसाद - - - विरुद् धारि सारः ॥ १४ ॥
 विक्रमाद्वाण तर्कान्धि भूमिते वत्सरे तथा । फाल्गुनारुणे शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिधौ
 ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्धय भ्युदयेक दायकः, श्री वर्द्धमान श्चरमो जिनेश्वरः । श्री मत्तपः
 संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आरवींदु समयादनया श्री
 वर्द्धमान जिन नायक मूर्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंवर चैत्यं
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

राज श्री अमर सिंह जी लषावता देहनारा देहधी आरोहतो - कमनइ काथोछइ ।
 आजक - वान देरा माहि घोलसइ तिनइ गधइ ड - गाल छइ संश्रतु १७२३ वर्षे
 मगसिर सुदि - ॥

(१६५)

वीरवाडा (सिरौही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

(953)

सं० १४१० वर्षे श्रे० महणा भा० कपूर दे० पु० जगमालेन भा० सुतलदे पु० कडूया देलहा सम वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कछोलीवाल गच्छे भ० श्री नरचंद्र सूरि पट्टे श्री रत्नप्रसन्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगलं ॥ प्राग्वाट ज्ञातीयः ॥

बसंत गढ़ (सिरौही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर ।

(असन के दोनो तरफ पीठ पर)

(954)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये वसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट व्य० ऋगडा भा० मेघादे पुत्र व्य० सडनेन भा० माणिक दे पुत्र कान्हा बीत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट व्य० धणसी भा० लीवी पुत्र व्य० भादाकेन भा० आल्हू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पहालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पट्टे प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेषर सूरि गुरुभिः ।

पालडी (सिरौही)

(955)

सं० १२४६ वर्षे माघ सुदि १० गुरी अद्येह श्री नदूले महाराजाधिराज श्री कैलहण देव राज्ये तत्पुत्र राज श्री जयत सीह देवी विजयी ज - - तत्पादपद्मोपजीविन महा

(२६१)

श्रीरमय बालहृण प्रभृति पंच कुलेन महं सूम देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर
प्रदत्त द्र० १ पाट्टहली मध्यात् । बहुभिर्वसुधा मुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य
यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वरषे जेठ सुदि १० सोमे अद्यो ह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आरुहण
सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री चैता प्रभृति पंच कुलं शासन
मभि लिख्यते यथा महं श्री चैताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - श्री पार्व
नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य
तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० ब्रा अलिणव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वणादे
सणा - - - - - कलहा ।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ओं । श्री मिल्लमाल निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी यगो ल
(कर्त्री) - राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां अंधु पद्म दिवाकरः उज्जुकस्तस्य पुत्र
स्यात् नम्मराम्मै ततो परी ॥ जज्जुं सुत गुणाद्ये यामनेन प्रसाद्वयम् । दृष्ट्वा चक्रे गृहं
जैमं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्यत् १०६१ - - - - सपुने - ।

उयमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरी श्री नाणकीय गच्छे उयण सदधिष्ठाने । श्रीपार्व-
नाथ चैत्ये ॥ घनेश्वर पुत्रेण देव घरेण धीमता । सयुक्तेन यशोमद्र आलहा पारहा

(२६७)

सहोदरैः । यसो भटस्य पुत्रेण । सार्द्धं यरा घरेण भा पुत्र पौत्रादि युक्तेन धर्मं हेतु मह
मंना ॥ भगनी धारमत्याख्या । भूतश्चैत्र यशो भटः । कारितं श्रेयसे ताभ्यां । रम्येदस्तुंग
महप ॥ छ ॥

वर्षीणा (सिरौही)

(१६९)

संवत् १३५६ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वाघ सीणग्रामे महा-
राजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काजे वर्शमाने सोलं० षामट पु० रज-
रसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोलं० सी माल पु० कुंताधारा सो० माला पु०
मोहण त्रिभुवण पहा सोहरपाल सो० धूमण पर्ट पायत् वणिग् सीहा सर्व सोलंकी समु-
दायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम
सेई २ तथा घूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति
गोधूम सेई ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महो-
त्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दातव्यं पालनीयं च । आर्षद्रार्कं ॥
यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

लाज-नीतोड़ा (सिरौही)

(१६०)

संवत् १२ वर्षे ४४ माह सु० ६ श्रे० जेतू आसल प्रति पतैमधिक कुअर सीह
पतिना । पाऊ त्नु ।

(१६१)

मन्दिर घर लषम सिंघेन करावी ।

(२६८)

नोदिया (सिरौही)

(962)

संवत् ११३० वैशाख सुदि १३ नंदियक क्षेत्र्य साले वापी निर्मापिता सिव गणैः ।

(963)

ॐ ॥ सतिणि सील वंता च । सद्भाव भक्ति संयुता ॥
जिन गृहे सैल स्तंभा द्वी । मंडप मूले धापिताः ॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर ।

(964)

श्री ॥ संवत् १२०१ भाद्रवा सुदि १० सोम दिने निवा भार्या वरा पुत्र मोतिणिया
स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते ॥ संवत् १२६८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउह पून सीह सुत रा० कमण
श्रेयोर्थे पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः ॥ श्री - - - - सूरि श्री - - ।

कोटरा (सिरौही)

(969)

॥ पूर्वं डीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय
श्री विजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात् वीर पत्या प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे
पिप्पालचार्य श्री वीर प्रज्ञ सूरिभिः स्थापितः । संवत् १४६५ वर्षे ।

(९६६)

वरमांण (सिरोही)

(967)

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण भा० रालू पु० पून
सीह भा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन भा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन
युगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

(968)

श्री० संवत् १३३६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्मणीय गच्छे महारक श्री मदन प्रभ
सूरि पट्टे श्री नंदिश्वर सूरि पट्टे श्री विजय सेन सूरि पट्टे श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री
हेम तिलक सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरोही)

(969)

संवत् १३०८ वर्षे उद्रे सीह सुत पदम सीह ।

माकरोरा [सिरोही]

(970)

श्री सुविधि जिन प्रासादात् माक्रोड़ा मध्येः । संवत् १७९० वर्षे कमल कलसा गच्छे
महारिक श्री सत् रत्नसूरि प० कमल विजय गणि वेठाणा ७ संघाति श्रीमासु रत्ना । मंहुता

(१७०)

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-
न्नाथसा० लषमा सा० राजा लाघा संपा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा
भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जगी
समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ॥

धवली [सिरौही]

(१७१)

॥ सं० । १९६१ वैशाख शुक्ल ५ बुध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीणौद्वार श्री संघेन
प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंवा उमा सा । तलका वाला प्रमुख
कारापितम् तस्यो परी ध्वज टंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश भटा० । श्री
वजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० डुंगर विजय वां० । नथु प्रमुख,
इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरौही]

(१७२)

संवत् १९६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुशल कातिक चोमासु
कीघु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जरावल पार्श्वनाथ [सिरौही]

(१७३)

संवत् १९८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरी श्री अंचल गच्छे श्री मेरु तुङ्ग सूरिणां
पदोद्वरण श्री जय कीर्ति सूरिस्वर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मीठ

(२७१)

ढीया सा० संग्राम सुत सा० सलषण सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा०
ढीढा सा० षीमा सा० मूरा सा० काला सा० गांगा सा० ढीढा सुत सा० नाग राज सा०
काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर
सिंह भार्या कउनिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ
स्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्तुमान मद्रं मांगलिकं भूयात् ॥

(१७४)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे माद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री
भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे कोठारी षाहउ सामत सं नाने की नरपति
मा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री
जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥
ओं कटारिया गोत्र वरं महीयं नास्तु पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर गुरुगुरव
श्रदेयाः श्री छालज मंहन मात्र शाल ॥ १ ॥

(१७५)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे माद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन
सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० घणसी संताने सा०
जयता मा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोंषसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका
कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात् ।

(१७६)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे माद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

(१७२)

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्गी नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलुसी संतानै सं० रत्न
भार्या वा० वीरु सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु
श्री पार्वनाथ प्रसादात् ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस राज ।

(१७७)

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तपा पक्षे भटा० श्री रत्नाकर सूरि-
णामनुक्रमेण श्री अभयसिंह सूरिणा पट्टे श्री जय तिलक सूरिश्वर पट्टायतस भटा० श्री
रत्न सिंह सूरिणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्वय मंडन श्रे० पेंत सीह
नंदन श्रे० देवल सीह पुत्र श्रे० घोपा तस्य भार्या सं० प्रणउ देव्ये तयो. सुना सं० साका
सं० दादा सं० मूदा सं० दूधाभिधै रेतैः कारि ।

(१७८)

स्वस्ति संवत् १५०८ वर्षे आषाढ सुदि १२ शनि सू० जाला सहडा नरसी जीमा
मांडण सांडा गोपा मेरा भोक्ल पांचा सूरि नित्य प्रणम्य अष्टांग सकुटुब ।

(१७९)

ओं ॥ सं० १८५१ वर्षे आषाढ सुदि १५दिने श्री जीरावल पार्वनाथजीरी जीर्णोद्धार
कारापितः सकल भहारक पुरंदर भहारक जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ - श्वर राज्येन
जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया परचीवी नाल लीघो श्री जीरावल वास्तव्य
मु० । घजा । की । दला । सा० कला । सा० रसा । सा० सघा । सा० जोयन सा०
अणला । सा० धारम । सा० रामल । - - - यकी काम कारापितः । जोसी दुरगा ।
प्राप्तु राजा जात्रा सफलः ॥

(२७३)

श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

(९३०)

ईशति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्तिक वदि ५ वृधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वेराग्य
सीमाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमस्कृतैर्महाराजाधिराज पाति शाहि श्री अकवरा-
भिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेश बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश कर्णन पूर्वकं पुस्तक
कोश समर्पणं डावरभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्ष पडमासिकामारि
प्रवर्तनं सर्वदा श्री शत्रुज तीर्थ मुंडकाभिधान कर निवर्तनं जीजियाभिधान करकसनं
निज सकल देश दानमृत स्वमाचनंसदेव वंदय रुण निवारणं विद्यादि धर्म कृतानि
प्रवर्तं तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संघयुत कृत यात्राणां भाद्रपद शुक्लैकादशी दिनेजात
निवाणां शरीर संस्कार स्नानासन्न फलित सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्वराणां
प्रति दिन दिव्य नाद्यनाद श्रवण दीप दर्शनादिकै जीय प्रभावाः स्तूप सहिताः पादुकाः
कारिताः पं० मेधेन भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्ठितारश्च तपागच्छाधिराजेः
महारक श्री विजयसेन सूरिभिः ओं श्री विमल हर्ष गणि ओं श्री कल्याण विजयगणि ओं
श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता भव्य जनैः पुज्यमानाशिवरं नन्दतुं ॥ उखता प्रशस्तिः
पद्मगण्डगणिना श्री उखत नगरे शुभं भवतु ॥

श्री कापडा पार्श्वनाथ ।

(९३१)

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथी सोमवारे स्वाती महाराजाधिराज महाराजश्री
गजसिंह विजय राज्ये ऊकेशे रायलारवण संताने मांडागारिक गोत्रे अमरा पुत्र भांना केन
भार्या भगतादेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सोठढा पीत्र तारा चंद्र खगार-नेमि दासादि

(२७४)

परिवार सहितेन श्री भीकपटहेटके स्वयंभु पार्वनाथ चैत्ये श्री पार्वनाथ
.....सिंह सूरि पहालकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः सुप्रसन्नो भवतु ।

अलवर ।

अलवर राजकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है ।

(१९२)

सं० १२५५ माघ सुदि ६ - - - - ।

(१९३)

सं० १२६४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - - वंशे पिता मही प्याऊपिउ पितृ सोला श्रेयोर्थे पुत्र
नाम दिन् - न मा० जागत्र मातृ एतेन सहितेन श्री पार्वनाथो विंश कारितः ।
प्रतिष्ठित श्री पार्वनदेव सूरिभिः ।

(१९४)

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्री० १ माला भार्या सिंगार देवो
पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शान्तिनाथ विंश कारित प्रतिष्ठित श्री सिंहदत्तसूरिभिः ।

(१९५)

सं० १३२४ वैशाख सुदि ३ यरुपति कुलेन साप्ते छोटा - - - - -

(१९६)

सं० १३७८ जेष्ठ वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग - । गोत्रे - - - सा० सिंभ घर
सिर पाल भार्या पुत्र कीरहा मुणि चंद्र लाहड बाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थे श्री
शान्तिनाथ विंश का० प्रति० श्री कक्कू सूरिभिः ।

(२७५)

(987)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० -- उ० छत्रवाल गोत्रे सा० तिहुणा पु० सोना भा०
सोनादे - - - - - शांति नाथ विंध्य - - - - -

(988)

सं० १४८९ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकरिया गोत्र सा० सधारण तत्पुत्र सा० सांगा
श्री आदिनाथ विंध्य कारापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(989)

सं० १५०१ पौष वदि ६ बुधे श्री हुंभड ज्ञानीय परज गोत्रे ठ० कहुआ भा० कामल दे
सुत ठकुर पीमा भा० रूपिणी -- सुसीया पीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० चमकू
सुत लखमा धरमा धना वना देवी । करमा भा० गांगी लखमा भार्या भोली एवं समस्त
परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ विंध्य कारापित स्व पुण्यार्थं प्र० श्री
सर्व सूरिभिः ।

(990)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञाती लोढा गोत्रे सा० भार्या पूना पु० हांसा-
केभ निज पूर्वजा जेमधर मोहा प्रीत्यर्थं श्री आदिनाथ विंध्य कारितं श्री रुद्रपल्लीय
गच्छे भ० श्री देव सुंदर सूरि पदे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः ।

(991)

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० खडबड गोत्रे सा० पालहा भार्या
पालहोदे पुत्र सं० साद्य सायर सोठारय आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंध्य कारितं प्र०
श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः ।

(२७६)

(११२)

सं० १५१९ वर्षे अषाढ वदि ९ शनौ भरतपुर ज्ञा० डीघोडीया - - - सा जगसी
सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु०
नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंघं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः ।

(११३)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश जातीय नाहर गोत्रे पेशा पु० रलहा
भार्या रजलदे खुकांवर अमरा - - - श्री शांतिनाथ विंघं कारित प्र० श्री घर्मघोष गच्छे
श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(११४)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल
पु० सुर जल सीहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पृज्य विंघं करापितं
प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

(११५)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल जातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या स्तू सुत हेमा
हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थे श्री अजिनाथ विंघं का० प्र० श्री महूकर
गच्छे श्री धन प्रज्ञ सूरिभिः । मेलिपुर नगरे ।

(११६)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० मेढा पुत्र
सा० हेफकिन मातृ उधरण चेडा पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंघं का० प्र०
श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(२७७)

(९९७)

संवत् १५५८ वर्षे -- सु० ११ गुरी उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र साण तध सुत साठबू-
हडेन महाराज महिय - - युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुत्रत स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

(९९८)

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढा गोत्रे तउधरी लाधा भार्या
मेह्राण सु० प्रेम पाल - - सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयोर्यं श्री अज्जुल गच्छे श्री भाव सागर
सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विंवं का० प्र० श्री र - -

(९९९)

सं० १६६१ वै० सु० ज० प्र० सचटी - - - ।

(१०००)

सं० १८३१ माघ शुक्ल पक्षे द्वा० तिथौ १२ बुधे श्री ऋषभ जिन विंवं कारित अलवर
नगर वास्तव्य श्री संघेग मलधार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौम भट्टारक श्री जिन
चंद सागर सूरि पट्टालंकार सोभित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं
मधुवन मध्ये ।

पटना म्युङ्गम ।

(५२५)

संवत् १८७४ शके १७३६ प्रवर्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ सोमदिने
श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

(२७८)

(634)

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पाद ग्यासः । प्रतिष्ठितः
स्वरत्न गच्छ महारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पास कुमारजी ॥

उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह “जैन लेख संग्रह” एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रथम है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनों से निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान हैं, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अक्षरादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनों ने “संग्रहमें” मदद दी है उन सभीका मैं कृतज्ञ हूँ । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उम्माह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता

ई० सं० १९१८

संग्रह कर्त्ता

श्रावकों की ज्ञाति-गोत्रादि की सूची ।

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
ओसवाल—	११, १८, २४, ३५, ४६, ५१, ६४,
	७६, ६५, १८५, १०६, ११५, १२३,
	१३३, २१२, २२६, २३८, २४२, २६३,
	२६६, २७७, २७६, २८७, ३८६, ४०१,
	४०३, ४०६, ४११, ४१६, ४२०, ४३१,
	४४५, ४५०, ४६०, ४६४, ४७५, ५६०,
	५७०, ५७८, ५८८, ५६२, ५६७, ५६८,
	६०४, ६३५, ६६२, ६६५, ६६८, ६६२,
	७०५, ७०७, ७०६, ७११, ७३१, ७३६,
	७६५, ७६६, ८०४, ८१८, ६२१, ६२७,
	६७५, ६७६, ९८६

ओसवाल [लघुशाखा]

गोत्र

गांधी मोती	६५२
नागड़ा	६५४, ६५५

ओसवाल [वृद्धशाखा]

५६, ७१, ११३, ११४, १३८,
५२६, ६१२, ६५६, ६६६, ६७०

ओसवाल [गोत्र]

आदित्यनाग	...	५०, ४७१, ६२५, ७२६
.. [खोखेडीया शाखा]	...	४६७

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
आयचणाग	७७, ५६६
आईचणा	५३४, ६२३
आईचणी	१५६
आभू स०	१०७
उचितघाल	८७४
कटारिया	१४, ६३७, ६७४
कठउड	४३२
कंठउतिया	४२६
कठारा	१६०
काकरेखा	८०, ८२४
काकरिया	६७, ६६, २७५, ९८८
कातेल	६७
कावेडीया	७१६
कुहाड	२७३, ८२९
कुर्कट	६१०
कोठारी	१३६, ६७४
कोष्ठागार	६४५
खडबड	६६१
गणधर	८२१
गहलडा	२६०
गहिलडा	५८०
गेहलडा	५७५
गादहिया	७८२, ६२८

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

गांधि	...	५६-६२, ७५, २०८, २४०, २४६-२५५, २५६, ४२५, ६४८, ७५२
गुगलिया	...	५४६, ७५७, ८२०
गोखरू	...	८६, ६३, ४८५
गोलेच्छा	...	१४२, ३४०
चसकरिया	...	६८
बंडलीया	...	५८६
बगरडिया	...	४४०
बोगवेडिया	...	५५८
बोरडीया	...	१८२, ३०१, ५८२
बुवालिया,	...	८२२
बोपडा	...	५०६
बोपडा (गणधर)	...	७७१, ७८५, ७८७
कजलानि	...	३१, ४०१, ४३६
कमवाल	...	६८७
काजहड	...	५४३, ७१२
काब	...	२८२
जडिया	...	१२०, ४००
जारडिया	...	३३
जम्मड	...	२२५
जांगडा	...	४८०
जारडडा	...	६२७
जाणेबा	...	४
ठप	...	४६८, ६७८, ७५८
डागा	...	१२१
डामाडिक	...	४१७
ढीक	...	४७
नातहड	...	१२८, ४००, ५३१

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

तिलहरा	...	६२५
नीवट	...	५५०
दणवट	...	७७६
दूगड	...	३६, ४४, ५७, ६८, ८५, १४६, १४८, १५०-१६४, १६५, १६७-१६८, १७४, १७७, १७६, १८४, २७४, ३०४, ३०६, ३३६, ३४१, ३५२, ४३४, ४७०, ७३४
दुधेडिया	...	२२, ६६२
दोमी	...	२२०
धनेरिया	...	५३०
धाडेवा	...	१८३
धीर	...	३०३
धुल	...	७५०
नवलबा	...	२६४, ३४३
नाहटा	...	४७३, ४६६
नाहर	...	५, ४६६, ४६२, ६१५, ६५८, ६६५, ६६३
पमार	...	५००
पामेबा	...	६००
पविबा	...	६१६
बालडेबा	...	४६७
पीपाडा	...	२६४, २६५
पीहरबा	...	६७२, ६७६
पोमालेबा	...	६३
पुल्लम	...	५७३
बगडा	...	१२६
बडन	...	६७१
बरहुडिया	...	६२

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
{ बहुरा	१०१, ४४८
बुहरा	५५६
बाप(फ)णा	३८६, ७३८, ७७४, ६२०
बायेबा	४२६
बांठीया	१२८
बांभ	५३
बेंछाब	५६४
भणशाळी	१०
भं०	५६२
मांडागारिक	६८१
मंडारी	१७, १००, ५८७, ५६६, ६११, ७५१, ८५७
भुमि	५०८
भोग	१०८
भोदा	४६१
भोगर	८१६
मंडांग	७०६
मंडोवरा	६०२
मिठडीया	६५६, ६७३
मु(म)हणोत्र	८२८, ८०४, ६०५, ६०७, ६११
मूधाला	१७५
माल्ह	१६६, ३०५
रायजडारी	८५२
रांका	६६७
लिंगा	१३
लृणीया	८, ५६६
लृमड	५५२

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
कोदा	१२२, २१३, २१४, ३०७-३११ ३२६, ४३३, ४४३, ४७८, ६०७ ७७३, ७८०, ६२६, ६६०, ६६८
बरकड	९३
बळहि (रांकाशाळा)	७४
बाइडा	८३०
बहरा	७३२, ७३३, ७३५, ७६७
बारडेबा	३७
बाळतब	६६४
बिदाणा	६५६
बीराणी	३००, ३१३-३१५, ३३४, ३४८, ३५७, ३५३, ३५६, ३६१, ३६३, ३६५, ३६७, ३७१, ३७३, ३७५, ३७७, ३७९, ३८१
बेलडल	८८६
{ वेंघ,	८६०
वेदमहला	५४२
बोइराकाग	८५५
सन्धीती	२४३, २६७
सुवेत	७६१
सुचिंतित	३०
समबडिबा	७८४
संखवाल	४१, ६९६
सूर	२१९
सुराणा	२६, ४८, ४१०, ५६५, ७८३
सेठीया	४२, १६४
सेठ (थोड्ड)	३०, २६, २३३, २६८, ४८८
सिंधाडीया	१५४
सोधिळ	४७६
सोनि	७६०

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
श्रीमाल— ३, ६, ९, २४, ५५, ६६, १००, १०४,	
१११, ११६, ११७, १२५, १२७, १३२,	
१८०, २५७, ३८३, ४०७, ४२२, ४२३,	
४२७, ४३०, ४३७, ४५२, ४५४, ४७६,	
४८१, ४६४, ४८८, ५०६, ५१०, ५१६,	
५३२, ५३६, ५५४, ५६१, ५७२, ५७४,	
६०६, ६०८, ६१४, ६३०, ६५३, ६७२,	
६७५, ६८२, ६९०, ६९१, ६९३, ६९७,	
७४०, ७४१, ७४५, ७५३, ७६८, ७६९,	
८२५, ८२७, ८६६, ९००, ९६५	

श्रीमाल (लघुशाखा)	२५, ६२९
श्रीमाल (वृद्धशाखा)	२६५, ६८५

श्रीमाल (गोत्र)

गोबलिया	४१२
बेवरिया	२८४, ४१३
चंडालेबा	८३०
जम्बहरा	३६४
जरगड	१६३
टांक	१२
डउडा	३८
होर	४३
दोसी	३६१, ७६१
धामी	६७५
धीधीद	५२८
मलुरिया	६२४
पाताणी	७५०
पापड	७७०

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
फोफलीया	७३७, ८२३
बदलीया	२००, २३१, ३२१
बहरा	५२१
भांहावत	५७७
भांडिया	४२, २८८, ७६३
मउवीया	४१४
महता	२१८, २६०
महरोल	६६
माथलपूरा	११०
मीठिया	१८७
बहकटा	४६३
साहू	७८
सिंघड	४४७, ५०३, ५२४
श्री श्री	११९, २६२, ६६४, ६६६

,, ,, पलहयड (गोत्र) ५५६

प्राग्वाट (पोरवाट) २, १५, ४०, ५२, ५४, ५८, ७०, ७२, ८०, ९१, ९४, १०६, १५२, १५७, २८०, २८३, ३६२, ३६३, ३७५, ३८८, ३९६, ४०५, ४२४, ४४४, ४४६, ४५६, ४६३, ४६६, ४८३, ४८४, ४८६, ४८८, ४९६, ५०४, ५११, ५३५, ५३७, ५३८, ५४५, ५४६, ५५३, ५५७, ५६३, ५८५, ५९५, ६४७, ६४६, ६५०, ६६०, ६६१, ६६७, ६८४, ६८६, ६८८, ७००, ७०४, ७१३, ७१४, ७४२, ७५५, ७६२, ७७५, ७७७, ७७६, ८३६, ८३६, ८४६, ८४६, ८५१, ८५३, ८५४, ८५७, ८६७, ८७१, ८७७,

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
प्राग्वाट (वृद्धशाखा)	१५५, ८५४
[गोत्र]	
कोठारी	६४७, ६४८, ६५०
भूलर	४२८
दोसी	६५१, ६७७
भंडारी	६२१
मुठलिया	७३
लीवा	१२६
अग्रवाल [अग्रोतक]	
[गोत्र]	
गोमल	३२६
गोयल	४५३
पिपल	१४५
धामिल	३२७
अत्तल	
[गोत्र]	
गोपल	२७
भुर	३२५
खंडेलवाल	४५१
[गोत्र]	
गोधा	४६५
संडिलवाल	३८८
जेसवाल	३२८, ४७२
[गोत्र]	
कप्रहार	२२१
धकूट	८६२, ८६७, २६६

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
नना	५८६
नागर	६०१
नारसिंह	
[गोत्र]	
बोरठेन	७७८
नीमा	६६
पल्लीवाल	६५७
पापडीवाल	७६, ३२३, ३२४
मंत्रिदलीय (महतियाण)	४८, २३६, ४८२
[गोत्र]	
उसियड	१८६
काणा	१०३, १६१, १६२, २१५, २१७, २१०, २८१, ४१८, ४१९
काद्रडा	१६२
घेवरिया	२८४
चोपडा	१७६, १६०, १८८, २४५, २७१
चोपडा (मंडन)	१६१
चोपडा (श्रुद्धार)	१८२
जीजीभाण	१६२
जाटड	२३६, २५६
दान्हडा	१६
दुलड	१६
नान्हडा	१८२
बालिडिवा	१६७
भांडिया	२८६
महता	२६०

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
मुंडतोड	१७१, १७२	परज	८८९
रोहदिया	१६०	गोत्र (ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है)	
चायडा	२१६	उजावल	८८०
वार्सिदीपा	१६	उसभ	५४३, ७६७, ८६३
सयला	१६२	ओष्ट्र	५५५
माल्हण	८५	काठुड	७१५
मोट	५४०, ८८६	गोठी	५६७
राजपूत		घोरवडांशु	८०५
चाहमान	८४४	जलहर	५७८
चौलुक्य	६४२	डोमी	६२०
प्रतिहार	६४५	दूताड	६८१
राठउड	७४३	धांध	५८४
मोलंकी	८५६	फमला	५६८
लघुशाखा	२६१	मिथूज	१६२
बघेरवाल	२२८	मुहना	६४३
[गोत्र]		राउला बरही	५८६
राय भंडारी	४३८	रहुराली (!)	५४७
शंभवाल	७२७	वणामीआ	५७०
शानापति	६२८	वपुमाणा नुडिला	१०२
पंडरेक	८४२	वालडिवा	१७७
सीढ	७६८	श्रवाणा	५८६
हुबड	३४, ५०७, ५५१, ५७१, ६६६, ६८६	पटवड	७६४
[गोत्र]		पाटरा	६१६
गंगा	५०२	संखवालेचा	७६६
मंत्रीश्वर	१६		
रजीआण	६५		

आचार्यों के गच्छ और संवत् की सूची ।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	अंचल गच्छ ।				
१४४७	मेरुतुंग सू०	६२८	१४४६	श्री सूरि	६३
१४४६	"	२	१४४५	कुंथकेसरि सू०	२८५
१४८१	जयकीर्ति सू०	४११	१५५६	भाववर्धन गणि	७६२
१४८३	"	६७३		आगम गच्छ ।	
१५०३	जयकेसरि सू०	४१६	१४३८	जयतिलक सू०	७६५
१५०७	"	६७३	१५०६	हेमरत्न सू०	३६१
१५०८	"	५७८	१५१२	"	७४१
१५०९	"	१२३	१५०७	शीलरत्न सू०	४७६
१५२३	"	४६	१५१०	जिनरत्न सू०	१००
१५३०	"	६६४	१५१५	पावप्रम सू०	६६०
१५३१	"	६६५	१५१७	देवरत्न सू०	५५७
१५३२	"	१०८	१५४५	सोमरत्न सू०	४२३
१५३६	"	६६६	१५७५	आनंदरत्न सू०	१११
१५५१	मिद्धान्तमागर सू०	११८		उपकेश गच्छ ।	
१५६१	भावसागर सू०	६६८	१२५६	कक सू०	७६१
१५६५	"	५६८	१३५३	देवगुप्त सू०	६२१
१५७४	"	५००	१४०५	कक सू०	४००
१५७६	"	२६२	१४४५	मिद्ध सू०	४६०
१६७१	कन्याणमागर सू०	३०७-३१२।४३३	१४७१	देवगुप्त सू०	७७४
१८५६	धर्ममूर्ति सू०	७४३	१४८०	मिद्ध सू०	७७
१६२१	रत्नमागर सू०	६५२।६५४।६५५	१४८५	"	३८८
१४४७	श्री सूरि	६२८	१४८८	"	५५०
			१४८९	"	५३१

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक	
१४६७	देवगुप्त सू०	२३८	१५८३	देवगुप्त सू०	६६८	
१४६६	कक सू०	२१६।४७१	१६०३	कक सू०	७१७	
१४६१	"	१३	उत्तराध गच्छ ।			
१५१२	"	४०१।६२३	१६८०	श्री० ताराचन्द्र	३६७	
१५१५	"	५३४	[क] छोलीवाल गच्छ ।			
१५१८	"	५५८		विजयराज सू०	५६४	
१५२४	"	५०।२२६	१५५४			
१५२५	सिद्ध सू०	५१		कडुआमति गच्छ ।		
१५२६	कक सू०	६६४	१६८३	...	८०१	
१५२८	देवगुप्त सू०	६२५		कमलकलसा गच्छ ।		
१५४६	"	३०		रत्न सू०	६७०	
१५४६	"	६७६	१७९०	कमलविजय गणि	}	
१५५६	"	७१०	१८६१	विजयमहेंद्र सू०		८७१
१५५८	"	६६७		हुंमरविजय गणि	}	
१५५८	"	५६६		कृष्णार्थि गच्छ ।		
१५५६	कक सू०	६७२		प्रमन्नचंद्र सू०	४०६	
१५६२	देवगुप्त सू०	१२८।४६७	१३७६	जयशेखर सू०	५८६	
१५६३	"	२०	१४०३	नयचंद्र सू०	६८।७६०	
१५७६	सिद्ध सू०	७४	१५०६			
१५८५	"	१५६		कीरंट गच्छ ।		
१६३४	देवगुप्त सू०	६२८	१३४०	नन्नसू० सं०	}	
१६५६	सिद्ध सू०	८६०		ककसू० पट्टे		११५
१५०१	कुंकुम सू०	७३०		मर्बदेव सू०		
	खिवंदणीक गच्छ ।		१४०२	भार्बदेव सू०	७६६	
	(उपकेश)		१५०६	"	४१७	
१५२७	मत्त सू०	१८	१५५३	...	३७	
१५६६	कक सू०	६६७	१५७६	कक सू०	६०३	

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक	
	स्वरतर गच्छ ।		१५३६	"	२२१४८८	
१५१२	जिनचंद्र सू०	२३६	"	जिनसमुद्र सू०	६१७	
	हरिप्रभमणि		१५३७	"	"	७३५
	मोदमूर्तिगणि		१५३८	"	"	२२०
	हर्षमूर्तिगणि		१५५१	"	"	४१
१५३८	जिनराज सू०	२११	१५५३	"	४६३	
१५४१	"	६१५	१५५८	जिनहंस सू०	१०	
१५५६	"	५८३	१५६०	"	४४७	
१५६६	जिनचंद्रन सू०	२१२	१५६३	"	२८६	
१५७६	जिनभद्र सू०	४६५	१५६५	"	१८७	
१५८४	"	११६	१५६८	"	४६१७६३	
१५८५	"	२७५	१५७६	"	४२	
१५८७	"	८	१५७६	"	५६५	
१५९३	"	६२०	१६५६	जिनचन्द्र सू०	७८०	
१५९४	"	७३१	१६५७	"	४३	
१५९७	"	२१४।४७३।७६७	१६६१	"	५२३	
१५९८	"	५७२।७३२।७३३	१६६६	"	७२३	
१५९९	"	१२१	१६६८	"	१३५	
१५९९	"	४७८	१६६६	"	७७३	
१५९५	"	१२२।७५६	१६७६	जिनराज सू०	७४७	
"	जिनचन्द्र सू०	४७	१६७७	जिनराज सू०	७७१।७८५।७८७	
१५९७	"	५५६	१६८६	"	"	
१५९८	"	१०३।१८६।२१५।२१७।४१६		उ० अमयधर्म	} २७१	
१५९८	"	६१८। ६१७	१६८८	"		१७६
१५९९	"	७८	१६९७	जिनराज सू०	} १७७	
१५९९	"	१०७		उ० कमल लाम		
१५९९	"	४४५		पं० लक्ष्मीसिं		
१५९९	"	५६९		पं० राजहंस		

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१८२१	जिनलाम सू०	६००	१५२७	"	१९५२
१८४४	जिनचन्द्र सू०	४५	१५२८	"	६६२
	वा० अमृतधर्म		१५३१	"	२८४
	या० क्षमाकल्याण		१५५१	"	१५४
१८४८	जिनचन्द्र सू०	६२७।६३३	१५२४	उ० कमलसंघम	२५७
१८४२	"	३५८	१५२७	"	२५८
१८५६	"	१३८।१४४	१५६२	जिनतिलक सू० पट्टे	४१४
१८५५	जिनहर्ष सू०	३३८		जिनराज सू०	
१८६१	"	६३		श्रीभिः	
१८७१	"	८७।५२७	१५६६	जिनचंद्र सू०	२१०।५२४
१८७४	"	२६।१।२६।५२५	१५६७	"	५६५
१८७५	"	१६६	१५७१	जिनरत्न सू०	१६२
१८७७	"	२२४।३३।३४०	१६६६	आचार्य सिंह सू०	७२३
१८००	जिनसीभाग्य सू०	१२।३०६	१६८६	रत्नतिलक सू०	२६६।२७२
१८०३	"			वा० लक्ष्मिसेन गणि	
	पं० हीराचंद्र	६६६	१७०७	कल्याणकीर्ति	
१८०४	जिनसीभाग्य सू०	५६६	१७८०	जिनरंग सू०	२०५
१८०७	"	१४७	१७६७	"	२०२
१८१०	"	३४७	"	वा० भुवनचंद्र	२०३
१८५७	जिनकीर्ति सू०	३८५		जिनकीर्ति सू०	१३७
१५०४	वा० शुभशीलगणि	१७१।२३।६।	१८०६	करमचन्द्र	
		२५६।२७०		हरखचन्द्र	
१६९१	धर्मसुन्दरगणि	७७०		प्रतापसी	
१८५७	उ० हीरधर्मगणि	४२५	१८२१	महेंद्रनागर सू०	६७
१५१५	जिनसुन्दर सू०	४८०	१८४२	रूपविजय	२०६
१५१६	"	४८२			
१५१६	जिनहर्ष सू०	४८।१६।१।	१८७६	उ० रत्नसुन्दरगणि	६८
		२१६।२८।१।४।८	१८७७	कीर्त्युदयगणि	३८७

संख्या	नाम	लेखांक	संख्या	नाम	लेखांक
१८८८	जिनभक्षय सू० पदं }		१५०३	जरपल्लीयगच्छ }	३६६
	जिनचन्द्र सू० }	३४३		उदयचन्द्र सू० }	
१८९९	जिनमहेंद्र सू० }		१५३२	सागरनंद सू० }	५६२
	कुशलचन्द्रगणि }	२००१३४५			
१९००	जिननंदिवर्द्धन सू० }			तथा गच्छ ।	
	बा० चिनयविजय शिष्य }	२४२१२४३१	१४७५	सोमसुंदर सू०	१३१
	पं० कीर्त्युदय }	२६३-२६७	१४८५	"	८३६
१९११	जिनमहेंद्र सू०	२४४-२६८/३४	१४८६	"	४६६
१९१२	"	३६६	१४९६	"	७००
"	मु० मोहनचन्द्र	६४६	१४९६	"	५५३/१०३
१९२६	जिनकल्याण सू०	५२८	१४८९	रत्नसिंह सू०	६७९
१९७२	जिनरत्न सू०	५२९	१४९६	"	६६
	चन्द्र गच्छ ।		१४८३	भुवनसुंदर सू०	६७४-६७६
१९३६	पूर्णभद्र सू०	८६६	१४८५	हेमहंस सू०	५४८
	चंद्रप्रभाचार्य गच्छ ।		१४२०	"	३३
१९६०	"	४५६	१५०७	"	६२२
	चित्रवाल गच्छ ।		१५०१	मुनिसुन्दर सू०	७०४
१५०६	मुनितिलक सू०	२१३	१५०३	जयचन्द्र सू०	६७७/६८८
१५०८	"	२७७	१५०४	"	६६१
१५१३	दोणाकर सू०	१०१	१५०७	उदयनंदि सू०	४७५
१५२९	सोमकीर्ति सू०	४३२	"	रत्नशेखर सू०	४७७
१५४८	सोमदेव सू०	६७५	१५१०	"	४१२/७०५
१६८६	रत्नचंद्र सू० }		१५१२	"	४७५
	बा० तिलकचंद्रसू० }	८३०	१५२३	"	८१८
	चैत्र गच्छ ।		१५१४	"	२७१/७४२
१३३३	भजितदेव सू०	६३५	१५१६	"	३६२
१५१८	गुणाकर सू०	९८२	१५१३	रत्नसिंह सू०	३४

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	विजयतिलक सू० पट्टे	७८७	१५३६	"	४२०
	विजयधर्म सू०		१५४६	"	७२६
१५१७	लक्ष्मीसागर सू०	२८०१४८३	१५५१	"	७०७
१५१६	"	६६३५	१५४४	सोमरत्न सू०	४१०
१५२१	"	४४४१४३४	१५३०	"	४२१
१५२२	"	५८२	१५५२	सोमसुन्दर सू०	७७२
१५२३	"	१४		इन्द्रनन्दि सू०	
१५२४	"	१०५१०६१२८३१५६०	१५५३	कमलकलश सू०	१५
१५२५	"	४८४१६२४		हेमविमल सू०	
१५२७	"	३८८१७३६	१६०३	कमलकलश सू०	६४२
१५१४	"	६६३	१५५६	हेमविमल सू०	५८०
१५३०	"	७०१४८५१२२४	१५६४	"	१२
१५३२	"	७७७	१५६६	"	२८१
१५३३	"	५८१३६६	१६०१	"	६४६
१५३४	"	३६१५३	१५७६	"	
१५३५	"	५७०	१५७७	पं० अनन्तहंसगणि	६६६
१५३६	"	७३१४४६	१५७०	वनरत्न सू०	५४०
१५३७	"	४८२	१५७६	सौभाग्यसागर सू०	२६३
१५३८	"	२२४	१५७८	राजरत्न सू०	२८४
१५३९	हेमसमुद्र सू०	७६०	१५८२	धनरत्न सू०	६१८
१५२१	"	४४३	१६०३	विशालसोम सू०	१५३
"	सोमदेव सू०	४४४	"	विजयदान सू०	६४६-६४८
"	उदयवल्लभ सू०	५३६	१६१५	"	६५०
१५२४	जिनरत्न सू०	५३८	१६१९	हीरविजय सू०	७१३
१५३२	"	७५५	१६२३	"	६२७
१५२८	क्षेमसुन्दर सू०	७५३	१६२८	"	६२६
१५३०	विजयरत्न सू०	६५३	१६३०	"	
१५३२	सुवर्णसागर सू०	६८२			

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१६३४	हीरविजय सू०	१२४	१६८१	जयसागर गणि	६०४।६११
१६३८	"	६०५	१६८४	विजयमिह सू०	६०६
१६४४	"	६२०।६३०	१६८६	"	६३८।८५६
१६४७	"	७१४	१६८७	"	४५५
१६११	विजयसेन सू० शि०	}	१६८८	"	५८२
	धर्मविजयगणि :		७१३	१६८३	"
१६४३	विजयसेन सू०	२२३।५०४	१६६७	"	११४
१६५२	"	६८०	१७०१	"	२८५।५०६
१६५३	"	७८२	१७६२	चन्द्रकुशल गणि	६३४
१६६७	"	१२७	१७६५	विजयरत्न सू०	६४३
१६८६	"	८२६।८२७	१७७१	"	}
१६५३	विजयमुन्दर गणि	७५२	१७७१	जयविजय गणि	
१६५८	कान्यकाणविजय गणि	११३	१८०२	सुमतिचन्द्र गणि	६४४
१६६६	वा० लब्धिसा० उदयसा०	}	१८०८	वीरविजय सू०	१३६
	महजसा० जयसा०		८७४	१८४५	विजयजिनेद्र सू०
१६६८	विजयसेन सू०	}	१८७३	"	}
	विजयदेव सू०		७२५	१८७३	
१६७४	विजयदेव सू०	५८१।८५३	१९०३	पं० रूपविजय गणि	७४४
१६७५	"	४५२।७५०	१९४६	विजयरत्न सू०	३५५
	"	७५५।७८४			
१६८३	"	५४२।८०५।६०६			
१६८४	"	६०८			
१६८५	"	६६४	१५६६	इन्द्रनन्दि सू०	८५६
१६८६	"	७८३।८२५।८२६।८३७	१५७१	प्रमोदसुन्दर सू०	८५०।८५१
१६८७	"	५४३।७५६	१५८१	सौभाग्यनन्दि सू०	५४
१६९४	"	१३०।६६६।६७०			
१७००	"	७७२।८२८			
१७०३	"	५१४	१५०५	शांति सू०	८८७

कुतुबपुरा गच्छ ।

[सपा]

इन्द्रनन्दि सू० ८५६

प्रमोदसुन्दर सू० ८५०।८५१

सौभाग्यनन्दि सू० ५४

तावकीय गच्छ ।

शांति सू० ८८७

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	त्रिभुविया गच्छ ।				
१४२०	धर्मदेव सू० सं०	४२७	१४८१	सिंहदत्त सू०	५२१
	धर्मरत्न सू०		१४९५	विनयप्रभ सू०	४८१
	देवानंदित गच्छ ।		१५१७	गुणदेव सू०	५१०
१३०३	सिंहदत्त सू०	६८४	१५२८	सोमरत्न सू०	८१६
	धर्मघोष गच्छ ।		१५७२	गुणवर्द्धन सू०	६७७
१४०६	सागरचन्द्र सू०	४०९	१२३५	शांति सू०	८६२
१४५८	मलयचन्द्र सू०	६०७	१३२३	धनेश्वर सू०	६०२
१४५९	"	४१०	—	वीरचन्द्र सू०	८६६
१४८२	यशशेखर सू०	४२८।४६६		नाणकीय गच्छ ।	
१४६२	"	५५२	१५३६	धनेश्वर सू०	१०६
"	महेंद्र सू०	५०८		निगमा विभावक गच्छ ।	
१५०३	विजयनरेन्द्र सू०	५८७	१५५६	इन्द्रनंदि सू०	४०४
१५०५	साधुरत्न सू०	१७		पत्तिलवाल गच्छ ।	
१५१७	"	५	
१५०७	यशसिंह सू०	४७४	१५८८	...	५७७
१५२६	महेंद्र सू०	८६३	१५९३	यश सू०	५३३
१५२९	यशानन्द सू०	७७६	१५२८	नभ सू०	५३९
१५३३	"	७३७	१५४८	उजोगण सू०	६७१
१५४१	पुण्यवर्द्धन सू०	४६२	१६६८	...	७२७
१५४२	"	११०	१६७८	...	७२६
१५५४	"	६०२		पवीर्य गच्छ ।	
१५५९	नीदिवर्द्धन सू०	५६५	१५०७	यशोदेव सू०	४१२
१५७०	उदयप्रभ सू०	३८		पार्ष्वनाथ गच्छ ।	
१५८७	नयचन्द्र सू०	२६	१७८९	...	३१६
	नागेंद्र गच्छ ।		१८२१	...	८३
१०८८	...	७९२	१८३०	जिनहरण सू०	५२
१७४६	रत्नप्रभ सू०	६८६	"	भानुचन्द्र सू०	६०

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	पिप्पल गच्छ ।				
१२०८	विजयसिंह सू०	८६६	११८५	यशोभद्र सू०	७०१
१४६५	वीरप्रभ सू०	"	१४३६	बुद्धिसागर सू०	५७२
१४६९	उदयदेव सू०	४३०	१४४६	हेमतिलक सू०	८६८
१५१३	गुणरत्न सू०	६०८	१५५६	उदयानंद सू०	६५
१५३६	अमरचन्द्र सू०	६	१५९९	विमल सू०	१९७
१७७८	धर्मप्रभ सू०	६६५	१५९७	उदयप्रभ सू०	५८८
	पू णिमा गच्छ ।		१५९६	वीर सू०	१०४६६३
१४७६	जिनप्रहृभ सू०	३	१५२०	शीलगुण सू०	४२२
१५९९	जयचंद्र सू०	६६२	१५६६	गुणसुन्दर सू०	४४८
१५९५	"	६२८		भावहार गच्छ ।	
"	मतिःतिलक सू०	४८३	१४६६	वीर सू०	६९६
१५९६	साधुरत्न सू०	५९४९	१५३२	भावदेव सू०	११८
१५९६	जयभद्र सू०	४३		भिक्षमाल गच्छ ।	
१५५२	विजयचन्द्र सू०	७२	१५	"	८१६
१५२८	"	३५		मलधारि गच्छ ।	
१५२७	साधुसुन्दर सू०	७६८	१२५८	देवनंद सू०	८६
१५३२	"	५६९	१३७८	तिलक सू०	६८४
१५३९	पुण्यरत्न सू०	६६	१४८५	विद्यासागर सू०	४०६
१५६३	"	५६५	१५९२	गुणसुन्दर सू०	१०९
१५७७	मुनिचन्द्र सू०	१३२	१५४६	गुणकीर्ति सू०	४९३
१५६८	विजयचन्द्र सू०	६०४	१५५३	श्री सू०	४८४
१६००	मुनिरत्न सू०	५५	१५५८	लक्ष्मीसागर सू०	६४८
	प्रभाकर गच्छ ।		१५७०	"	५९६
१५७२	लक्ष्मीसागर सू०	७६४		महाहठीय गच्छ ।	
	ब्रह्मणीय गच्छ ।		१५०७	दयकीर्ति सू०	६२२
१९४४	"	८११	१५५६	मतिसुन्दर सू०	४६६

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	महुकर गच्छ ।			विधिपक्ष गच्छ ।	
१५२७	धनप्रभ सू०	६६५	१५०५	जयकेशर सू०	६५६
	यशसूरि गच्छ ।			वृद्धपोसल गच्छ ।	
१२४२	...	५३०	१८८१	आनंदमोम सू०	६८५
	रुद्रपल्लीय गच्छ ।			वृहद् गच्छ ।	
१४५४	देवसुन्दर सू०	४६१	१२१४	पं० पद्मचन्द्र गणि	८३३।८३४
१५०१	मोमसुन्दर सू०	६६०	१२६०	शांतिप्रभ सू०	७०२
१५१६	"	१२२	१३१६	जयमङ्गल सू०	६४३।६४४
१५२५	"	७३४	१४३३	विनयचंद्र सू०	८५८
१५३२	गुणसुन्दर सू०	५७६	१४३८	अमरप्रभ सू०	३९
१५६६	स० गुणप्रभ	५०९	१४८६	प्रभ सू०	६७८
१६८५	भाषातिलक सू०	४६८	१४९३	हेमचन्द्र सू०	६९८
	लुंपक गच्छ ।		१५०८	महेन्द्र सू०	६८२
१६२५	उ० सागरचंद्र गणि	१४८।१५०	१५१९	रत्नाकर सू०	२३
१६३४	अजयराज सू०	१८४।२०७	१५१८	महेन्द्र सू०	५५६
१६५५	"	२३५			
१६३३	अमृतचंद्र सू०	१६८।१६०	१५१०		
	त्रिजय गच्छ ।			सरवाल गच्छ ।	
१७१८	सुमतिन्नागर सू०	५३८	१२१८	...	८३०
१६३९	शांतिन्नागर सू०	१६७।३४६	१३५०	सुमति सू०	५१६
	३५१।३५४।३५६।३६०।३६२		१३७६	"	४१५
	३६४।३६६।३६८।३७०।३७२		१४५०	शांति सू०	७५७
	३७६।३७८।३८०।३८२।१०००		१४६६	सुमति सू०	७५८
	विद्याधर गच्छ ।		१४७२	शांति सू०	४६४
१४२०	उदयदेव सू०	८८६	१४८३	"	४६८
१५३४	हेमप्रभ सू०	७६८	१४८६	"	५४६

संवत्	नाम	लेखांक
१५०६	"	१५१२७८
१५१३	ईश्वर सू०	७६४
१५२२	सालि (शांति ?) सू०	२८०
१५३४	शांति सू०	७५१
१५४५	"	८२४
१५५७	"	५६४
१५६३	"	६६२
१५६५	"	५६६
१५७२	"	६११
१५८६	साठ सू०	१७०
१५९७	ईश्वर सू०	८५२
१६०३	शांति सू०	६७८
१६१४	स० नयसुन्दर सू०	७
१७२०	वैवसुन्दर सू०	७१५
"	जिनसुन्दर सू०	७१६
सागर गच्छ ।		
१८२०	अमृतचन्द्र सू०	३०४
१६०३	शांतिसागर सू०	५६१७
१६४५	"	५२६
सिद्धान्त गच्छ ।		
१५६५	वैवसुन्दर सू०	५६७
हुंघड गच्छ ।		
१५३०	सिंघदत्त सू०	६५
	स० शीलकांजर ग०	

[जिनके गच्छोंके नाम नहीं लिखे हैं]

संवत्	नाम	नं०
६६६	बलभद्र सू०	८८८
१०११	वैवदत्त सू०	१३४
१०५३	शांतिभद्र सू०	८६८
११४४	पेन्द्रदेव सू०	६१६
११४६	जिनचन्द्र सू०	८८१
११५०	महेश्वराचार्य	३८७
१२०३	महंत सू०	८८५
१२३०	आनन्द सू०	८७२।८७३
१२३१	नेमिचन्द्र सू०	६१२
१२३४	देव सू०	७२८
१२३६	बुद्धिसागर	६०६
१२५१	सुमति सू०	८७६
१२५७	महेष्ठीराचार्य	४०८
१२६८	रामचन्द्राचार्य	८६६
१२९६	पूर्णचन्द्रोपाध्याय	८६३
१३१४	चन्द्र सू०	६८६
१३१८	भावदेव सू०	५७८
१३६८	धर्मदेव सू०	६८३
१३७३	अणिभद्र	६८७
१३७५	हेमप्रभ सू०	६१
१३७६	महेन्द्र सू०	५४५
१३८७	महातिलक सू०	६८८
१४२२	सूरप्रभ सू०	८२६
१४२३	उदयानन्द सू०	६१४
१४३३	गुणभद्र सू०	४५६
१४३८	जिनराज सू०	२११
१४६३	जयप्रभ सू०	६८७

संवत्	नाम	नं०	संवत्	नाम	नं०
१४७१	विजयप्रभ सू०	६६	१५३४	श्री सू०	८२२
१४८०	विद्यासागर सू०	५८४	१५४०	साधुसुन्दर सू०	७४५
१४८९	सोमसुन्दर सू०	५४६	१५४७	श्री सू०	५६३
१४८९	पद्मशेखर सू०	५४७	१५४८	म० हेमचन्द्र सू०	४६९
१४८२	सुविप्रभ सू०	४६७	१५५६	श्री सू०	९२७
	वीरभद्र सू०		१५६२	साधुसुन्दर सू०	४०८
१४८६	हेमहंस सू०	६५८	१५६३	श्री सू०	२५
१४८६	नरसिंह सू०	६०९	१५८०	सुमतिरत्न सू०	७४७
१४८६	रत्नप्रभ सू०	४७०	१५८६	सुविहित सू०	४२७
१४९०	हेमहंस सू०	४२०	१६०५	जिनभद्र सू०	५९२
१४९०	नयचन्द्र सू०	६८८	१६१५	नेजरत्न सू०	१६
१५०९	श्री सू०	५५५	१६४५	कनकविजय ग०	६८९
१५०७	श्री सू०	५३२	१७००	शुभकीर्ति	२७
१५०३	नयचन्द्र सू०	६७	१७०२	प्रिलचन्द्र सू०	९९०
१५१३	श्री सू०	३८३	१७१०	वित्तयानन्द सू०	७५
१५१४	सर्वानन्द सू०	६०२	१७२१	म० हीरवित्तय सू०	८५४
१५१४	रत्नशेखर सू०	६५	१७६१	कुशविजय	८०५
१५१४	या० मोदराज गाँगा	२३१	१७७१	विजयशक्ति सू०	३१३
१५१७	दयारत्न	२३३	१७८०	कार्य विजय ग०	८९
१५१८	पद्मानन्द सू०	१७५	१८४९	श्रीसुन्दर सू०	६९३
१५१९	उदयनलभ सू०	६६९	१८४८	अमृतधर्म	२४६
१५२०	म० विजयकीर्ति सू०	७४६	१८४८	अमृतधर्म वाचनाचाय	३०५
१५२१	सुविहित सू०	५७४	१८८३	विजयजिनेन्द्र सू०	७६६
१५२६	साधुसुन्दर सू०	१२५	१८८७	या० चारित्रनदि गाँगा	३४९
१५२७	श्री सू०	१५२	१८८८	जिनचन्द्र सू०	३४२
१५२७	भाजदेव सू०	५६९	१८९७	या० चारित्रनन्दन ग०	४३५

संवत्	नाम	लंकांक	संवत्	नाम	लंकांक
	जिनमहेंद्र सू०	४४०		मूलसंघ [सरस्वती गच्छ]	
१११०	"	१६३, १६६	१५२३	म० विद्यानन्दि	६८०
११२०	अमृतचन्द्र सू०	५७	१५२४	म० विमलकीर्ति	५८०
"	वा० सदाशाम	४४	१५२५	विमलेन्द्रकीर्ति	६६६
११२४	सागरचन्द्र ग०	१७६	१६०४	म० देवेन्द्रकीर्ति	३२५
"	उ० सदाशाम ग०	१७७	१६०८	म० शुभचन्द्र	५०२
११३०	सागरचन्द्र ग०	१७४	१६३८	म० मेरुकीर्ति	२२१
११३५	सुनिपयजय	१८२, १८३	१६६०	विईकीर्ति	४५१
११३६	जिनमुक्ति सू०	२३३	१६६६	...	१५८
	दालचंद गणि		१७००	...	५०५
११५६	जिनचन्द्र सू०	१६३	१७११	...	६४०
	मूलसंघ ।		१७४६	...	६४५
१२३६	शुणभद्र सू०	३८८	१६५०	कनककीर्ति	२३४
१२४५	जिनचंद्र देव म०	३२३		मूलसंघ-नन्दिसंघ ।	
१२५०	देवकीर्ति	२७६	१४६०	म० सकलकीर्ति	५५१
१२५४	जिनचन्द्र सू०	४७२		मूलसंघ-काष्ठासंघ ।	
१४३५	विद्यानन्द	२८६	१७३४	त्रिभुवनकीर्ति	६४१
"	म० ज्ञानभूषण	४८७		काष्ठासंघ ।	
"	"	५८३	१३	...	५७१
१५३८	...	१५३		काष्ठासंघ [माधुर गच्छ]	
"	...	२८८	१७३२	म० रूपचन्द्र	३३१
१५४८	म० जिनचन्द्र देव	३२४	१८८१	जगत्कीर्ति म०	१४५
१५४९	म० जिनचन्द्र देव	७१	१६१०	राजचन्द्रकीर्ति देव	३२५
१५५६	...	४८५			
१६२७	सुमतिकीर्ति सू०	६३१			
१६८३	म० रत्नचन्द्र	३५६			
	जयकीर्ति उ०				

बोर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

पान नं. २६३ लाहौर

प्रेषक नगरपालिका लाहौर

शीर्षक ५/ जैन धर्म सेना

खण्ड १/ क्रम संख्या ७१६

प्रेषक	जैन धर्म के इन्साखर	वापसी का दिनांक
--------	---------------------	-----------------